मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

अप्रैल १९९३ — मंत्र शक्ति विशेषांक — मूल्य १५ रु.

अद्वितीय अनुपम

आजीवन सदस्यता

"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' पत्रिका की आजीवन सदस्यता एक गौरव है, एक स्वाभिमान है, जीवन का सौभाग्य है और साधना की पूर्णता है, यह एक अनुपम गुरुदेव के हृदय के निकट पहुंचने की प्रिय पात्रता है, साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है . . .

और आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र ६६६६/- है जिसे एक मुश्त या तीन किश्तों में जमा कराकर यह सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है।

और फिर अप्रैल ९३ से तो पत्रिका व्यवस्थापकों ने आजीवन सदस्य बनने वाले को उपहारों का ढेर लगा दिया है-

- *पूरे जीवन भर मंत्र तंत्र यंत्र पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर पर डाक द्वारा*
- *सम्पूर्ण दीक्षा - रसेश्वरी दीक्षा एक-माह के भीतर भीतर निःशुल्क*
- *एक इक्कीस तोले का पारद शिवलिंग - जिसकी लागत न्यौछावर ही २५०० रू. है, पर आपको सर्वथा निःशुल्क*
- *एक १६ X २० साइज का प्राण ऊर्जा से चैतन्य, सिद्ध गुरूचित्र निःशुल्क*
- *प्रत्येक शिविर में अत्यधिक उपयोगी "शिविर सिद्धि पैकेट" १. धोती, २. माला, ३. पंच पात्र, ४. गुरुचित्र तथा ५. सिद्धासन - सर्वथा निःशुल्क*
- *"सूर्यकान्त उपरत्न" जो मंत्र सिद्ध है, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य, सर्व कार्य सिद्धि दायक सर्वथा मुफ्त*

● **यह छूट केवल भारत में रहने वाले साधकों को ही प्राप्त होगी**

●● **यह सुविधा १५ मई ९३ तक ही रहेगी**

आजीवन सदस्य

यों आप बिना उपरोक्त उपहारों के मात्र २४०० रू. देकर भी आजीवन सदस्य बन सकते हैं आपको जीवन भर "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' पत्रिका निःशुल्क घर बैठे प्राप्त होती रहेगी।

और जो साधक या पाठक किसी को विशेष आजीवन सदस्य बनने के लिये प्रेरित करेगा उसे एक धातु युक्त पारद शिवलिंग निःशुल्क उपहार स्वरूप प्राप्त होगा

विशेष ● और फिर यह आपकी धरोहर धनराशि है जो पत्रिका कार्यालय में आपके नाम से जमा रहेगी, जब भी आप आजीवन सदस्य न रहना चाहें, आप रजिस्टर्ड डाक से इस प्रकार का पत्र भेज दें, (जिसका प्रमाणीकरण कार्यालय द्वारा हो) पत्र भेजने की तारीख से दस वर्ष बाद **यह धरोहर धनराशि, बिना ब्याज के आपको लौटा दी जायगी।**

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

अजय कुमार उत्तम सदस्यता क्रमांक 4396

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और

भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

धनं धान्यं धरा हर्म्यं, कीर्तिर्आयुर्यश: श्रियम्।
तुरगान् दन्तिन: पुत्रान्, मंत्र सिद्धिं प्रदद्यते।।

इस जीवन में धन, धान्य, पृथ्वी, ऊंचे-ऊंचे भवन, कीर्ति, आयु, यश, द्रव्य, वाहन, पुत्र और पौत्र, सब कुछ केवल मंत्र सिद्धि से ही प्राप्त हो सकते हैं।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गलत समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना नाम या तथ्य मिल जाय तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु संत होते हैं अत: उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा, और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका से मंगवायें और न सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित सामग्री के संबंध में कभी भी किसी भी प्रकार की आलोचना या आपत्ति स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, सन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री को पुस्तकाकार या अन्य किसी भी रूप में डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली के नाम से प्रकाशित किया जा सकता है। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हो) बताते हैं वे ही दे देते हैं, अत: इस संबंध में आलोचना करना व्यर्थ है।
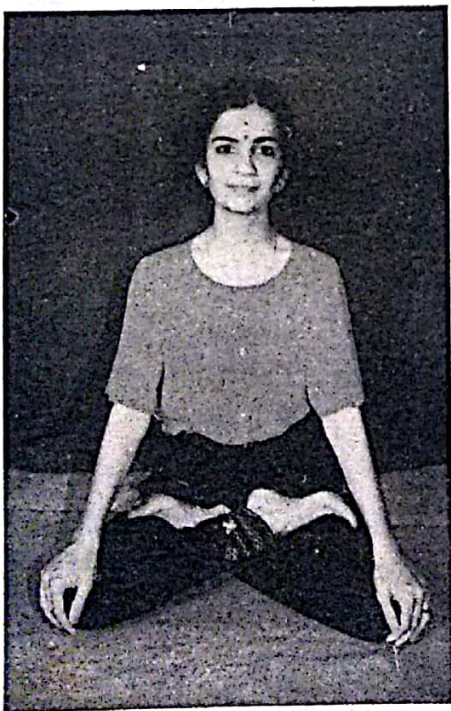
❑ प्रचण्ड तूफान से टक्कर लेने वाला बगलामुखी मंत्र

❑ स्वप्नेश्वरी मंत्र : जिसके द्वारा स्वप्न में प्रत्येक प्रकार का उत्तर जाना जा सकता है।

❑ अटूट धन प्राप्ति का बेजोड़ मंत्र-भुवनेश्वरी साधना

❑ अतुलनीय बल साहस पराक्रम के लिये-हनुमान सिद्ध मंत्र

❑ रोग निवारण की मंत्र साधना

❑ जैन तंत्र--सर्व सिद्धिदायक "दुर्लभ मंत्र"

❑ जिसकी नैत्र ज्वाला से शत्रु बेहोश होकर गिर पड़ता था।

❑ अपने जीवन से अनसुलझे प्रश्नों को सुलझाइये--स्वप्न वाराही मंत्र से

❑ यक्षिणी मंत्र--जो समस्त प्रकार के भोग, धन, ऐश्वर्य एवं सम्पदा देने में समर्थ है।

❑ ऐसा हो ही नहीं सकता कि आप "त्रिशक्ति" साधना करें और आपके कार्य सिद्ध न हों।

❑ एक मंत्र--जो हजार परमाणु बमों से भी ज्यादा विस्फोटक है।

❑ एक गोपनीय मंत्र--जिसने पूरे विश्व से अंधता निवारण का निश्चय कर रखा है।

❑ स्वप्नेश्वरी मंत्र

❑ मेनका--मेरी प्रेमिका
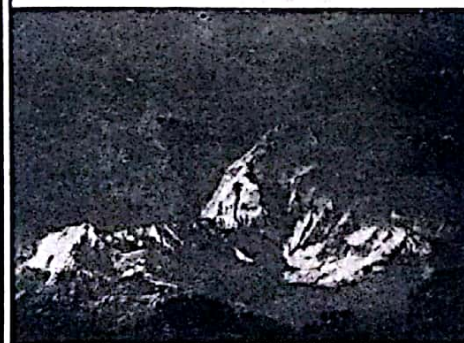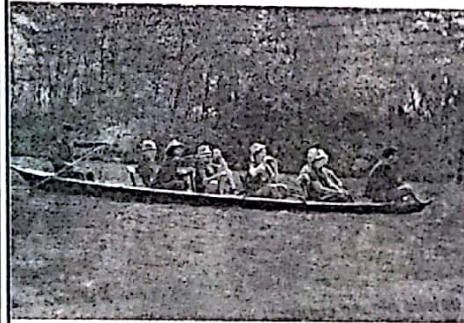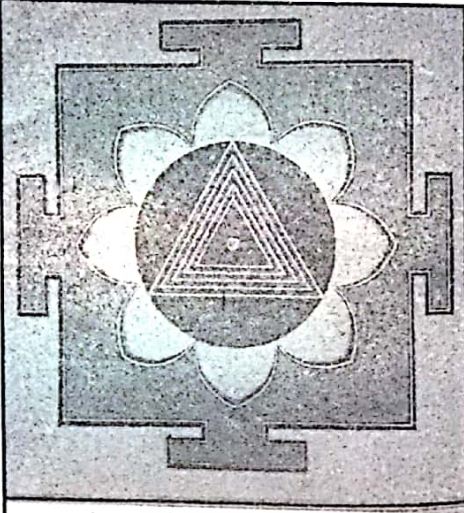
- एक अलौकिक लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र जो ब्रह्माण्ड की ध्वनियों से निर्मित हुआ
- महाकाल की नगरी में
- वीर मंत्र--जिसने आज के बुद्धिजीवियों को भी हैरत में डाल रक्खा है
- गणपति साधना मंत्र--जो सम्पूर्ण ऐश्वर्य देने में समर्थ है
- आयुर्वेद और आपका स्वास्थ्य
- कर्ण पिशाचिनी को थप्पड़ मैंने मारा था
- धधकते अंगारों पर वसन्त के कालजयी कदम
- मनुआ! मन की आखें खोल
- सखि! फिर वसन्त आया-इक्कीस अप्रैल के दिन
- अनिन्द्य अद्वितीय सौन्दर्य के छः आसन
- मंत्र संस्कार
- अनास्था में आस्था
- ग्रहनाश भूतेश्वर मंत्र

और भी बहुत कुछ : इस अंक में . . .

मंथन

आकाशीय ग्रहस्थिति तेजी से परिवर्तित हो रही है, और उसी गति से परिवर्तित हो रही है विश्व की राजनीतिक स्थिति.....नित नई संधियां हो रही हैं और टूट रही हैं, बिखर रहे हैं रूस जैसे बड़े राष्ट्र....और निकट भविष्य में परिवर्तन होने वाले हैं-

- ☐ अवश्य ही रूस एवं भारत के बीच क्रोमोव टेक्नोलाजी देने की संधि हुई है पर रूस, अमेरिका के दबाव से इस संधि को कार्यान्वित नहीं करेगा।
- ☐ और फिर रूस के राष्ट्रपति येल्तसिन की स्थिति भी डांवाडोल होने जा रही है, और वे सन् ९३ के अंत तक पद पर बने रहें, इसमें संदेह है।
- ☐ अमेरिका और भारत के संबंध भी मई के बाद कमजोर होने की स्थिति में आएंगे, अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति तो भारत के लिये बुश से भी ज्यादा बुरे होंगे।
- ☐ आने वाला समय पाकिस्तान के लिये संक्रमण कालीन है, और वर्ष के मध्य में काफी उथल पुथल होने जा रही है पाकिस्तान में, और उसका प्रभाव भारतवर्ष पर भी पड़ेगा।
- ☐ भारत के प्रधानमंत्री के लिये भी यह वर्ष जरूरत से ज्यादा चुनौतियों से भरा होगा, एक के बाद एक बाधा, एक के बाद एक परेशानी....
- ☐ और इन परेशानियों का अन्त होगा "मिड टर्म इलेक्शन" से जो भारत को झेलना ही पड़ेगा।
- ☐ और फिर होगी एक साझा सरकार, एक दो पार्टियों की वैशाखी के सहारे टिकी सरकार।
- ☐ बंगला देश में जून के बाद भारी उथल-पुथल होगी और तूफान से काफी नर संहार होगा।
- ☐ इराक एक बार फिर युद्ध के लिये आमादा होगा, और अमेरिका-इराक आमने सामने होंगे।
- ☐ इस वर्ष के अन्त में लंका एक नई समस्या से घिरेगा, जो उसके लिये घातक होगी।
- ☐ भारत में इस वर्ष के उत्तरार्द्ध में व्यापक फेर बदल होगा, और यह मंत्रि मंडलीय परिवर्तन देश को मध्यावधि चुनाव की ओर ही अग्रसर करेगा।
- ☐ सन् १९९५ तक देश में एक ऐसी क्रान्ति आयेगी जो अपने आप में अचरज भरी ही होगी।
- ☐ आने वाला समय चीन और भारत की मित्रता का होगा, घनिष्ठ और प्रेमयुक्त।
- ☐ और धुरी बनेगी अमेरिका-रूस और पाकिस्तान की, जो भारत की प्रगति को चारों ओर से घेर कर कमजोर करने की होगी....

और फिर बाकी अगले अंक में.....

सम्पादकीय
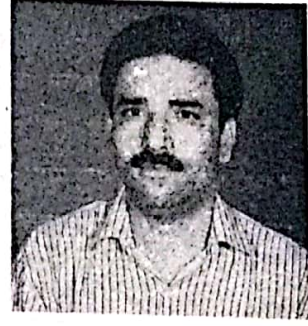
मानव जीवन का वास्तविक लक्ष्य कुछ प्राप्त करना और उसमें पूर्ण रूप से निष्णात होना है। यदि मनुष्य अपने प्रयत्नों से कुछ प्राप्त कर सके तभी तो जीवन की सार्थकता है क्योंकि क्रियाशील व्यक्ति का जीवन ही वास्तविक जीवन है, उसे अपने जीवन में निरंतर नये लक्ष्य स्थापित करने चाहिए।

वेद, पुराण, शास्त्र, उपनिषद और हजारों ग्रंथ हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि, योगी लिखकर धरोहर के रूप में हमारे लिये छोड़ गये हैं। उनमें जीवन के सभी क्षेत्रों से संबंधित गूढ़ प्रश्नों के उत्तर हैं, लेकिन यह सब बड़ा ही बिखरा हुआ है तथा क्लिष्ट भाषा में है। साधारण आदमी तो इस महासागर से कुछ भी नहीं समझ पाता है इनमें दिये गये प्रत्येक मंत्र का विशेष महत्व है, इसे किस रूप में अपनाया जाए, और क्या आपके लिये आवश्यक है यह जानना जरूरी है।

मंत्र शक्ति विशेषांक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता है। इसमें मंत्र शक्ति किस प्रकार हर व्यक्ति के लिये उपयोगी हो सकती है और कौन व्यक्ति किस प्रकार के मंत्रों का उपयोग करे, इसे प्रस्तुत करने का पूर्ण प्रयास है। मंत्र और मानव एक दूसरे के पूरक हैं, और साधना इसका सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। जब साधना और कर्म का समन्वय होता है, तो जीवन शक्ति सम्पन्न अवश्य बनता है। प्रस्तुत मंत्र शक्ति विशेषांक गागर में सागर भरने के समान ही है, क्योंकि इसमें दिया गया प्रत्येक मंत्र चैतन्य, सिद्ध और प्रायोगिक तौर पर परखा हुआ है।

प्रस्तुत विशेषांक उन सभी के लिये आवश्यक है, जिनके जीवन में शक्तितत्व कम है और इस शक्तितत्व को वे जाग्रत करना चाहते हैं, इसके लिये प्रयत्नशील हैं। वे सभी जिनके जीवन में कुछ न कुछ न्यूनता है, मंत्र शक्ति के सार्थक उपयोग से अपने जीवन की उस कमी को अवश्य ही पूरा कर सकते हैं।

मंत्र शक्ति विशेषांक का यह अंक नये रूप में विविध स्तंभों के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है, और इस अंक में ऐसा साहित्य है कि वह बाल, युवा, वृद्ध, गृहस्थ, योगी सबके लिये उपयोगी है। योग, आयुर्वेद, अनुभूतियां, ज्योतिष, राशिफल काल-गणना इत्यादि नये स्तंभों के साथ यह अंक आपको सौंपते हुए मुझे हर्ष है।

मेरा विचार है कि पत्रिका के लिये सबसे आवश्यक व्यक्ति पाठक है, जो प्रस्तुत साहित्य को अपने उपयोग में लाता है, और पत्रिका में उसकी भागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। सभी पाठकों से मेरा निवेदन है कि वे पत्रिका के इस नये रूप का अवलोकन करें, और इस बारे में पत्र लिखकर हमें अपने बहुमूल्य विचारों से अवश्य अवगत कराएं, जिससे पत्रिका और भी अधिक सार्थक रूप में उन्हें प्राप्त हो।

इसी माह में पूज्य गुरुदेव के सभी शिष्य उनका जन्म दिवस, जिसे वे "निखिलेश्वर महोत्सव" के रूप में धूमधाम से मनाते हैं, हेतु प्रयाग में एकत्र होंगे। पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस २१ अप्रैल है, और यह समारोह चार दिन १८, १९, २०, २१ अप्रैल को शिष्य पूरे जोश के साथ मनाते हुए पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु उनके पास आते हैं, मैं आप सभी को आमंत्रित करता हूं इस समारोह में आने हेतु, और पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों का श्रवण कर उन्हें अपने जीवन में सार्थक उपयोग कर जीवन को और अधिक उज्जवल बनाने हेतु-

आपका अपना

नन्दकिशोर श्रीमाली

पाठकों के पत्र

पत्रिका का मार्च विशेषांक पढ़कर यह विश्वास हो गया कि है कि हमारे गृहस्थ जीवन की सभी समस्याएं मंत्र तंत्र के माध्यम से सुलझ सकती हैं, अब हमें पंडे पुरोहितों का चक्कर लगाने की कोई आवश्यकता नहीं रही, आपको इस अमूल्य उपहार का तहे दिल से मैं स्वागत करता हूं।

नवीन जोशी, बड़ौदा

मार्च विशेषांक में प्रकाशित साधना सामग्रियों का तो कोई मुकाबला ही नहीं है। जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श किया है आपने। निश्चय ही यह पत्रिका हजारों लाखों व्यक्तियों के आंसू पोंछने में समर्थ है।

-हरिहर भाई, पूना

आपकी यह पत्रिका पढ़ने के बाद मंत्र के संबंध में मेरी सभी भ्रांतियां दूर हो गई हैं, अपनी प्राचीन विद्याओं पर गर्व होने लगा है मुझे। अब तो मैं इस पत्रिका के सारे पिछले अंक मंगाकर रख लेना चाहता हूं। क्या ऐसा संभव है?

-रोहित गुप्ता, दिल्ली

मार्च अंक में वर्णित वशीकरण प्रयोग मैंने सम्पन्न किया था और मेरे पति की सभी आदतें छूट गयीं। अब वे पूर्ववत् मुझ पर ध्यान देते हैं और सभी दायित्वों का संतोषपूर्वक निर्वहन भी करते हैं। हमारे टूटते गृहस्थ जीवन की पुनः बसाने का सारा श्रेय आपकी पत्रिका को ही है, मैं किन शब्दों में आपका शुक्रिया अदा करूं।

-चंचल देसाई, लखनऊ

साबर मंत्रों का चमत्कार देखकर तो मैं दंग रह गया। मेरे पिताजी की तबियत अक्सर खराब रहती थी। बड़े-बड़े चिकित्सक भी हार मान बैठे थे और मैंने मात्र तीन दिनों का साबर रोग नाशक प्रयोग किया। अब मेरे पिताजी पूर्ण स्वस्थ हैं, रोग का कोई निशान तक नहीं बचा है, आपकी पत्रिका दिन रात उन्नति करे, ऐसी ही मैं कामना करता हूं।

-कमल त्रिवेदी, इटावा

मेरा कारोबार कई दिनों से मंदा पड़ा हुआ था, पत्नी की उपेक्षाओं से मैं त्रस्त हो चुका था। ऐसे में पत्रिका का साबर मंत्र विशेषांक मेरे लिये डूबते को तिनके का सहारा ही प्रतीत हुआ। इसमें वर्णित व्यापार लाभ प्रयोग मैंने किया और अगले ही दिन से मेरी दुकान की बिक्री चार गुना बढ़ गयी, मुझे पूरी उम्मीद है कि कुछ ही समय में मैं अपने पुराने स्तर को प्राप्त कर लूंगा।

-गोपीचन्द अग्रवाल, मथुरा

आपके मार्च अंक में प्रकाशित उर्वशी साधना मैंने सम्पन्न की पर दिखना तो दूर उसकी भनक तक न मिली। न उसके घुंघरू की आवाज आई, न उसकी सुगंध ही अनुभव हुई। ऐसा क्यों हुआ आप ही जानें। शायद आपकी साधना विधि में कोई न्यूनता हो।

-प्रवीण टंडन, इलाहाबाद

सांवलेपन के कारण मेरी बहिन का विवाह नहीं हो पा रहा था। उसकी उम्र निकलते जाने से हम सभी चिन्तित थे। वह भी एक हीन भावना का शिकार हो गई थी। मार्च विशेषांक में दिए साबर प्रयोग को सम्पन्न करते ही उसका रूप ही बदल गया, अब तो उसके विवाह के कई प्रस्ताव आ चुके हैं। मेरी बहिन को नयी जिन्दगी देने के लिये हार्दिक धन्यवाद।

-रवीन्द्र गांगुली, कलकत्ता

आपकी पत्रिका के आगमन से तो हमारे घर का वातावरण ही बदल गया है। घर के सभी सदस्य इसे चाव से पढ़ते हैं और अपने योग्य साधनाएं भी ढूंढते हैं, बाहर के कलुषित माहौल से हटकर सब वे आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होने लग गए हैं। वास्तव में ही यह पत्रिका, बच्चों में शुभ संस्कार उत्पन्न करने में समर्थ हैं।

-उषा पासलकर, धार

मुझे तो सब ढकोसला ही लगता है। तंत्र-मंत्र तो अत्यंत गूढ़ विद्याएं हैं, इतनी सुगमता के कैसे सीखी जा सकती हैं पत्रिका में वर्णित सरल विधियों को देखकर मुझे इनकी प्रामाणिकता पर संदेह होता है। क्या सिद्धियों का मिलना इतना सरल भी हो सकता है? मेरा भ्रम दूर करें।

-हेमंत रस्तोगी, भोपाल

(टिप्पणी-प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। पत्रिका में वर्णित विधि के अनुसार साधना करके

देखिए, आपको अवश्य ही सफलता मिलेगी, पर गुरु दीक्षा अवश्य ग्रहण कर लें।)

दैवी शक्तियां आप भी सहायक होती हैं, पर आपकी पत्रिका में वर्णित साधना विधियों ने सिद्ध कर दिया है। मेरे भीतर का नास्तिक व्यक्तित्व तो कब का गायब हो चुका है। पत्रिका में वर्णित जितनी भी साधनाएं मैंने सम्पन्न कीं, उन सभी में मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई, और अब तो मैं अपना शेष जीवन साधना को ही समर्पित करने की सोच रहा हूं।

-दिवाकर सहाय, मनाली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में आपको अन्य प्राच्य विद्याओं जैसे ज्योतिष, आयुर्वेद, रत्न, चिकित्सा आदि को भी स्थान देना चाहिए ताकि हमें एक सर्वांग पत्रिका मिल सके। किसी अन्य पत्रिका का आश्रय न लेना पड़े। आशा है आप मेरे अनुरोध पर विचार करेंगे।

-ज्योत्सना, हैदराबाद

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका का "साबर मंत्र विशेषांक" प्राप्त हुआ। इस में दिये गये मंत्र "इच्छानुसार हाँ भरने के लिए" मंत्र का प्रयोग किया। मुझे अत्यन्त सुखद आश्चर्य हुआ कि मेरी प्रेमिका के घर वालों ने मेरे साथ उसका रिश्ता स्वीकार कर लिया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

-नवेन्दु घोष, कलकत्ता

मैं जैन धर्म का अनुयायी हूँ और मुझे यह नहीं मालूम था कि जैन साहित्य में भी साबर-प्रयोग हैं। मैंने मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका में दिये गये जैन साबर प्रयोग में "फौजदारी मुकदमा निवारण प्रयोग" किया और मेरे ऊपर चल रहा मुकदमा जो कि मेरे विपक्षी के लिए फायदेमन्द साबित हो रहा था, उसका निर्णय मेरे पक्ष में हुआ। मैं इस पत्रिका का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ।

-एस.सी. जैन, दिल्ली

आप ने पत्रिका के साबर मंत्र विशेषांक में "गर्भ पतन न होने का प्रयोग" दिया है। मैंने उसका प्रयोग किया और इस बार ऐसा विश्वास हो रहा है कि मेरा गर्भपात नहीं होगा। इस प्रयोग के बाद से मेरा स्वास्थ्य सुधर रहा है और डाक्टर भी आश्चर्य चकित है क्योंकि उन्होंने कहा था कि तीन चार दिन में ही एबार्शन हो जायेगा।

-इन्दुमति उपाध्याय, गोरखपुर(उ.प्र.)

मेरी पिता जी को दो महीने से पेट में बराबर दर्द बना रहता था और कुछ खाना पचता नहीं था। मैंने मार्च अंक में दिये गये साबर प्रयोग को आजमाया। दूसरे दिन से ही पेट का दर्द काफी कम हो गया। चार पाँच दिन बाद वे अपने आप को बिल्कुल स्वस्थ महसूस कर रहे हैं। आप कुछ अन्य बीमारियों से सम्बन्धित प्रयोग भी देने की कृपा करें।

-हरि किशन सिंह, उज्जैन

वर्ष १२ अंक ४ — सम्पादक मंडल — अप्रैल ९३

पत्र व्यवहार- मंत्र-तंत्र-यंत्र कार्यालय, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज.)

टेलीफोन-०२९१-३२२०९

दिल्ली कार्यालय-गुरुधाम-३०६ कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली, **टेलीफोन-**०११-७१८२२४८

सम्पादक मंडल- डॉ० श्यामलकुमार बनर्जी, कृष्ण मुरारी श्रीवास्तव, गुरुसेवक

संयोजक- कैलाशचन्द्र श्रीमाली

वित्तीय सलाहकार- अरविन्द श्रीमाली

प्रधान सम्पादक
नन्दकिशोर श्रीमाली

काश! ये पंक्तियां न लिखनी पड़तीं...

काश! ये पंक्तियां न लिखनी पड़तीं यदि जैम्स आल्डविन से बातचीत न हुई होती, आल्डविन अत्यंत मेधावी और उच्चकोटि का यथार्थ लेखक था, वह समय से आगे देखता और लिखता, परंतु जो भी बहुत आगे की ओर दृष्टि डाल कर, समाज की आंखों में आंखें डालकर काम करता है, उसे समाज निर्ममता से व्यथित कर डालता है, झकझोर देता है, ईशा ने समय से आगे बढ़कर भविष्य का आकलन कर कहा और उसे सूली पर चढ़ना पड़ा, सुकरात ने समाज से आगे बढ़कर आकलन कर कहा और उसके जहर का घूंट पीना पड़ा, जैम्स आल्डविन के साथ भी यही हुआ, उसने समाज में घटित यथार्थ घटनाओं को पत्रिका के माध्यम से उतारा और समाज के सामने रखा, पर समाज उससे बहुत पीछे था उसके गले जैम्स आल्डविन की घटनाएं उतरी नहीं, फलस्वरूप जैम्स को आलोचनाओं की बौछार सहनी पड़ी कुतर्कियों के व्यंग्य बाण अहसास करने पड़े और विरोधियों ने कानूनी दाव पेंच में आल्डविन को इस प्रकार उलझा दिया कि उसे अपनी रचनात्मक प्रतिभा को परे रख कर अपनी सारी शक्ति आक्रमणात्मक रूप से खड़ी करनी पड़ी, और उसके जीवन के कई वर्ष इन आलोचानाओं, इन आपत्तियों और इन बाधाओं को पार करने में व्यतीत करने पड़े। जो वर्ष सृजन के थे, वे आक्रमण में ही बीत गये, प्रतिरोध में ही समाप्त हो गये।

पर प्रवाह कभी रुकता नहीं है, उसने युगान्तरकारी पत्रिका का प्रकाशन, प्रामाणिक लेखन और प्रामाणिक घटनाओं का सृजन चालू रखा, समाज को झकझोरने की क्रिया बन्द नहीं की पर उसने साहित्य पर, अपने लेखन पर और अपने प्रकाशन पर वैधानिक चेतावनी के साथ-साथ "यह सब कल्पना है" का दूधिया आवरण बिछा दिया और इससे कुतर्कियों के हाथों में जो लट्ठ थे, वे पंगु हो गये, विरोधियों की गालियों के आगे विराम चिन्ह लग गया।

और वह जीवन के अंतिम क्षण तक आने वाले वर्षों का साहित्य, आने वाले वर्षों का वास्तविक स्वरूप कागजों पर उतारता रहा, उसकी मृत्यु के बाद देश ने और समाज ने उसकी रचनाओं को समझा, उसका मूल्यांकन किया, उसे देश की सर्वोच्च उपाधि प्रदान की, उसका साहित्य लाखों की संख्या में बिका और वह युगान्तरकारी व्यक्ति व प्रतिष्ठित हुआ।

इस तरह की घटनाएं और चाहे कुछ न करती हों पर इस विश्वास को तो जिन्दा रखती ही हैं, कि उद्देश्य पूर्ण साहित्य निर्माण में दिव्य व्यक्तित्व अकेला नहीं होता उसके साथ बहुत बड़ा वर्ग होता है। उसें अपने लेखन पर "यह सब कल्पना है", "कुतर्की इसे गप्प समझें" का आवरण डालकर ही जीना पड़ता है, जैसे कि जैम्स आल्डविन ने जिया......बस।

धधकते अंगारों पर

वसन्त के कालजयी कदम

गूढ़ विद्याओं के क्षेत्र में श्रीमाली जी का मैंने काफी नाम सुन रखा था। हिमालय स्थित सन्यासियों और गृहस्थ साधकों दोनों ने ही उनकी महत्ता को निर्विवाद रूप से स्वीकार किया था, और साथ ही मेरी आलोचक वृत्ति को भी जाग्रत कर दिया था, मैं ऐसे अप्रतिम विद्वान से भेंट कर अपनी पत्रकार दृष्टि से उनके व्यक्तित्व की न्यूनताओं को ढूंढने का आकांक्षी था, अंत में मेरी चिर-प्रतीक्षित अभिलाषा पूर्ण हुई और अत्यंत व्यस्तता के बीच कुछ क्षण निकाल कर उन्होंने एक लघु साक्षात्कार दिया। प्रस्तुत है हमारे उसी वार्तालाप के कुछ अंश.....

प्रश्न- श्रीमाली जी! काफी महान हस्ती बन चुके हैं आप! कैसा लग रहा है आपको इतने सारे प्रशंसकों से घिर कर?

उत्तर- मूलत: राजस्थान का निवासी हूं मैं, बचपन से ही ज्योतिष, कर्मकांड और वैदिक मंत्रों के वातावरण में पला। विवाह भी अत्यंत कम उम्र में ही हो गया था। कठिन परिस्थितियों, कष्टों का सामना करते हुए, अभाव ग्रस्त जीवन जीते हुए मैंने डॉक्टरेट तक की शिक्षा प्राप्त की। युवावस्था में ही यह संकल्प ले लिया था कि भारत की प्राचीन विद्याओं के पुनर्रुत्थापन के लिये ही अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करूंगा, मंत्र, तंत्र की सार्थकता पुन: प्रतिष्ठित करूंगा, और मेरे इसी संकल्प का मूर्त रूप है- "सिद्धाश्रम साधक परिवार" जिसे आप देख ही रहे हैं।

प्रश्न- चलिए मान लेते हैं आपके तंत्र मंत्र प्रामाणिक हैं, अचूक हैं, परंतु क्या आज भी इसके ज्ञाता मौजूद हैं?

उत्तर- अवश्य ही, पर वे सामान्य व्यक्ति की पहुंच से बाहर हो गये हैं। हिमालय की दुर्लभ कंदराओं में तपोलीन रहना ही उन्हें पसंद है, पर कोई दृढ़ निश्चयी व्यक्ति अगर कटिबद्ध हो जाय तो वह उन्हें खोज सकता है, उनका शिष्यत्व ग्रहण कर सकता है, बहुत कुछ उनसे प्राप्त भी कर सकता है। मेरी जानकारी में आज भी ऐसी विभूतियां हैं जो गूढ़ ज्ञान का पूंजीभूत स्वरूप हैं, साधना की उच्च भावभूमि पर प्रतिष्ठित हैं।

डॉ. श्रीमाली स्वयं मंत्र सिद्ध योगी हैं, गृहस्थ हैं, अद्वितीय हैं, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, वेद, उपनिषद् तंत्र, मंत्र, योग, दर्शन, आयुर्वेद सभी क्षेत्रों में वे सिद्धहस्त आचार्य हैं, अपने आप में एक सम्पूर्ण युग समेटे हुए हैं......इतना होने पर भी सरल...... निष्कपट.......सात्विक.......

प्रश्न- अच्छा श्रीमाली जी! सच-सच बताइये आपकी आयु कितनी है?

उत्तर- अगर उम्र से आपका तात्पर्य जन्म से लगाकर मृत्यु तक का समय है तो आप भ्रम में हैं, यह तो उस लंबी श्रृंखला की एक कड़ी है, जिसे हम जीवन कहते हैं। आप मात्र देहगत आयु को ही सब कुछ मान बैठे हैं, जिसमें मेरी भौतिक अवस्था और क्रियाकलाप दृष्टिगोचर हो रहे हैं, परंतु मेरी प्राणगत आयु आपकी दृष्टि से परे है जिसमें साधनात्मक उपलब्धियां, आन्तरिक ज्ञान-चिन्तन, वैराग्य, समाहित है, भले ही वह प्रत्यक्ष जगत में दिखाई न दें। अतः मेरी देहगत आयु कम होते हुए भी प्राणगत आयु हजारों वर्ष की है।

प्रश्न- किन वर्षों के अन्तराल में आप हिमालय में साधनारत रहे?

उत्तर- जिनके प्राण तत्व जाग्रत होते हैं वे अपने पिछले कई जन्मों के साक्षीभूत होते हैं, और उस काल खण्ड में किये गये कर्म, साधनाएं और तपस्या भी उनकी जानकारी में रहती है। अपनी प्राणगत अवस्था में मैंने लगभग दो हजार वर्षों तक हिमालय में तपस्या की, और मुझे उस आयु-श्रृंखला के क्षणों का भलीभांति स्मरण है, जब मैं कंदराओं में तपस्यारत रहा, उच्चकोटि की साधनाएं सिद्ध कीं, ब्रह्म साक्षात्कार किया, और जीवन की पूर्णता प्राप्त की। यह श्रृंखला वर्तमान जीवन का भी अभिन्न अंग है। आज भी मैं नित्य हिमालय विचरण करता हूं। दिन भर गृहस्थ शिष्यों के बीच रहकर रात्रि में मैं अपने सन्यासी शिष्यों के मध्य व्यस्त रहता हूं, उनका भी मार्ग दर्शन करता हूं।

सच तो यह है कि बुद्धि के माध्यम से आप किसी की प्राणगत अवस्था को नहीं पहचान सकते, और इसीलिये न ही किसी योगी की आयु, जीवन या साधनात्मक शक्तियों को चैलेन्ज किया जा सकता है, न उसकी आलोचना की जा सकती है, और न उसके विषय में वाद-विवाद या तर्क की कोई गुंजाइश है।

प्रश्न- सिद्धाश्रम एक वास्तविक स्थल है या आपकी कल्पना की उपज?

उत्तर- सिद्धाश्रम कोई काल्पनिक स्थल नहीं है, यह तो महान आध्यात्मिक पुनीत स्थली है, जिसका वर्णन प्राचीन ग्रंथों में भी आया हुआ है। कैलाश मानसरोवर के उत्तर में मीलों दूर तक फैला यह दिव्यधाम साधना के परमतत्व का मूर्त स्वरूप है, परंतु ओजोन रश्मियों से आच्छादित होने के कारण न तो इसे चर्म चक्षुओं से देखा जा सकता है, और न ही वायुयान या उपग्रह से इसके चित्र लिये जा सकते हैं।

अमृत के इस दिव्यधाम में मृत्यु का कोई चिन्ह नहीं है। किसी प्रकार का दुःखदैन्य, अभाव, दुर्बलता या चिन्ता नहीं है। हर तरफ आनन्द, मस्ती और तपस्या का वातावरण है। आज भी यहां वशिष्ठ, विश्वामित्र, गर्ग, अत्रि, कणाद, श्रीकृष्ण, शंकराचार्य आदि सदेह विचरण करते हैं और हम उन्हें देख सकते हैं, वार्तालाप कर सकते हैं और उनसे ज्ञान भी अर्जित कर सकते हैं। सम्पूर्ण विश्व में भौतिकता और आध्यात्मिकता के मध्य संतुलन बनाये रखने की जिम्मेवारी सिद्धाश्रम पर ही है, और इसी उद्देश्य से सिद्धाश्रम के विशिष्ट योगी समय-समय पर इस भौतिक जगत में अवतरित होते रहते हैं।

पर साधनात्मक बल से ही इस सिद्धाश्रम में प्रवेश पाया जा सकता है। और यह प्रवेश ही मानव जीवन की पूर्णता है, सार्थकता है।

प्रश्न- इस कठिन युग में व्यक्ति को मंत्र-तंत्र के स्वप्न जाल में फंसाना क्या उसे कर्म क्षेत्र से च्युत नहीं करेगा, उसे अकर्मण्य नहीं बना देगा?

उत्तर- अकर्मण्य बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता, साधना क्षेत्र में उतरे व्यक्ति को कर्मठ बनना ही पड़ेगा। आप स्वयं सोचिए कि आज के युग में एक सामान्य व्यक्ति तो वश में होता नहीं है, दैवी शक्तियों को वश में करना हंसी-खेल कैसे हो सकता है? इसके लिये तो स्वयं को पूर्ण रूपेण दांव पर लगाना होगा, एक-एक क्षण को पकड़ना होगा, कठोर परिश्रम करना पड़ेगा, और वह भी गृहस्थ के सभी कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए, क्या इससे व्यक्ति का नवनिर्माण नहीं हो जायेगा? वह तो अत्यंत सुलझे हुए, मानवीय गुणों से परिपूर्ण, सहनशील और जुझारू व्यक्तित्व के रूप में सामने आयेगा।

Scanned by CamScanner

प्रश्न-आप तंत्र से कठिन समस्याओं को भी सुलझाने का दावा करते हैं, यह वास्तविकता है या मात्र प्रचार पाने का नया जरिया?

उत्तर-तंत्र मंत्र तो बने ही इसीलिये हैं। मानव जीवन को अधिक सरल, सफल और आनन्द पूर्ण बनाना ही इनका ध्येय है। मैं तो कहता हूं आप स्वयं मंत्रों का प्रयोग करके देखिए। सही रूप में अनुष्ठान संपन्न करिये, तो निश्चय आपके जीवन की सभी समस्याएं सुलझ जाएंगी। इसमें लेश मात्र भी संशय नहीं है। आवश्यकता है सही मंत्रोच्चारण की, प्रामाणिक उपकरणों की और सुयोग्य मार्गदर्शन की। मेरे कई शिष्यों ने तंत्र मंत्र के माध्यम से रातों-रात ही सफलता की सारी बुलन्दियां पार की हैं और आज वे समाज में उच्च स्थानों पर प्रतिष्ठित हैं।

प्रश्न- पर हमारे वैज्ञानिक तो तंत्र-मंत्र की सत्यता प्रमाणित नहीं करते, बुद्धिजीवी वर्ग तो इसका मखौल ही उड़ाता है।

उत्तर- वैज्ञानिक इसे प्रमाणित कर भी नहीं सकते, उनकी भी सीमाएं हैं, उसके परे उनकी बुद्धि काम नहीं करती, उनके पैमाने आध्यात्मिक उपलब्धियों को नहीं नाप सकते। सच तो यह है कि

जहां विज्ञान की समाप्ति होती है वहां से साधना का शुभारंभ होता है। अतः दोनों की तुलना करना ही व्यर्थ है। वैसे पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने भी योगियों की अतीन्द्रिय क्षमताओं को स्वीकार किया है, उस पर अनुसंधान भी चल रहे हैं।

जहां तक मखौल उड़ाने की बात है तो यह व्यक्ति की अज्ञानता का ही द्योतक है, जो कुछ नहीं कर सकते जो खोखले हैं, वे हंसी तो उड़ा ही सकते हैं, और मूर्खों की प्रतिक्रियाओं से विचलित होना कोई बुद्धिमानी का कार्य नहीं है।

प्रश्न- सुना है आप सम्मोहित करके व्यक्ति के पिछले जन्मों का भी पता लगा लेते हैं?

उत्तर- यह कोई दुष्कर कार्य नहीं है। सम्मोहन का क्षेत्र तो अत्यंत विस्तृत है और किसी भी व्यक्ति का जीवन उसके मूल अथवा तात्विक गुण-कोटि पर निर्भर करता है, जो उसकी अन्तर्रात्मा की पूर्व संचित शक्ति पर आधारित है। एक उच्चकोटि का सम्मोहन कर्ता पिछले जीवन में भलीभांति झांक सकता है, उसके वर्तमान कष्टों के रहस्यों को उजागर कर सकता है, और यदि उसके पास साधनात्मक बल हो तो वह यौगिक क्रियाओं से अपने माध्यम के पूर्व कर्मों के परिणामों को निष्फल भी कर सकता है।

प्रश्न- क्या देवी देवताओं का भी अस्तित्व होता है?

उत्तर- निश्चित रूप से। हमारे शास्त्रों, पुराणों में वर्णित सभी देवी देवताओं का अस्तित्व विद्यमान है, और साधना के माध्यम से न केवल हम उन्हें प्रत्यक्ष कर सकते हैं, वरन उन्हें अपने अनुकूल भी बना सकते हैं, पर इसके लिये आपको अपने इष्ट देव में अपार श्रद्धा रखनी होगी। संशय नहीं चलेगा, गीता में भी स्पष्ट उल्लिखित है- "संशयात्मा विनश्यति", दूसरे यदि आपका आचरण शुद्ध नहीं है तो दैवी अनुग्रह की आशा न पालें। दैवी शक्तियों तो स्वतः आपकी सहायता की इच्छुक हैं; आवश्यकता है स्वयं में पात्रता लाने की।
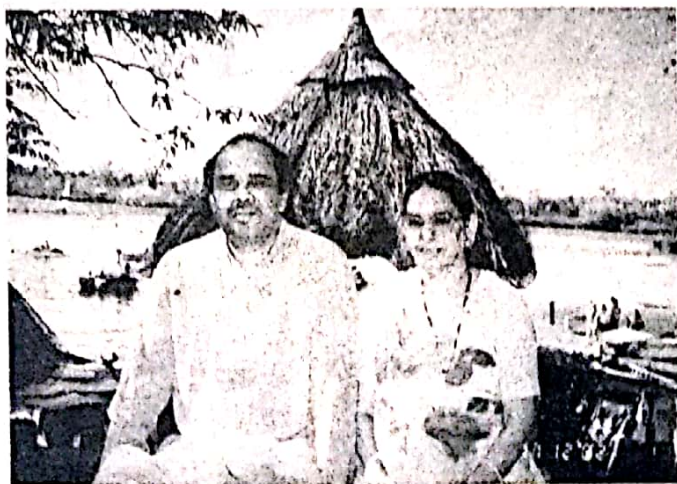
प्रश्न-जो दिखाई ही न दें, उन पर हम कैसे विश्वास कर लें? यह तो भोली-भाली जनता को गुमराह करना हुआ।

उत्तर- मैं पूछता हूं आपने कनाडा का नियाग्रा जलप्रपात देखा है? नहीं देखा, फिर आप कैसे उसके अस्तित्व को मान बैठे हैं? यदि आप नहीं भी मानें तो भी नियाग्रा प्रपात अपनी छटा बिखेरेगा ही, इसी प्रकार देवी-देवताओं को भी उच्चकोटि की आत्माएं ही देख पाती है। आप भी साधनाओं के माध्यम से उस स्तर को प्राप्त कर उनके दर्शन कर सकते हैं।

वस्तुत: यह हमारा भ्रम है कि जो हमारी इन्द्रियों की पकड़ में है, वही सत्य है। जबकि हकीकत में वह सृष्टि का मात्र लाखवां हिस्सा ही है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड दो रूपों में विभक्त है-स्थूल और सूक्ष्म। पर सूक्ष्म जगत हमारी दृष्टि से परे है। इस विशाल सूक्ष्म जगत में कई लोक हैं, और यह स्थूल से अधिक शक्ति सम्पन्न, अधिक उपयोगी और अधिक कारगर है। साधना के माध्यम से ही व्यक्ति स्थूल जगत को पार कर सूक्ष्म जगत में विचरण कर सकता है।

प्रश्न- हमारे समक्ष अपनी कुछ सिद्धियों का प्रदर्शन करेंगे आप?

उत्तर- यह कोई मदारी का खेल नहीं है जो यत्र-तत्र प्रदर्शित किया जाए, चमत्कार वे दिखाते हैं जो अंदर से खोखले होते हैं, जो समाज में अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। आधा भरा हुआ घड़ा ही छलकता है, पूरा भरा हुआ नहीं। मेरे जीवन कर लक्ष्य ठोस कार्य करना है, और मैं अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ हूं, चमत्कार सदा ही बाधक सिद्ध होते हैं इस मार्ग में, अत: आप आस्था रखें या नहीं, मैं अपने स्तर से नीचे नहीं

गिर सकता, सिद्धियां तो अनुभव करने की वस्तु है, समय आने पर उजागर भी की जा सकती हैं।

प्रश्न- आपके कोई गुरु भी हैं या अपने को स्वयंसिद्ध प्रचारित करने पर तुले है आप?

उत्तर- मैं तो निमित्त मात्र हूं, गुरु आज्ञा से ही इन कर्मों को संपन्न कर रहा हूं। वही मेरे प्राण, मेरे जीवन, मेरे सर्वस्व हैं। मेरे गुरुदेव साधना जगत की अनन्यतम विभूति परम-हंस स्वामी सच्चिदानंद जी हैं, सिद्धाश्रम के संचालक भी वही हैं। उनका संकेत मिलते ही मैं यह गृहस्थ जीवन त्यागकर पुन: उनके चरणों में लौट जाऊंगा, पर मेरे शिष्य मेरे बाद भी तंत्र, मंत्रों की अखण्ड ज्योति को प्रज्ज्वलित रखेंगे।

प्रश्न- हम आपके गुरु से भी भेंट करना चाहते हैं?

उत्तर- सामान्य मानव के लिये संभव नहीं है यह। वे सिद्धाश्रम में ही निवास करते हैं, और जैसा कि मैं स्पष्ट कर चुका हूं साधनात्मक विधि से ही उनके संपर्क किया जा सकता है। उनके दर्शन को तो देवगण भी तरसते हैं। हां, सिद्धाश्रम संस्पर्शित गुरु

पूज्य गुरुदेव एकमात्र ऐसे व्यक्तित्व हैं, जो सभी दृष्टियों से पूर्ण एवं अद्वितीय व्यक्तित्व है, जो अपनी साधना के बल पर कुछ भी करने में समर्थ हैं।

का शिष्यत्व प्राप्त कर, उच्चकोटि की साधनाएं संपन्न कर उनके दर्शन किये जा सकते हैं।

प्रश्न- आपके शिष्य आपको अवतार मानते हैं। क्या उन्हें भी आपने सम्मोहित कर रखा है?

उत्तर- यह उनकी भावनाएं हैं। स्वयं को ईश्वर कहलवाना मेरी मान्यता के विपरीत है। मेरा जीवन दर्शन मानव बने रहना ही है, और शिष्यों को सम्मोहित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वे तो मेरे प्राणों से जुड़े हैं, कोई स्वार्थ बंधन नहीं है यहां पर। शिष्य बनकर ही शिष्यता की उच्च भावभूमि को समझ सकते हैं आप, और गुरु को तो किसी भी रूप में लिया जा सकता है। जिस रूप में भी आप श्रद्धा रखेंगे उसी के अनुरूप फल भी आपको मिलेगा। यह तो भावनाओं का संसार है। भौतिक जगत के कोई नियम, कोई व्यवस्था इस पर लागू नहीं होती।

प्रश्न- देश की विषम परिस्थितियां छुपी नहीं हैं आपसे। क्या आपका यह कर्तव्य नहीं बनता है कि सिद्धियों के द्वारा राष्ट्र की सभी समस्याएं दूर कर दें, आप तो क्षण मात्र में ही सब कुछ कर सकते हैं।
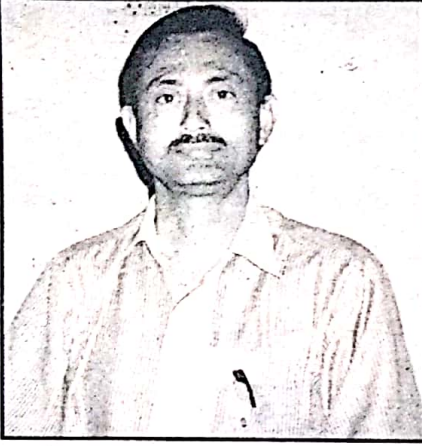
विजय कलाल--साक्षात्कार कर्ता

उत्तर-मैं जो कुछ भी कर रहा हूं मानव मात्र के लिये ही कर रहा हूं। और मेरा कर्तव्य भी यही है। परन्तु कोई भी योगी प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप करना सामान्यत: पसन्द नहीं करता, और फिर हर कार्य का एक निश्चित समय भी होता है। गौरव की बात तो तब होगी जब हम संघर्ष करते हुए अपने साधनात्मक श्रम से, प्रयत्नों से प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करें।

प्रश्न- आपके कितने शिष्य ऐसे हैं जिन्होंने सिद्धियों को हासिल कर लिया है? क्या आप मिलवाएंगे उनसे?

उत्तर- यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे ऐसे कई शिष्य मिले हैं जो मेरी कसौटी पर खरे उतरे हैं, साधनाओं में सफलता प्राप्त की है, और सिद्धियों को भी हस्तगत किया है। कई शिष्य तो सिद्धाश्रम में भी प्रवेश पा चुके हैं। इन सफल शिष्यों में समाज के हर वर्ग के व्यक्ति शामिल हैं, स्त्रियाँ भी पीछे नहीं रही हैं। समय आने पर वे सभी शिष्य सामने आयेंगे, सूर्य की भांति दैदीप्यमान स्वरूप में, साधनात्मक युग का सूत्रपात करते हुए। अज्ञान की तिमिर रश्मियों से ढके समाज को वे नई दिशा, नया प्रकाश देने में निश्चय ही समर्थ होंगे।

प्रश्न- यह ती समय ही बतायेगा क्या सही है क्या गलत। पर आपके पास रहकर कौन-कौन सी विद्याएं सीखी जा सकती हैं?

उत्तर- सही कह रहे हैं आप। समय ही योग्यतम परीक्षक है। मेरी रुचियां तो भारत की सभी प्राच्य विद्याओं में रही हैं, और मेरे पास अधिकांश युवक ज्योतिष, कर्मकांड, तंत्र, मंत्र आयुर्वेद, पारद विज्ञान, सूर्य विज्ञान, सम्मोहन आदि सीखने की आकांक्षा लेकर आते हैं। पर शिष्यता की मेरी अपनी कसौटियां है, और इसमें आधे मन का व्यक्ति सहज में ही उड़ जाता है। दिवास्वप्न देखने वालों के लिये यहां कोई स्थान नहीं है।

पर जो वास्तव में दृढ़ निश्चयी होते हैं वे सभी चुनौतियों को सहज ही झेल जाते हैं, उनके हृदय में साधना की अग्नि मंद नहीं पड़ती, और वे ही आगे चलकर अमूल्य हीरे में परिवर्तित हो पाते हैं, साधना के मोती भी उन्हीं के हाथ लगते हैं। मेरे द्वार तो ऐसे सभी युवकों के लिये सदा खुले हैं।

प्रश्न- भविष्य के लिये आपकी क्या योजनाएं हैं? शिष्यों की संख्या बढ़ाना, संस्था को विदेशों तक पहुंचाना या राष्ट्र का नव-निर्माण करना।

उत्तर-मुझे शिष्यों की फौज नहीं खड़ी करनी है। मेरी संस्था उच्चतर मानवीय मूल्यों के दृढ़ स्तंभों पर आधारित है, और वह आगे बढ़ेगी ही। जागरूक साधक स्वयं इससे जुड़ेंगे, और यह स्वाभाविक भी है। वर्तमान सामाजिक परिवेश में आज कौन संतुष्ट है? सभी के हृदय में व्याकुलता है, आगे बढ़ने की ललक है, जीवन को नये रूप में देखने की आकांक्षा है। मेरी हार्दिक इच्छा यही है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति हो, उसमें एक नई ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति, विचार शक्ति, आत्म शक्ति जाग्रत हो, और साधनाओं के माध्यम से वह नवीन जीवन जीने की प्रक्रिया आरंभ करे। तभी मेरी उपस्थिति की सार्थकता है, इस विशाल संस्था की उपयोगिता है और मानव जीवन की भी परिपूर्णता है। मेरे जीवन का प्रत्येक क्षण और रक्त की प्रत्येक बूंद इस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति के लिये समर्पित है।

●●●

श्रीमाली जी, गृहस्थ में रहते हुए भी पूर्ण योगी है, शान्त एवं सरल दिखाई देते हुए भी अद्वितीय विद्वान हैं, साधारण रूप में दिखाई देते हुए भी वे मंत्र तंत्र के क्षेत्र की उच्चतम कोटि में है, ज्योतिष के क्षेत्र में अप्रतिम है, जिनकी प्रत्येक पंक्ति अधिकारिक मानी जाती है, इस युग में इनके समान व्यक्तित्व अन्यत्र मिलना संभव ही नहीं है... यह हमारा ही दुर्भाग्य है कि हम उनके भीतर न झांक सके, पहिचान न सके.... वे तो युग दृष्टा हैं......

सखि! फिर वसन्त आया

इक्कीस अप्रैल को

पूज्य गुरुदेव के जन्मदिवस के रूप में

लेखिका निकिता श्रीवास्तव

बसंत का पहला फूल खिला है अभी तो, फिर असंख्य फूल भी खिलेंगे। पुकार दे दी गयी है, यह सुनेंगे वो जिनके हृदय में टंकार होगी, और जिन्हें सुनाई पड़ा वे आने भी लगे, बहुत से आने को हैं। छोटी घटना नहीं है यह एक पुष्प के पराग बिखेरेंगे, बगिया को आलिंगन बद्ध करने के लिये, हृदय में भी चिंगारी भड़केगी, एक शोला सा उठेगा, पूरी धरा के तिमिर को चीरने के लिये।

कला सीखनी है, श्रवण करने की, कानों से नहीं क्योंकि पुकार तो मौन है, हृदय से, वही बगावत कर सकता है, सात समन्दर भी लांघ सकता है, खोना जानता है, वह और धन्य हैं वे जिन्होंने अपने हृदय में कुछ होते देखा, इस नेह निमंत्रण को अहसास किया, क्योंकि प्रभु को पाने के अधिकारी वे ही हैं। परमात्मा को उतार लेते हैं अपने भीतर वे, आनन्द की अतुल गहराइयों में उतर जाते हैं वे।

और इसी आनन्द का बहाना ही तो है यह २१ अप्रैल, जब एक साकार प्रकट हुआ, जिसकी उपस्थिति में लाखों धन्य हुए, यह युग धन्य हुआ, एक उत्सव का अवतरण हुआ, एक अनूठा सुमन खिला, जो प्रतिपल आकाश से गलबहियां डाले, अठखेलियां कर रहा है।

और प्रभु को चीन्हना है यदि, परमात्मा की तलाश है अगर, तो मनाना ही पड़ेगा यह उत्सव, यही तो सेतु है धरा के फूल और आकाश के सितारों के मध्य, यही तो संगम है, व्यष्टि और समष्टि के मध्य, यही तो रासलीला है जन्म और अजन्मा के मध्य, जहां आंसू भी हों तो आनन्द के, पीड़ा भी हो तो उसके विरह की।

देखा है कभी प्रकृति को। उत्सव ही उत्सव है। क्या पक्षी, क्या वृक्ष, क्या पर्वत, और क्या सागर हर ओर थिरकते हुए नाद में, नाद ही नाद है, पकड़ना है इस मधुर नाद को रसमय होकर, विमुग्ध होकर झंकृत करनी है हृदय की वीणा, प्रेम के साज से, विरह के आंसुओं से।

और जब अंदर ऐसी अपूर्व घटना घट जाती है, एक प्यास प्रज्वलित हो जाती है। शिष्य स्वयं एक विराट प्यास बन जाता है-एक उत्तप्त अग्नि, जब प्राण प्रभु मिलन की आकांक्षा से आतुर हो उठते हैं, भीतर एक शून्य का उदय होता है, शून्य बना नहीं कि परमात्मा के शीतल मेघ स्वतः उसकी ओर चल देते हैं, उसके रस की फिर एक बूंद ही डुबोने के लिये पर्याप्त है सदा के लिये। पर यह पहली बूंद ही कठिन है, फिर तो सिलसिला ही शुरू हो जाता है।

और एक नहीं, अनगिनत बूंदे बरसेंगी इस २१ अप्रैल को। सखी री! देख तो सही, यह प्रेम रस क्या है? यह दीवानगी

-मैं तो झोंका हूं वसन्त का प्रसन्नता, आह्लाद और उत्साह का उमंग जोश और नवीनता का
-और यह सब कुछ तुम्हारे सुप्त प्राणों में भर देना चाहता हूं
-और वह वायदा पूरा कर देना चाहता हूं जो कई जन्मों पहले तुमसे किया था
-कि तुम्हारे सारे दुःख दर्द, दैन्य अभाव विषमता और कष्ट मिटाकर पूर्णता दूंगा
-और इसी वायदे को निभाने के लिये मैं वसन्त के रूप में इस धरती पर आया हूं और आवाज दे रहा हूं, तुम्हें अपने पास बुलाने के लिये
-कि जिससे मेरे द्वारा किया गया वायदा पूरा हो सके।

-"गुरु-सूत्र" से

माता जी के साथ : पूज्य गुरुदेव

प्रश्न की खोज आज तक नहीं कर पाया कोई। क्यों आए? कैसे आए?

प्रभु के समक्ष नासमझ होने में कैसा आनन्द है, यह तो वे ही जानते हैं, जिन्होंने इसे चखा है। एक मासूम बालक बनो तुम भी, और फिर वह ऐसा बरसेगा कि रसराज सावन भी क्या बरसेगा।

शाश्वत नाते जुड़ेंगे पर पर्व पर। जो कुछ भी घटेगा समय के पार होगा। जो कुछ भी होगा आत्माओं के बीच ही होगा, यह तो प्रेम सगाई है कोई साधारण मधुमास नहीं, हर चाह पूरी करेंगे प्रभु। उनकी ही बगिया के ही फूल हैं हम चाहें गुलाब के हो चाहें चंपा के, कमल के या जूही के, खिलेंगे तो पूर्णता के साथ, प्रेम में क्या कंजूसी? एक यही तो उदार है, सुगंध बिखेरने में, विराटता को दिखाने में, बसंत को खिलाने में।

सचमुच बड़ी ही दुर्लभ क्रांति है यह सद्गुरु। प्रथम मिलन में ही धड़कने चुरा लेता है, हृदय फिर उसी के पास रह जाता है। आत्मा के इस परिणय में न समय की कोई दूरी रहती है। न स्थान की। बस एक बार उसके मंदिर में प्रवेश कर पाओ फिर तो प्रेम भी बहुत पीछे छूट जाता है, रंग जाते हैं प्राण उसी के रंग में, भीग जाता है तन मन उसकी अमृत वर्षा में।

प्रेमियों की मधुशाला है यह पर्व, पागलों की बस्ती है यह महोत्सव, जहां भावना के पुजारी अश्रुओं का हार अर्पण करेंगे, अनहद नाद में डूबा हर दिल झूमेगा, ब्रह्म ऊर्जा के वर्तुल चेतना के महासागर के साहिल को पार कर पाएंगे। दिव्य मंत्रों का संगीत मुग्ध कर देगा और साधना की तेजस्विता रच बस जाएगी शिष्य के पोर-पोर में।

का आलम क्या है? अलमस्त हुए शिष्यों की थिरकन का राज क्या है? एक बार पागल होने की हिम्मत तो जुटा। अब तो अपने नयन अश्रुओं से पुकार तो सही, अपने हृदय से प्यास से और कर देंगे वह तुझे मस्त-

कर दिया साकी ने मुझे यूं आज अलमस्त।
कुछ होश ही न रहा राजे मुहब्बत क्या है?

कोयल का गीत सुना तुमने। वह गा सकती है क्योंकि उड़ भी सकती है-नील गगन समक्ष ही है, तुम्हारे समक्ष भी। पर तुम्हारा गीत कहां गया? नृत्य भी खो गया। उदासी का पत्थर भी बचा है सीने पर। जिस दिन भी तुम खुले आकाश में उड़ पाओगे उस दिन नृत्य उत्पन्न होगा, प्रभु निकट ही होंगे तुम्हारी, होठों पर गीत थिरकेंगे तुम्हारे।

और इसी अहोभाव के गीत का उत्पन्न होना है यह जन्म दिवस। जब स्वप्नों की दुनियां का एक रंग बन सकोगे तुम। जब तुम्हारा पूरा अस्तित्व, तन मन प्राण इस अहोभाव को प्रकट कर सकेंगे, जब पक्षी के गीत से तुम्हारे हृदय में भी धुन गूंजेगी।

पर कहीं विस्मृति न हो जाए, संसार वृक्ष पर बैठकर घर मत बना लेना तुम। सुरती बनी ही रहे, गीत गाने की, आत्मा की भनक पाने के लिये, दुःस्वप्नों की बेड़ियों को तोड़ने के लिये, परम स्वतंत्रता को अनुभव करने के लिये, सद्गुरु के प्रसाद को आत्मसात करने के लिये।

सच कहूं तो तो विछोह हुआ ही नहीं है, हुआ है तो मात्र विस्मरण, प्रभु तो भीतर ही विराजते हैं, धड़कनों में ही स्पन्दित होते हैं, श्वासों में ही महकते हैं। क्या सागर से पृथक लहरों का अस्तित्व संभव है? पर लहर तो एक भ्रांति में ही जी रही है। मुझे सागर को खोजना है, उस तक पहुंचना है। वह मिलना भी चाहती है पर स्वयं को बनाए रखकर।

इसी सुरति का चांद खिलाने आया है यह जन्मदिवस, इस क्षण को ही तो पकड़ना है, इस अमृत को ही तो चखना है, फिर तो सब कुछ बदल जायेगा। बेजान मुरलिया में प्राणों की गूंज उठेगी, एक अपार्थिव संगीत उभरेगा और इस ज्योतिर्मय मिलन यामिनी में सितारे भी गुनगुनाते हुए वैश्विक उत्सव मनाएंगे।

प्रभु के प्रेम में पोर-पोर तक भीगी हुई कई गुलाब की पंखुड़ियां मिलेंगी यहां। नाम के पर्दे का झीना घूंघट उठाओ तो प्रेम दीवानी कई राधाएं, कई मीराएं मिलेंगी यहां, पूछो तो कहेंगी, कच्ची डोर से बंधी चली आईं हम सब। इस मूल

और फिर फिजां में एक सनसनाहट, एक सरसराहट सी फैलेगी, प्राणों के सितार बज उठेंगे, मन की मुरलिया पर प्रभु के शब्द गुंजरित होंगे, चित्त की वीणा स्वत: ध्वनित हो उठेगी और कदम उठ पड़ेंगे थिरकते हुए, नृत्य करते हुए, इठलाते हुए, मस्ती को छलकाते हुए, हजारों इन्द्रधनुष खिल जायेंगे, इन तीन दिनों में नहीं तीन कल्पों में।

पर प्रभु के इस संदेश को पकड़ना सत्य के मार्ग पर मिटना होगा। मिटना इसलिये कि अंधेरे के पक्षपाती मिटाने को आतुर होंगे, घूंघट उठाने की कीमत तो अदा करनी ही पड़ेगी। पर यह मिटना ही हमारी जीत होगी, कीमत होगी प्रभु को चीन्हने की, जिसमें तिल तिल कर जलना होगा, रोम-रोम प्यासा होगा, हर धड़कन बुलाएगी उसे, अभीप्सा ही खास बन चुकेगी, तभी यह मिलन होगा, तभी वह मुस्कराहट खिलेगी, यह अलमस्ती बिखरेगी और यह मस्ती ही प्रभु की जीवंत उपस्थिति का प्रमाण होगी।

आओ तलाश करें काली निशा में स्वर्ण विहान की, कांटों में गुलाब की, मेघों में पूनम के चांद की, धूल में छिपे उस कोहिनूर की जो भीतर ही प्रसुप्त है। और यह तलाश यूं ही होगी इस पर्व पर। नहीं महारास! मात्र उत्सव नहीं, महोत्सव! जीवन का उत्सव! नृत्य का उत्सव!

इस सुवासित उपवन में, सदाबहार मौसम में चैतन्यता के बसंत में निमंत्रण है। एक तैयारी है जीवन के सौन्दर्य बोध की, आनन्द को अंगीकार करने की, तो प्रिय स्वागत है तुम्हारा बुलाता है तुम्हें द्वार खुले हैं तीव्र निमंत्रण के साथ।

जिनके मन में तनिक भी प्रेम है, हृदय में थोड़ी भी अकुलाहट है, जीवन को बदलने की प्यास है, उन्हें

अहोभाव महोत्सव में झूमते हुए साधक

कुछ करना है, अभी करना है, पहले ही बहुत देर हो गयी है।

और करना ही क्या है? बहना ही तो है हरहराती नदी की तरह, मंथर गति से नहीं छटपटाहट के साथ, वेग के साथ, किनारों को तोड़ते हुए, रुकावटों को पार करते हुए। तैयारी ही तो करनी है-उस महायात्रा की-गुरु शिष्य के अनूठे मिलन की, पंख ही तो पसारने हैं उस अनंत नील गगन में-

और फिर उत्सव हो जायेगा, संगीत और नृत्य से भरा, मस्ती और खिलखिलाहट से भरा, धरा की गोद भर जाएगी, नम कलियों से, उस मस्ती में व्यक्ति का शरीर मन आत्मा समाविष्ट हो जाएंगें, खंड विलीन हो जायेगा, खंडित व्यक्तित्व भी न बचेगा। प्रभु की दिव्यता की आंच में पिघल उठेगा रोम-रोम, सृजन की एक नयी पौध उगेगी। और बासंती सुषमा खिल उठेगी एक नये मानव में।

चलो भाव के उस अनूठे लोक में, मतवालों की जमात एकत्र होना शुरू हो गई है, साथ मिलकर नाचेंगे। ●

शिविर स्थल

सरस्वती घाट
मिन्टो पार्क के पास
इलाहाबाद (उ.प्र.)

यह अहोभाव महोत्सव इस वर्ष तीर्थराज (इलाहाबाद) उ.प्र. में सम्पन्न होगा, इस बार इक्कीस अप्रैल का महोत्सव संगम तट पर अद्वितीय रूप से मनाया जायेगा।

सम्पर्क

एस.पी. बांगड़
१०० एच.आई.जी.
प्रीतम नगर,
इलाहाबाद
फोन : ६३३५९०

राज कुमार वैश्य
९४ ए/१३, राजीव नगर
शुतुर खाना, इलाहाबाद

एस.के. मिश्रा
२२, साउथ मलाका
इलाहाबाद

मनुआ ! मन की आंखें खोल

यह पंक्ति अनजान नहीं है हमारे लिये। अपनी दो आंखों से तो हम केवल वर्तमान ही देख पाते हैं। लेकिन मन की आंखों से अनजाने भविष्य और अंधकार के गर्त में पड़े भूत को भी देख पाते हैं। मन की आंखें और कुछ नहीं हमारा "तीसरा-नेत्र" ही है जिसे हम आप सभी इसी जीवन में इसी धरती पर रहते हुए खोल सकते हैं। धैर्यपूर्वक प्रयत्न करने की क्षमता आप में हो तो असाधारण बनने के अपने दिवा-स्वप्न को आप प्रस्तुत प्रक्रिया के माध्यम से साकार कर सकते हैं......

भगवान शिव को "त्रिनेत्र" कहा गया है। यह तीसरा नेत्र आंतरिक नेत्र या ज्ञान चक्षु कहा जाता है, जिससे न केवल भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान होता है वरन उन गुप्त रहस्यों का भी पता चलता है जो चर्म चक्षुओं से ज्ञात होना असंभव है। यह तीसरा नेत्र प्रत्येक मानव शरीर में विद्यमान रहता है, और योगीजन इसी नेत्र को खोलकर सही अर्थों में त्रिकालज्ञ बन जाते हैं।

आज्ञा चक्र ही तीसरा नेत्र

संसार में जितनी शक्तियाँ हैं वे सभी शक्तियां व्यष्टि रूप से मनुष्य में जीवनी शक्ति है, और इन प्राण शक्तियों के केंद्रीय भूत स्वरूप को कुण्डलिनी शक्ति कहा गया है। मानव शरीर की समस्त शक्ति, गतिशीलता और क्रियाशीलता का आधार यही कुण्डलिनी शक्ति है। कुछ विशेष प्रक्रियाओं द्वारा जब यह शक्ति जागृत होकर ऊर्ध्वमुखी होती है तो सूक्ष्म शरीर स्थित षट् चक्रों का भेदन करती हुई आज्ञा चक्र तक पहुंचती है। आज्ञाचक्र की स्थिति भ्रूमध्य के भीतर मानी गई है। इस चक्र के जाग्रत होते ही साधक त्रिकालज्ञ हो जाता है, और अपने स्थान पर बैठा-बैठा ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की हलचल को अनुभव करने लगता है। अतः इसी आज्ञाचक्र को ही "तीसरा नेत्र" या "थर्ड-आई" भी कहा गया है।

सामान्य मनुष्यों का तीसरा नेत्र अधिकतर बंद रहता है, क्योंकि हम कभी भी उसको खोलने का प्रयत्न नहीं करते, पिछले सैकड़ों वर्षों से हमने यह प्रक्रिया बन्द कर दी है। जिसकी वजह से हमारी यह ग्रंथि एक प्रकार से सुप्त हो गई है, यदि हम शरीर के किसी अंग विशेष का उपयोग कुछ वर्षों के लिये न करें तो वह अंग कमजोर होकर निष्क्रिय हो जाता है और बाद में हम प्रयत्न करके भी उस अंग का उपयोग नहीं कर पाते, उदाहरण के लिये कुछ हठयोगी अपने दाहिने हाथ को आकाश की तरफ उठाये रहते हैं, और साल, दो साल बाद वह

> ***आज्ञाचक्र या तीसरी आंख के जाग्रत होते ही व्यक्ति अतीन्द्रिय शक्ति सम्पन्न हो जाता है, क्योंकि इस समय योगी के शरीर स्थित ईथर का संबंध पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त ईथर से हो जाता है, फलस्वरूप वह पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं पर भी होने वाली घटना को बखूबी देख समझ सकता है, और इच्छानुसार उसमें हस्तक्षेप भी कर सकता है......***

हाथ ठूंठ की तरह हो जाता है, बाद में प्रयत्न करने पर भी वह हाथ वापस नीचे नहीं आ पाता।

हमारे पूर्वजों को भूत-भविष्य का ज्ञान रहता था, क्योंकि उनका तीसरा नेत्र खुला हुआ था, बाद में धीरे-धीरे हमने इस ग्रंथि का उपयोग करना बंद कर दिया, सैकड़ों वर्षों पूर्व व्यक्ति अपनी इच्छा से अपने कान हिला सकता था परंतु उसे इसकी आवश्यकता नहीं थी, अत: उसने कान हिलाना बंद कर दिया, फलस्वरूप वह ग्रंथि निष्क्रिय हो गई और आज हम चाहते हुए भी अपने कान को नहीं हिला सकते, ठीक यही स्थिति हमारे तीसरे नेत्र की हुई, हमने उस ग्रंथि का उपयोग करना सैकड़ों वर्षों से छोड़ दिया, फलस्वरूप वह निष्क्रिय सी हो गई, पर यदि हम प्रयत्न करें और उस ग्रंथि को उत्तेजना दें तो निश्चय ही वह सक्रिय हो सकती है, और सक्रिय होते ही उसके माध्यम से भूत और भविष्य को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

यही नहीं अपितु यदि किसी व्यक्ति की यह ग्रंथि सक्रिय हो जाती है, तो उसकी आने वाली पीढ़ी की भी वह ग्रंथि सक्रिय रहेगी और उसमें स्वत: ही भूत और भविष्य को देखने की क्षमता पैदा हो जायेगी।

जिस प्रकार से हम इन दोनों आंखों से सामने स्थित घटना या पदार्थ को देख सकते हैं, ठीक उसी प्रकार से तीसरे नेत्र या ग्रंथि से, जो स्थान और काल से परे है, कहीं पर भी घटित होने वाली घटना को देख सकते हैं, इतना ही नहीं, कई वर्षों बाद की घटनाओं को वर्तमान क्षण में देख सकते है।

गोपनीय प्रक्रिया

यह प्रक्रिया कठिन नहीं है, यद्यपि यह गोपनीय अवश्य रही है, योगी लोग एक विशेष विधि से इस ग्रंथि को उत्तेजित और सक्रिय कर देते हैं, फलस्वरूप यह ग्रंथि काम करने लग जाती है, और इस प्रकार से वे सही रूप में दिव्य चक्षु सम्पन्न बन जाते हैं।

कल्पना करें यदि आप तीसरी आंख खोलकर किसी स्त्री के भूतकाल के रहस्यों को जान लें तो कितनी बड़ी हलचल हो सकती है, यदि सामने वाले व्यापारी का इरादा जान लें तो कितने बड़े धोखे से बचा जा सकता है। इतना ही नहीं वरन आप दूसरे राष्ट्र की योजनाओं का पता भी आसानी से लगा सकते हैं, और अपनी मातृभूमि की सुरक्षा में अमूल्य योगदान दे सकते हैं।

इसके लिये यदि साधक चाहें तो अपना तीसरा नेत्र खोलने के लिये प्रयत्न कर सकते हैं, मेरे कई शिष्यों को इसमें सफलता मिली है, नीचे जो विधि बतलाई गई है वह अपने आप में अनुभूत और प्रामाणिक है।

सर्व प्रथम साधक को ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पद्मासन में बैठ जाना चाहिए। अब उसे अपनी दोनों आंखें खोलकर नाक के अग्र भाग को देखने का प्रयत्न करना चाहिए। उसके लिये नाक के अग्रभाग पर कोई छोटा सा लाल बिन्दु लगाकर उसे दोनों आंखों से देखने का अभ्यास करना चाहिए। जब यह बिन्दु स्पष्ट दिखाई देने लग जाये तब दूसरे चरण में भृकुटि के मध्य में एक लाल बिन्दु लगाकर अपनी दोनों आंखों से देखने का अभ्यास करना चाहिए।

जब यह बिन्दु दिखाई देने लगे तब साधक को अपने नेत्रों को बंद कर लेना चाहिए। इसके बाद मुंह के अंदर जीभ को उलटकर तालू की ओर चढ़ा लेना चाहिए, फिर ध्यान को दोनों भौंहों के मिलन बिन्दु अर्थात् नाक की जड़ से दो अंगुली ऊपर जमाना चाहिए।

साधक को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसे अपना ध्यान सिर के बाहरी भाग पर न कर बल्कि भीतरी भाग पर केंद्रित करना चाहिए। ध्यान के समय निम्न लिखित मंत्र का लगातार मानसिक जप "त्रि नैत्र यंत्र" के सामने करना चाहिए।

मंत्र

"ॐ हुं तेजसे फट्"

इस प्रकार सतत् अभ्यास करने से तीसरे नेत्र से संबंधित ग्रंथि उत्तेजित हो जाती है, और कुछ समय बाद ही वह सक्रिय हो जाती है, इसके बाद साधक को किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसका भूत और भविष्य उसकी आंखों के सामने साकार हो जाता है, उसको संसार में किसी भी स्थान पर घटित होने वाली घटना साफ दिखाई देने लग जाती है, उसका मन एकाग्र हो जाता है, और स्वास्थ्य उत्तम रहने के साथ-साथ देव-दर्शन प्राप्त होने लग जाते हैं।

वस्तुत: यह साधना अत्यंत सरल होते हुए भी कठिन है, इसके लिये साधकों को असीम धैर्य से सतत् अभ्यास करते रहना चाहिए। तभी उन्हें सफलता प्राप्त होती है, और वे दिव्य चक्षु सम्पन्न हो पाते हैं।

मंत्र संस्कार

मंत्र शब्द का अर्थ है "गुप्त परामर्श"। श्रद्धा का अवलम्ब पाकर जब अक्षर एक गहनता में प्रवेश करता है तो जिस दिव्य ज्योति का आर्विभाव होता है वही सिद्धि की संज्ञा पाती है। मंत्र वास्तव में मनन पूर्वक वर्णोच्चार का घर्षण है जिसके मूल में लय ही सर्वोपरि होती है। पुस्तकों से मंत्र लेकर बिना भाव के उन्हें ज्यों का त्यों दोहरा देना मात्र ही मंत्रोच्चार नहीं होता। यह एक विशद विज्ञान है किंतु मैं प्रस्तुत लेख में इसके एक पक्ष "संस्कार" को स्पष्ट करने का इच्छुक हूं।

भगवान शिव के डमरू निनाद से जिन सात करोड़ मंत्रों का प्रादुर्भाव हुआ वे कालांतर में किसी न किसी दोष से ग्रस्त हो गये। शास्त्रों में ऐसे पचास प्रकार के दोष माने गये हैं। हमारे पूर्वजों ने इनके भी निराकरण के उपाय प्राप्त किये, जो संस्कार कहलाये।

जननं दीपनं पश्चाद् बोधनं ताडनस्तथा।
अभिषेको विमलीकरण प्यायने पुनः।
जीवनं तर्पणं गुत्रिर्दशैता मंत्रसांस्क्रिया।

अर्थात् जनन, दीपन, बोधन, ताडन, अभिषेक, विमलीकरण, जीवन, तर्पण, गोपन व आप्यायन यह दस संस्कार हैं जो किसी भी मंत्र को सिद्ध करने से पूर्व आवश्यक हैं।

१. जनन : पूर्व की ओर मुख कर आसन पर शुद्धि पूर्वक बैठने के बाद भोजपत्र पर गोरोचन, कुंकुंम एवं चंदन से आत्माभिमुख त्रिकोण बनायें एवं तीनों कोणों से छः छः रेखायें खींचे। ऐसा करने से ४९ त्रिकोण कोष्ठ बन जायेंगे। फिर ईशान कोण से आरंभ कर एक-एक खाने में एक-एक मात्रका वर्ण लिखना चाहिए। प्रत्येक वर्ण का, देवता का आह्वान करते हुए, पूजन कर उसका उद्धार करना चाहिए एवं उसे अलग से भोजपत्र पर लिखकर मंत्र से संपृक्त भी करना चाहिए। अंत में मंत्र को जल में विसर्जित कर देना चाहिए। इस प्रकार सम्पूर्ण वर्णो को लेकर करने से प्रथम संस्कार संपन्न होता है।

२. दीपन : इस संस्कार हेतु "हंस" मंत्र से मूल को सम्पुटित कर एक हजार जप करना आवश्यक होता है। यथा. .."हंस शिवाय नमः सो हम्"।

३. बोधन : "हूं" बीज मंत्र से मूल मंत्र को सम्पुटित कर पांच हजार जप करने से मंत्र का बोधन हो जाता है। यथा-"हूं शिवाय नमः हूं।"

४. ताड़न : "फट्" मंत्र से मूल मंत्र को सम्पुटित कर एक हजार जप करने का उसका चतुर्थ संस्कार ताड़न हो जाता है। यथा-"फट् शिवाय नमः फट्।"

५. अभिषेक इस संस्कार हेतु भोजपत्र पर मूल मंत्र लिखना चाहिए तदुरांत एक हजार बार "ह्रौं हंसः ओं" मंत्र से अभिमंत्रित जल को लेकर, पीपल के पत्ते द्वारा मूल मंत्र का अभिषेक करने पर अभिषेक संस्कार सम्पन्न होता है।

६. विमलीकरण : "ॐ त्रों वषट्" इन वर्ण से सम्पुटित करते हुए मूल मंत्र का एक हजार जप करने से "विमलीकरण" नामक संस्कार सम्पन्न होता है। यथा-"ॐ त्रों वषट् शिवाय नमः वषट् त्रों ॐ।"

७. जीवन : "स्वधा वषट्" सम्पुटित मूल मंत्र का एक हजार जप करने से "जीवन" नामक सातवां संस्कार संपन्न होता है। यथा- "स्वधा वषट् शिवाय नमः वषट् स्वधा।"

८. तर्पण : दूध जल तथा घी को मिलाकर मूल मंत्र से सौ बार तर्पण करना ही उस मंत्र का तर्पण संस्कार होता है।

९. गोपन : "ह्रीं" बीज का सम्पुट देकर मूल मंत्र का एक हजार जप करना उसका नवम संस्कार होता है। यथा-"ह्रीं शिवाय नमः ह्रीं।"

१०. आप्यायन : "ह्रौं" बीज का सम्पुट देकर मूल मंत्र का एक हजार जप करने से उसका अंतिम व महत्वपूर्ण "आप्यायन संस्कार" सम्पन्न होता है। यथा-"ह्रौं शिवाय नमः ह्रौं।"

इस प्रकार प्रयत्नपूर्वक मूल मंत्र का संस्कार कर फिर उसका जप करें तो अभीष्ट सफलता अधिक सरलता से मिलती है। उपरोक्त संस्कार विधान के अतिरिक्त कूर्मचक्र विचार, कुल्लुका विचार, मंत्रों का कीलन-उत्कीलन, मंत्र सिद्धि के विभिन्न उपाय-आदि कई ऐसे तथ्य हैं जिनका यदि साधक प्रारंभ में विचार कर अनुष्ठान करे तो उसे अपेक्षाकृत कम समय व कम परिश्रम में ही सिद्धि प्राप्त होने की संभावना बढ़ जाती है। ●

"हल्ट हकीक" पर मेरे सिद्ध सफल सिद्ध प्रयोग

मैंने अपने जीवन में जो अनुभव किया है, और जितनी बार भी इन प्रयोगों को आजमाया है, ये अपनी कसौटी पर खरे उतरे हैं, इन्हीं अनुभवों को इस पृष्ठ पर पाठकों को.....

- यदि हल्ट हकीक को, रविवार के दिन लाल कपड़े पर शत्रु का नाम लिखकर, उसमें इस हल्ट हकीक को बांध कर जमीन में गाड़ दें, तो उसी दिन से शत्रु परेशान होने लगता है।
- यदि हल्ट हकीक बुधवार को प्रातः साढ़े सात बजे से नौ बजे के बीच दुकान में जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां रख दें, तो धन-वृद्धि होती है।
- शुक्रवार को दो हल्ट हकीक दुकान की चौखट पर बांध दें, तो ग्राहकों की संख्या में वृद्धि होती है तथा व्यापार दिन दूना चौगुना बढ़ता है।
- यदि शनिवार को हल्ट हकीक अपने परिवार के लोगों पर घुमाकर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें, तो घर के झगड़े तथा मन मुटाव दूर हो जाते हैं।
- यदि संतान नहीं हो रही हो, या लड़कियां ही हो रही हों, या बार-बार गर्भ-पतन होता है तो पांच हल्ट हकीक कमर पर बांध दें, तो उपरोक्त सारी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं।
- यदि तीन हल्ट हकीक जेब में रखकर कोर्ट-कचहरी या कहीं पर भी जावे, तो उस दिन उसके सारे कार्य उसकी इच्छा के अनुरूप ही होते हैं।
- यदि शत्रु परेशान कर रहा हो तो हल्ट हकीक पर उसका नाम लिखकर रात को दक्षिण दिशा की ओर फेंक, दें तो शत्रु बरबाद हो जाता है।
- घर में बीमार व्यक्ति पर दो हल्ट हकीक घुमाकर चौराहे पर डाल दे, तो उसकी बीमारी उसी दिन से समाप्त होने लगती है।
- हल्ट हकीक पर प्रेमी या प्रेमिका का नाम लिखकर उसे लाल कपड़े में बांध कर घर में किसी स्थान पर रख दें, तो उस पर वशीकरण हो जाता है।
- इसको तो कई बार आज़माया है, कि तीन हल्ट हकीक किसी कपड़े में बांध कर प्रेमी या प्रेमिका के घर में किसी प्रकार डाल दे या रख दे तो जिसके घर में रखा जाता है, वह उसी दिन से वश में होने लगती है।
- यदि घर से कोई गुम हो गया हो तो एक हल्ट हकीक रविवार की रात अपने सिरहाने रख कर सो जाय, तो स्वप्न में यह ज्ञात हो जाता है, कि वह गुम हुआ व्यक्ति कहाँ पर तथा किस अवस्था में है।
- यदि गर्भिणी स्त्री एक हल्ट हकीक कमर पर बांध दे तो सुख से प्रसव होता है।
- विद्यार्थी के लिये तो हल्ट हकीक उपयोगी है, वह एक हल्ट हकीक किसी ताबीज में भरकर गले में पहिन ले तो परीक्षा में पास होता है।
- यदि पूजा स्थान में दो हल्ट हकीक रहे तो घर में निरन्तर आर्थिक उन्नति होती रहती है।
- यदि रोगी के पलंग के पाये पर हल्ट हकीक बांध दें, तो रोगी उसी क्षण से रोग मुक्त होने लगता है।

जिनकी नेत्र-ज्वाला से

शत्रु

बेहोश होकर गिर पड़ता था

मैं एक सन्यासी हूं और जिस घटना का वर्णन करने जा रहा हूं वह मेरे युवावस्था के काल की है। मैं कदाचित किन्हीं पूर्व संस्कारों की प्रेरणा से किशोरावस्था समाप्त होते होते घर छोड़कर यायावरी जीवन अपना चुका था। मेरे सामने कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं था। मैं क्यों सन्यस्त हुआ, किन मूल्यों के लिये सन्यस्त हुआ- इसका भी कोई बोध नहीं था। ये बोध कराता भी कौन? मुझे मेरे जैसे ही भगवा वस्त्र धारी तो बहुत से मिले किन्तु तृप्ति देने वाला कोई नहीं मिला। यह तो मैं जीवन के मध्य काल में जब मुझे मेरे पूज्य सद्गुरुदेव मिले, तब समझ सका। यह विषयानन्तर होगा क्योंकि मैं अपने सन्यास जीवन का वर्णन न करके आप को एक ऐसी घटना बताना चाहता हूं जिसने मुझे युवा अवस्था में चमत्कृत कर दिया था। साथ ही साथ साधना के प्रति एक नवीन चेतना भी प्रदान की थी।

मैं निरंतर विचरण करता हुआ एक बार मध्य प्रदेश की रियासत दतिया की ओर निकल गया था वहां के राज गुरु जो स्वामी तेजसानन्द जी के रूप में विख्यात थे, उनके दर्शन करने का भी मेरा मानस था। मैंने उनके विषय में बहुत कुछ सुन रखा था कि वे यथा नाम तथा गुण हैं, और उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व से विशेष रूप से दोनों नेत्रों से तेज के कारण ज्वाला सी प्रवाहित होती रहती है। उनके अभय के तले दतिया राज्य उस समय निरापद राज्य था और साधना के लिये उपयुक्त स्थान समझ कर मैं उधर बढ़ गया। मैंने दतिया पहुंचने पर सहज ही उनका आश्रम प्राप्त कर लिया क्योंकि वह अपने तेज एवं राज गुरु पद पर आसीन होने के कारण जन सामान्य में अत्यंत लोकप्रिय और वन्दनीय थे। उनका आश्रम कोलाहल से दूर स्थानीय नदी के किनारे स्थित था। जहां वे अपने चुने हुए शिष्यों के साथ निवास कर रहे थे। उनका स्वरूप अत्यंत शांत एवं भव्य था। विशाल मस्तक, चौड़ा सीना आजानुबाहु, तीखी नासिका श्वेत केश एवं प्रायः श्वेत हो चली लम्बी दाढ़ी से आच्छादित सिंह सदृश्य अलौकिक मुख मुद्रा। सम्पूर्ण रूप से वे आर्य ही थे, और सबसे अधिक विशेषता तो उनके

भयंकर अघोरी तांत्रिक सामने खड़ा था और मुंह से अजस्त्र गालियों की बौछार.... स्वामी तेजसानन्द ने एक बार....सिर्फ एक बार "ज्वालामालिनी मंत्र" उच्चरित कर उसकी ओर देखा...और वह बलिष्ठ तांत्रिक दूसरे ही क्षण बेहोश होकर धरती सूंघ रहा था....

दृग युग्मों में थी जो तेज की अधिकता से रक्तिम से हो गये थे। यद्यपि उनका अन्त:करण अत्यंत ही मृदु था किन्तु उनके पास खड़े होने से और उनकी ओर गलती से भी देख लेने पर शरीर सिहर सा उठता था।

मैंने उनके श्री चरणों में प्रणाम ज्ञापित कर अपना परिचय दिया एवं बताया कि मेरी इच्छा है कि मैं कुछ दिन आपके सान्निध्य में व्यतीत करूं। यद्यपि उस समय तक मेरा स्पष्ट मानस नहीं था कि मैं उनकी इस विद्या को सीखूंगा ही जिससे उनके नेत्रों में तेज की अधिकता आयी है क्योंकि मेरी रुचि तीक्ष्ण साधनाओं में नहीं थी। उन्होंने कुछ प्रश्न करने के बाद एवं अपने ढंग से संतुष्ट होने के बाद अनुमति दे दी। कि मैं उनके सान्निध्य में रह सकता हूं। लगभग छ: माह का समय हो गया और मैं उनके आश्रम की गति विधियों से जुड़ कर अपने ढंग से अपनी साधना में व्यस्त रहा। उन्होंने भी मुझसे कोई जिज्ञासा या अपनी ओर से कोई विद्या प्रदान करने का आग्रह नहीं किया। दिन बीतते-बीतते यह अवश्य हो गया था कि मेरा और पूज्य स्वामी जी का परस्पर मधुर संबंध बन गया था।

कुछ दिनों पश्चात् एक दिन मेरी ही अवस्था का एक साधु आश्रम में आया जिसके चेहरे से उद्दंडता एवं अहंमन्यता झलक रहीं थी। भोंडे गर्व से उसकी गर्दन टेढ़ी हो गई थी और चेहरे की लालिमा भी घिनौनी लग रही थी। स्पष्ट लग रहा था कि वह कोई टुच्ची सी सिद्धि पा गया है। जिसे पचा नहीं पा रहा है। उसने आते ही भद्दे ढंग से पूज्य स्वामी जी के नाम का उच्चारण कर जानना चाहा कि क्या वे यहीं रहते हैं। हम लोगों द्वारा हामी भरने पर उसने चुनौती के स्वर में बोलना प्रारंभ कर दिया, और बताने लगा कि उसे क्या सिद्ध है और वह क्या कर सकता है, वह कैसे कर सकता है वगैरह-वगैरह। एक प्रकार से वह स्वामी तेजसानंद जी की परीक्षा लेने ही आया था। हम लोग उसे जबाब देने की सोच ही रहे थे कि तब तक स्वामी जी भी कोलाहल सुन बाहर आ गये और वह उन्हें सामने पाकर और ओछेपन से अपमान जनक वाक्य बोलने लगा। जब वह कुछ देर शांत नहीं हुआ और कुछ करने पर

उतारू सा ही हो गया तब तक मुझे भली-भांति याद है कि स्वामी जी का चेहरा पल भर के लिये लाल भभूका हुआ, वह अस्फुट सा बुदबुदाए एवं मैंने स्पष्ट देखा कि उनके दर्प युक्त नेत्रों से कोई कौंध सी निकली कौंध का निकलना था कि वो आगन्तुक पल भर के लिये तो चकराया और हैरत से उनकी ओर देखता हुआ एक दम से ढेर हो गया, उसके ओठों के किनारों से खून का प्रवाह निकल पड़ा था। हम सभी भी उनके इस रूप को देखकर सहम कर पीछे हट गए।

लगभग चौबीस घंटे बीतने के बाद जब हम सब कुछ सामान्य हुए तब हमारे बीच में से उनके प्रिय शिष्य ने सहमते हुए उनके कक्ष में जाकर निवेदन किया वे उसे इतना कड़ा दंड न दें। उन्होंने कहा कि यदि कड़ा दंड देते तो वह अब तक जीवित ही नहीं रह सकता था, यह तो मात्र एक चेतावनी थी। क्योंकि वह दुष्ट उनके किसी एक शिष्य पर वार करके प्रदर्शन करने का इच्छुक हो चुका था। उन्होंने पास जाकर कुछ गोपनीय क्रियाएं कीं और वह तथा कथित तांत्रिक मानो नींद तोड़कर उठा। उसका घमंड, उसका शरीर सब चकनाचूर हो गया था। वह बिना एक शब्द बोले वहां से लड़खड़ाता हुआ दूर निकल गया।

इस घटना के एक दो दिन बाद स्वामी जी ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा कि मैं विगत दिनों से तुम्हारे भाव अच्छी तरह पढ़ता रहा हूं किन्तु मैं अवसर की प्रतीक्षा में था कि तुम्हारे सामने स्पष्ट हो सके कि ये सभी तीक्ष्ण विद्याएं भी किस प्रकार से जीवन का एक आवश्यक अंग है। क्योंकि सन्यासी तो मात्र जंगल में हिंसक पशुओं का सामना करता है समाज में तो उनसे भी ज्यादा हिंसक पशु भरे हैं, तुम कैसे आत्म रक्षा करोगे? मैं लज्जित था क्योंकि उनकी इस विद्या को मात्र एक चमत्कारी शक्ति समझा था और कौतूहल से उसको लिया करता था। इसके बाद तो मैंने उनको गुरु मान उनसे दीक्षा ली। पूर्ण मर्यादा के साथ उनका शिष्य बनकर रहा और उन्होंने भी इस विद्या को मुझे पूर्णता से देने में कोई संकोच नहीं किया। फलस्वरूप जहां मैं अपने सन्यस्त जीवन में घने जंगलों में नि:शंक होकर विचरण कर सका वहीं इस समाज में भी कई-कई बार इस विद्या के महत्व को भली भांति परखा है।

आज मैं अपने पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से यह विशिष्ट मंत्र और साधना विधि इन पन्नों पर स्पष्ट कर रहा हूं, जिसे ज्वाला मंत्र अथवा ज्वालामालिनी

स्वामी जी का गोरा चेहरा लाल भभूका हुआ, वे कुछ अस्फुट सा बुदबुदाये एवं मैंने स्पष्ट देखा कि उनके दर्प युक्त नेत्रों से कोई कौंध सी निकली कौंध का निकलना था कि वह आगन्तुक तांत्रिक पल भर के लिये तो चकराया और फिर एक दम से ढेर हो गया।

मंत्र की संज्ञा दी गयी है। इस मंत्र के बीजों में कदाचित कुछ ऐसे विन्यास हैं जो इस शरीर के अन्दर अग्नि तत्व को एक दम धधका कर रख देते हैं। यह मंत्र इस प्रकार है-

ज्वाला मंत्र

ॐ धां धीं धूं धूं धूर्जटे धूं धूं धूं फट्।।

ज्वालामालिनी यंत्र के सामने लाल आसन पर लाल वस्त्र धारण कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर **ज्वालामालिनी माला** से नित्य ग्यारह माला मंत्र जप २१ दिन तक रात्रि में नित्य करे तो यह प्रयोग पूर्ण रूप से सिद्ध होता है।

मुझे विश्वास है कि कुछ योग्य साहसी व समाज कल्याण के इच्छुक साधक अवश्य ही आगे आएंगे और इस विशिष्ट ज्ञान को समझ कर जहां एक ओर लुप्त होती हुई एक विशिष्ट विद्या को संरक्षित करेंगे, वहीं सभी के हित में सहायक भी बनेंगे।

●●●

गुरु : एक मंदिर

आपने आज्ञा दी है, कि मैं नित्य मंदिर में जाऊं? मुझे तो आपका शरीर ही मंदिर दिखाई देता है।

आपके चरण, मंदिर के आधार हैं, पैर के दाहिने अंगूठे में सारे तीर्थ प्रवहित हैं, "पृथिव्यां यानि तीर्थानि, तानि तीर्थानि सागरे। सागरे सर्वतीर्थानि गुरुस्य दक्षिणे पदे" अर्थात् पृथ्वी पर जितने भी तीर्थ हैं, वे सब समुद्र में समाहित होते हैं और वह समुद्र समस्त तीर्थों के साथ आपके दाहिने चरण के अंगूठे में है। दोनों पैर उस मंदिर के स्तंभ हैं, जिस पर यह मंदिर स्थित है, कमर मुख्य मंदिर का पार्श्व है, जिस पर प्रधान मंदिर स्थापित है, आपका वक्षस्थल उस मंदिर के मुख्य भाग का घेरा है, हृदय उस मंदिर का गर्भ गृह है, प्राण उस मंदिर के देवता है। ग्रीवा मंदिर की शिखर-सेतु है, मस्तक उस मंदिर का सर्वोच्च गुम्बद है, जिसे "शिखर" कहा जाता है, आपकी वाणी मंदिर में गुंजरित वेद ध्वनि है, आपके नेत्र मंदिर-सरोवर में खिले हुए कमल हैं, आपका भोजन, भक्तों को प्राप्त होने वाला प्रसाद है, आप स्वयं ही देव हैं, आपका शरीर ही देव मंदिर है, फिर बताइये ऐसे दिव्य मंदिर को छोड़कर और किस देवालय में जाऊं? किस चौखट पर माथा रगड़ूं, किस देवता को ध्याऊं? मेरे लिये तो आपका शरीर ही जीवन्त प्राणवान तेजपुंज मंदिर है।

-शर्मा एनित के पत्र का एक अंश

मंत्र-यथार्थ

जीवनदान

१९८४ का वर्ष जीवन का सौभाग्यपूर्ण वर्ष। पत्रिका परिवार ने इस वर्ष अमरनाथ बाबा के दर्शन करने का प्रायोजन रखा था, इस हिमालय शिविर में अकेले ही भाग लेना चाहता था, पर पता नहीं किस प्रेरणा से मेरी पत्नी नीरू ने भी यात्रा में चलने की हठ ठान ली, और हम दोनों पति पत्नी गुरुदेव के साथ अमरनाथ की यात्रा पर चले।

पंचतरणी से आगे चलकर हम बाबा अमरनाथ मंदिर में पहुंचे, सामने ही बर्फ का विशाल शिवलिंग, हम सभी दर्शन कर धन्य हो गये, पर तभी मेरी पत्नी नीरू को कंपकंपी सी आई और वह बेहोश होकर नीचे गिर पड़ी। मैंने देखा कि उसने आंखे पलट दी, वहां संयोगवश उपस्थित एक डाक्टर ने आंखों की पुतलियां देखी, नाड़ी देखी और कहा- मृत्यु हो चुकी है, हृदय की धड़कन भी पूर्णतः बन्द है।

मैं तो पागल हो गया, भगवान अमरनाथ के दरबार में और गुरु चरणों के पास से मौत मेरी पत्नी को झपट्टा देकर छीन कर ले जाए, ऐसी उम्मीद नहीं थी, मैं अनायास चिल्ला पड़ा बचाओ! बचाओ!! और मेरी उस ध्वनि के साथ सैकड़ों कंठ चिल्ला उठे बचाओ! बचाओ!, साधक ही नहीं अन्य उमड़ती हुई दर्शनार्थियों की भीड़ भी इसी आवाज को दोहराने लगी, डाक्टर हताश और निरुपाय खड़े थे, उन्होंने नकली श्वांस देने की कोशिश की पर व्यर्थ, नीरु तो समाप्त हो गई थी, मैंने डाक्टर की तरफ देखा उसके मुंह से निकला 'फिनिस्ड''।

मेरी अश्रुपूरित आंखें गुरुदेव की तरफ उठीं, लाश के चारों ओर सैकड़ों लोग खड़े थे, मेरे साथ गये लगभग १५० साधक इस घटना के गवाह हैं, दूसरे दो तीन हजार दर्शनार्थियों ने उस लाश को अपनी आंखों से देखा, पर मेरी आंखें आंसुओं से भरी हुई गुरुदेव के चेहरे पर जमी थीं, मैंने देखा वे भाव विह्वल हो रहे थे, वे उसी क्षण मृत नीरू के सिरहाने बिना अपने वस्त्रों की चिन्ता किये बैठ गये और किसी मंत्र को पढ़ने लगे, आंखें आकाश की ओर स्थिर थीं, हम सब चुप, स्तब्ध, मौत और जिन्दगी का संघर्ष देख रहे थे, मन में दुविधा थी, कि नीरू शायद ही मिल सकेगी पर हृदय गुरुदेव के प्रति पूर्ण आस्थावान था, एक मिनट. .... दो मिनट..... पांच मिनट.... दस मिनट.... बीत गये, गुरुदेव का शरीर उस भयंकर शीत में भी पसीने-पसीने था मुंह से अजस्र मंत्रोच्चारण हो रहा था और हम सबने देखा नीरू के शरीर में स्पन्दन हुआ, और उसने अगले ही क्षण आंखें खोल दी, उपस्थित हजारों-हजारों कण्ठों से गुरुदेव की जय! बाबा अमरनाथ की जय!! गगन गुंजरित हो गया।

मेरी पत्नी आज भी जीवित है, बम्बई में हम दोनों पति-पत्नी नौकरी करते हैं, उसी दिन नीरू ने अपना नाम बदल कर 'निधि'' रख दिया, क्योंकि उसका तो वापिस नया ही जन्म हुआ था, इस अनास्थायुक्त वातावरण में यह घटना मंत्रों की प्रामाणिकता स्पष्ट करने के साथ-साथ यह भी स्पष्ट करती है कि वास्तव में ही सिद्धाश्रम के योगी मृत्यु को जीवन में परिवर्तित करने की सामर्थ्य रखते हैं, ऐसे "मृत्यंजयी-गुरुदेव'' पर हम सभी साधक सौ-सौ बार न्यौछावर हैं।

-प्रहलाद खन्ना, बम्बई

अपने जीवन के अनसुलझे

प्रश्नों को सुलझाइये

स्वप्न वाराही मंत्र से

स्वप्न वाराही साधना

रात्रि में एकान्त कमरे में साधक स्वप्न वाराही का ध्यान कर इस साधना में जब एक लाख मंत्रों का जप करता है और उसका दशांश हवन करता है तो उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

विनियोग-

अस्य श्री स्वप्न वाराही मन्त्रस्य ईश्वर ऋषि: जगती छन्द: स्वप्न वाराही देवता उं बीजं ह्रीं शक्ति ठ: ठ: कीलकं ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोग:

स्वप्नवाराही देवता मंत्र

किसी भी रविवार को रात्रि को एक प्रहर बीत जाने के पश्चात् अपने सामने "स्वप्नवाराही यंत्र" का सिंदूर से पूजन कर उसकी १६ शक्तियों जो कि स्वप्न वाराही के षोडशदल में स्थित है, का पूजन संपन्न करे-

ॐ उच्चाटन्यै नम:।
ॐ उच्चाटनेश्वर्यै नम:।
ॐ शोषण्यै नम:।
ॐ शोषण्णोश्वर्यै नम:।
ॐ मारणेश्वर्यै नम:।
ॐ मारणोश्वर्यै नम:।
ॐ भीषण्यै नम:।
ॐ भीषणेश्वर्यै नम:।
ॐ त्रासन्यै नम:।
ॐ त्रासनेश्वर्यै नम:।
ॐ कम्पनेश्वर्यै नम:।
ॐ कम्पनीश्वर्यै नम:।
ॐ आज्ञाविवर्तिन्यै नम:।
ॐ वस्तुजातेश्वर्यै नम:।
ॐ आज्ञाविवर्तिनेश्वर्यै नम:।
ॐ सर्वसम्पादनेश्वर्यै नम:।
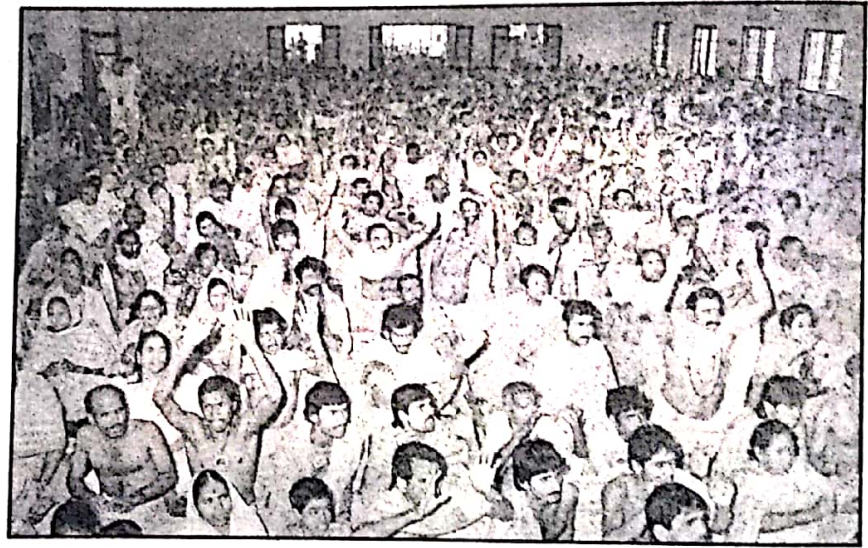
स्वप्नवाराही मंत्र

ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठ: ठ: स्वाहा।।

इसके पश्चात् ऊपर लिखे स्वप्नवाराही मंत्र का जप नीली हकीक माला से करें, और देवी का ध्यान करते हुए स्वप्नावाराही यंत्र अपनी भुजा पर बांधकर अथवा गले में पहन कर सो जाएं तो रात्रि में स्वप्नवाराही देवी होने वाले कार्यों को स्पष्ट रूप से बता देती है, जिस कार्य का विचार करते हैं उसके बारे में स्पष्ट समाधान प्राप्त होता है उस समय आंख खुल जाय तो पुन: ११ बार देवी के मंत्र का जप कर सो जाएं।

Scanned by CamScanner

यक्षिणी-मंत्र

जो समस्त प्रकार के भोग, धन, ऐश्वर्य एवं सम्पदा देने में समर्थ है।

"यक्ष" शब्द का तात्पर्य एक ऐसी विशेष जाति से है, जो अपने-आप में धन, ऐश्वर्य, प्रभुता और सम्पन्नता का अधिपति होती है। देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर हैं, जिनकी पूजा-अर्चना दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी के साथ सम्पन्न की जाती है। कुबेर "यक्ष" जाति के हैं और रावण ने भी कुबेर साधना सम्पन्न कर ऐश्वर्य प्राप्त किया था।

ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु

यक्षिणी साधना भी सम्पन्न की जाती है, अगर सही प्रकार से देखा जाए तो लक्ष्मी से भी ज्यादा महत्वपूर्ण "यक्षिणी साधना" है, क्योंकि यक्षिणी साधना से हम वह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं, जो हमारे जीवन का उद्देश्य है। यक्षिणी साधना निम्न पांच कारणों से ज्यादा महत्वपूर्ण मानी गयी है-

(१) यह साधना सरल है और इसमें ज्यादा जटिल विधि-विधान नहीं है।

(२) यह साधना कम से कम समय की है, और इसमें साधक को ज्यादा समय बरबाद नहीं करना पड़ता।

(३) यह साधना शीघ्र सिद्धिप्रद और तुरन्त फलदायक मानी गई है।

(४) यक्षिणी साधना से साधक को किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती, अपितु लाभ ही होता है।

(५) यक्षिणी साधना सम्पन्न करने पर यक्षिणी सौम्य रूप में जीवन भर साधक के वश में बनी रहती है, और उसका मनोवांछित कार्य सम्पन्न करती रहती है।

यक्षिणी स्वरूप

हमारे मन में या विचारों में यक्षिणी का जो रूप, आकृति या बिम्ब है वह गलत है। यक्षिणी तो अत्यंत सुंदर, सौम्य और सरल स्वभाव की है, यह निरंतर सोलह वर्ष की यौवनवती सुंदरी के रूप में सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित साधक के सामने बनी रहती है। यह अपने-आप में चिर यौवनमयी कहलाती है, और इसके शरीर से एक अपूर्व गंध निकलती रहती है, जो किसी भी पुरुष को सम्मोहित करने के लिये पर्याप्त है। यह स्वभाव से भोली और साधक के प्रति पूर्ण समर्पित होती है, और साधक का मनोवांछित कार्य सम्पन्न करने के लिये प्रतिक्षण तत्पर रहती है। साधक के जीवन में यक्षिणी प्रेमिका या प्रिया के रूप में ही बनी रहती है, और निरन्तर साधक को धन, ऐश्वर्य एवं सुख प्रदान करती रहती है।

यक्षिणी साधना के लाभ

इस साधना के आठ महत्वपूर्ण लाभ हैं। इन लाभों को साधकों ने निरन्तर प्राप्त किया है, और उनके अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि इस साधना से साधक को ये लाभ प्राप्त होते हैं।

(१) साधना सिद्ध होने पर यक्षिणी सशरीर सुंदर-सुसज्जित वस्त्रों में साधक को मिलती है, और उसकी ही बनकर रह जाती है।

(२) ऐसी यक्षिणी जो जीवन भर साधक की आज्ञा मानती रहती है।

(३) आज्ञा प्राप्त होने पर साधक जो चाहता है, वह यक्षिणी प्रदान करती है। इसमें धन, ऐश्वर्य, वस्त्र, स्वर्ण, शारीरिक सुख एवं मानसिक तुष्टि आदि सब कुछ वह प्रदान करती रहती है।

यक्ष एवं यक्षिणी : जो समस्त प्रकार के भोग देने में समर्थ हैं

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

अप्रैल ९३

एक अद्वितीय कैसेट

प्राप्ति स्थान
मंत्र तंत्र यंत्र कार्यालय
हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)
टेलीफोन-०२९१-३२२०९

कैसेट

जिसमें अप्रैल अंक के महत्वपूर्ण लेखों व उनसे संबंधित साधना एवं मंत्रों को प्रामाणिक रूप से उच्चरित किया गया है, जो बोलकर एक एक साधना, मंत्र, ध्यान और बारीकियां स्पष्ट करती है।

अप्रैल कैसेट : मूल्य ४२/ रु.

---

(४) ऐसी यक्षिणी सलाहकार के रूप में साधक को निरन्तर सलाह देती है एवं मार्ग दर्शन करती है। मुसीबत पड़ने पर वह तन-मन-धन से सेवा करती है।

(५) यक्षिणी सिद्धि होने पर वह शारीरिक और मानसिक रूप से साधक को तुष्टि प्रदान करती है।

(६) ऐसी यक्षिणी दृश्य रूप में और अदृश्य रूप में साधक को दिखाई देती रहती है, और कभी भी विश्वसघात नहीं करती।

(७) किसी भी प्रकार की साधना या उपासना करने वाला साधक ऐसी साधना को सम्पन्न कर सकता है, और इससे किसी प्रकार का कोई दोष व्याप्त नहीं होता।

(८) यक्षिणी साधना जीवन में निरन्तर धन और द्रव्य प्रदान करती रहती है। ऐसे साधक को वृद्धावस्था व्याप्त नहीं होती। साधक स्वयं यक्षिणी के प्रभाव से निरन्तर यौवनमय बना रहता है।

यह जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना है, और ऐसी साधना को जहां देवताओं ने सिद्ध किया है, वहीं पर योगियों, यतियों और सन्यासियों ने भी सिद्ध कर सफलता पाई है तथा जंगल में मंगल बनाए रखा है। गृहस्थ व्यक्ति भी ऐसी साधना सम्पन्न कर सकते हैं। इसे पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, इसमें किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है।

यदि वह साधना किसी कारणवश असफल भी हो जाए, तो भी साधक को किसी प्रकार की हानि नहीं होती और यदि पहली बार में नहीं, तो अगली किसी साधना में सफलता प्राप्त हो जाती है। कई साधकों को तो पहली बार में ही यह साधना सिद्ध हो जाती है।

"यक्ष" शब्द का तात्पर्य एक ऐसी विशेषज्ञ जाति से है जो अपने आप में धन, ऐश्वर्य प्रभुता और सम्पन्नता का अधिपति होता है कुबेर यक्ष जाति के हैं और रावण ने भी कुबेर साधना सम्पन्न कर ऐश्वर्य प्राप्त किया था। आज के युग में भी इस साधना का महत्व जीवन में सर्वोपरि है।

साधना मुहूर्त

यह साधना किसी भी पूर्णिमा की रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है।

साधना प्रयोग

इस साधना में चार वस्तुओं की जरूरत होती है।

(१) जलपात्र, कुंकुम, केसर, और चावल

(२) नीली हकीक माला जिसके द्वारा मंत्र जपा जाए

(३) पीला आसन और पहनने के लिये पीली धोती

(४) "दिव्यांगना स्वर्णप्रभा यक्षिणी सिद्धि यंत्र"

रात्रि को दस बजे के बाद साधक पीली साधक पीला आसन बिछा दे और उस पर शांत चित्त से बैठ जाए। अपने पास उपर्युक्त सामग्री के अलावा गुलाब के पुष्पों का हार भी रखें, जिससे कि जब यक्षिणी प्रत्यक्ष हो, तब उसके गले में वह हार पहना दिया जाए और उससे वचन ले लें कि वह जीवन-भर उसके वश में रहेगी और जो भी वह आज्ञा देगा, उसे पूरा करेगी। ऐसा करने पर साधना सिद्ध मानी जाती है।

यदि गुलाब के पुष्प उपलब्ध नहीं हो, तो किसी भी प्रकार की माला

इस माह की विशेष दीक्षा

पूर्ण सिद्धि दीक्षा

व्यक्तिगत या फोटो द्वारा

❒ *इस माह गुरुदेव ११.४.९३ से २४.४.९३ तक इलाहाबाद में ही निवास करेंगे।*

❒ *इस अवधि में कोई भी साधक प्रयाग आकर उपरोक्त दीक्षा ले सकता है, या जोधपुर फोटो भेजकर दीक्षा प्राप्त कर सकता है।*

साधना समय से पहले ही लाकर रखी जा सकती है।

साधना विधि

साधक किसी स्टील की थाली में केसर से स्वस्तिक या "श्री" अक्षर लिखकर उस पर "दिव्यांगना स्वर्णप्रभा यक्षिणी सिद्धियंत्र" स्थापित कर दें। इस यंत्र को पहले किसी अलग पात्र में कच्चे दूध से धो लें और फिर जल से

यक्षिणी साधना सम्पन्न करने पर यक्षिणी सौम्य रूप प्रियतमा की तरह साधक की सभी इच्छाएं पूरी करती है।

धो-पोंछकर केसर से अंकित "श्री" पर इस यंत्र को स्थापित कर दें। यदि संभव हो, तो गुलाब का इत्र चढाएं, पुष्प समर्पित करें और दूध का बना हुआ भोग लगाएं। इसके बाद पास में ही तेल का दीपक एवं अगरबत्ती जला दें। साधक स्वयं उत्तर की ओर मुंह कर बैठें और उसी रात हकीक माला से मात्र २१ माला मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं दिव्यांगना आगच्छ सिद्धिं देहि-देहि फट्।।

मंत्र जप पूरा होने के बाद जब यक्षिणी के प्रत्यक्ष दर्शन हो या ऐसा अनुभव हो कि पास में अत्यंत मधुर सुगंधयुक्त षोडशी दिव्यांगना आकर बैठी है, तो उसके गले में वह पहले से ही लाया हुआ हार पहना दे और वचन ले ले कि दिव्यांगना यक्षिणी उसके वश में रहेगी और जीवन भर जो आज्ञा देगा उसका पालन करेगी।

इस साधना के सम्पन्न होने के बाद वह यंत्र जो ताबीज के आकार का होता है, अपनी बांह पर बांध लें। ऐसा करने पर उसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

इक हूक सी उठी है फिर आज मेरे सीने में।
शायद प्यार से आपने फिर मुझे आवाज दी है।।
-सुशील गुप्ता, कानपुर

ऐसा हो ही नहीं सकता

कि

त्रि शक्ति सिद्ध व्यक्ति कहीं जाय

और कार्य सिद्ध न हो।

त्रिशक्ति यंत्र का चमत्कार

त्रिशक्ति का तात्पर्य है महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती। समस्त विश्व इन तीन महाशक्तियों से ही चलायमान है, जो साधक मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त त्रिशक्ति यंत्र को स्थापित कर नित्यप्रति त्रिशक्ति बीज मंत्र का जप करता है तो उसके जीवन में किसी भी प्रकार की कमी हो वह दूर हो ही जाती है।

त्रिशक्ति मंत्र
श्रीं ऐं क्लीं।।

नित्यप्रति प्रातः ताम्र पत्र पर अंकित त्रिशक्ति यंत्र का कुंकुम, केशर एवं चंदन से पूजन कर इन तीनों वस्तुओं को मिलाकर स्वयं के तिलक करें, और उपरोक्त मंत्र की एक माला का जप अवश्य करें।

यदि कोई व्यक्ति इस त्रिशक्ति का जप करते हुए भी किसी से मिलने जाए या कोई महत्वपूर्ण कार्य संपन्न करना हो तो वह शीघ्र संपन्न हो जाता है।

एक सिद्ध मंत्र

कर्ण पिशाचिनी का

जिसके माध्यम से किसी भी पुरुष या स्त्री के भूतकाल की एक - एक घटना कुछ की सैकण्डों में मालूम की जा सकती है.....

मैं व्यवसाय से एक विधि विशेषज्ञ हूं एवं कोर्ट ही मेरा कार्यक्षेत्र रहा है। विधि के प्रश्नों को लेकर जटिल विवेचना में उलझना ही मेरा तब मानो आनन्द था मैं बहुधा अनुभव करता कि सामने वाला पक्ष तथ्य को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत कर रहा है, अथवा कोई नवीन बिन्दु जब कार्यवाही के मध्य उभरकर एकाएक सामने आ जाता तो मैं सोचता कि क्या मन की बात जानी जा सकती है अथवा किसी का भूत काल आंखों के सामने चित्र की तरह देखा जा सकता है। किन्तु मेरे लिये इस पर प्राय: विश्वास करते हुए भी यही चिन्तन रहता था कि ये सब योगियों के बस की बात होगी, मेरे जैसे साधारण गृहस्थ की नहीं।

एक दिन मैं अपने शहर के रेलवे बुक स्टाल पर यूं ही घूमने फिरने निकल गया जहां डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली द्वारा रचित साहित्य की एक श्रृंखला सी शो-केस में सजी थी। कई पुस्तकों को उलटने पलटने के बाद उनकी पुस्तक "तांत्रिक सिद्धियां" जिसके प्रारंभ में उनके गहन चिन्तन से ओत-प्रोत पत्र हैं, मैंने साहित्य की श्रेष्ठता से प्रभावित होकर खरीद लिया। रात में उसे जब इत्मीनान से पढ़ने बैठा तो पाया पुस्तक के अन्त में कुछ साधनाएं भी दी गयी हैं जिनमें से भूतकाल अथवा किसी के मन को बताने वाली साधना कर्णपिशाचिनी भी है। मैंने रुचि लेकर पढ़ा किन्तु एकाएक किसी कार्य में हाथ डाल देना मानों मेरी आदत नहीं है। अत: मैंने पहले उसमें से डा० श्रीमाली जी का पता नोट कर उन्हें पत्र लिखा जिसके प्रत्युत्तर में मुझे सूचित किया गया कि किसी साधना से पहले दीक्षित होना एक अनिवार्य स्थिति है। मैं डा० श्रीमाली जी की उपरोक्त पुस्तक पढ़कर यह तो अनुमान लगा ही चुका था कि वह अत्यंत विद्वान और सुलझे हुए व्यक्तित्व के धनी है। अत: बिना किसी हिचकिचाहट के जोधपुर के लिये रवाना हो गया।

जोधपुर में डा. श्रीमाली जी से मेरी भेंट हुई। विधि व्यवसाय से जुड़े रहने के कारण जहां एक दुर्गुण मुझमें आ गया है, कि किसी बात को लेकर मैं मानसिक रूप से पहले बहुत तर्क वितर्क करता हूं, वहीं व्यक्तित्व चीन्हने की क्षमता का भी विकास हुआ है। उनके सरल पाण्डित्य पूर्ण, गरिमामय व्यक्तित्व से प्रभावित होकर मैंने उन्हें सहज ही गुरु पद का अधिकारी माना एवं विधिवत् दीक्षा प्राप्त करने के उपरांत उनसे प्रार्थना की कि कृपया वे मुझे कर्ण पिशाचिनी साधना का रहस्य स्पष्ट करें। उन्होंने अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक मुझे कर्णपिशाचिनी के विषय में विस्तृत रूप से ज्ञान दिया और यह भी बताया कि यह मात्र भूतकाल को दिखाने वाली अथवा वर्तमान में व्यक्ति के मन में क्या चल रहा है, इसे बताने वाली साधना है। इस साधना का भविष्य काल से कोई संबंध नहीं है।

उन्होंने विशद व्याख्या में बताया कि इसको सिद्ध करने के कई उपाय हैं, लेकिन उन्होंने अपने शिष्यों को अलग-अलग पद्धतियों से सिद्ध कराने के बाद जिस पद्धति को सबसे अधिक सौम्य एवं हानि रहित पाया उसका मैं स्पष्टीकरण उनकी आज्ञा से कर रहा हूं।

यह प्रयोग मात्र ग्यारह दिनों का है, जिसमें कांसे की थाली में सिन्दूर का त्रिशूल बनाकर उस पर कर्णपिशाचिनी

यंत्र रखकर उसका पूजन करना चाहिए एवं दिन में गाय के शुद्ध घी का दीपक जलाकर ग्यारह सौ मंत्र जप करें तथा रात्रि में भी उसी प्रकार त्रिशूल बनाकर पूजन कर घी और तेल का दीपक जलाकर ग्यारह सौ बार मंत्र जप करें। ग्यारह दिनों तक ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है एवं तत्पश्चात् मंत्र का उच्चारण कर कर्णपिशाचिनी का आवाहन करने पर वह अदृश्य रूप से उपस्थित हो साधक के कान में प्रश्न का सही उत्तर दे देती है। साधना काल में साधक को यथा संभव काले वस्त्र धारण कर रहना चाहिए, एक समय भोजन करना चाहिए तथा व्यर्थ बातचीत वर्जित होने के साथ स्त्री गमन एवं पर स्त्री से बातचीत सर्वथा निषिद्ध है। इस पद्धति में प्रयुक्त होने वाला मंत्र इस प्रकार है-

ॐ नमः कर्ण पिशाचिनी अमोघ सत्य वादिनी मम कर्णे अवतरावतर अतीतानागत वर्तमानानि दर्शय दर्शय मम भविष्य कथय कथय ह्रीं कर्णपिशाचिनी स्वाहा।।

मैंने उपरोक्त विधि से उनके सान्निध्य एवं निर्देशन में साधना सम्पन्न की एवं पहली बार में ही सफलता प्राप्त कर ली। इस सफलता का उपयोग करके जहां एक और मैंने अपने व्यवसाय में विशेषता प्राप्त की, वहीं अनेक अवसरों पर धोखा खाने से बचा हूं। मैंने अपनी इस सिद्धि का कोई प्रचार नहीं किया किन्तु इसके उपयोग से कई बार ऐसे कार्य किये हैं जो कि सामाजिक दृष्टि से अत्यंत लाभप्रद एवं उपयोगी रहे हैं। मेरा तो निश्चित मत है कि आज के युग में जब कि छल कपट, पाखंड जरूरत से ज्यादा बढ़ गया है तो ऐसी साधना आवश्यक ही हो जाती है। पिशाचिनी शब्द से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है और न यह कोई उग्र अथवा तीव्र साधना है। पिशाचिनी तो मानव योनि से भिन्न एक इतर योनि का सूचक शब्द ही है। वास्तव में तो कर्णपिशाचिनी सिद्ध होने के बाद अत्यंत मनोहारी रूप में समस्त श्रृंगारों से युक्त होकर साधक के समक्ष उपस्थित होती है।

कर्ण पिशाचिनी आज के युग की अद्वितीय साधना है, जिसे आसानी से सिद्ध किया जा सकता है, और सैकड़ों साधकों ने इसे सिद्ध किया है।

इसके माध्यम से किसी के भी अतीत में झांका जा सकता है, मंत्र सिद्ध होने पर साधक मन में प्रश्न उठाता है और एक अतीव सुन्दरी नवयौवना साधक के मन में उसके अतीत के बारे में सब कुछ बता देती है।

एक मंत्र

जो हजार हजार परमाणु बमों से भी अधिक शक्तिशाली और विस्फोटक है

आज जब विश्व में नित्य नये समीकरण बन बिगड़ रहे हैं, कल के परम्परा गत शत्रु परस्पर मित्रता में बंध रहे हैं, तो बंधे बंधाए देश विघटित हो रहे हैं। इसका स्वाभाविक परिणाम है, संशय, अनिश्चितता और सुरक्षा की चिन्ता। इस वातावरण में जब सभी अपनी-अपनी सुरक्षा व्यवस्था को निरंतर पुष्ट कर रहे हैं, हमारे सामने क्या विकल्प बचता है?

डॉ० एन्ड्रयू ब्रूच ऐसे ही एक गंभीर विद्वान हैं जो पेशे से पत्रकार है। उनकी रुचि भारत के ज्ञान विज्ञान के सभी पक्षों में तो है ही, साथ ही वे मांत्रिक पक्ष से विशेष प्रभावित हैं। उनकी शोध का विषय मंत्र ही है। पिछले दिनों वे अपने ज्ञान को समृद्ध करने के साथ ही साथ इस ललक से भारत आये कि उन स्थानों के दर्शन अपने नेत्रों से करूं जिनका अभी तक मात्र विवरण ही पढ़ा है। उन्होंने उत्तराखंड की यात्रा की और ज्ञान विज्ञान की जो जानकारी पायी वह तो उनकी दृष्टि में श्रेष्ठ रही ही, साथ ही वे इस देश की बहुविध संस्कृति की झलक पाकर के भी गद्गद् हो उठे।

पिछले दिनों जब वे वापसी यात्रा हेतु विमान पकड़ने दिल्ली आये तो हमने प्रयास कर उनसे भेंट की। श्री ब्रूच स्वभाव से अत्यंत संकोची व प्रचार प्रसार से कोसों दूर रहने वाले व्यक्तित्व हैं। उन्हें देखकर यही लगता है कि मानों कोई भारतीय ऋषि ही गलती से अमेरिका में जाकर पैदा हो गया है। हमारी रुचि उनसे बातचीत करने में इस कारण और अधिक थी क्योंकि वे पेशे से पत्रकार हैं अत उनकी बातों में अवश्य ही तथ्य परकता, वास्तविकता, तथा विवेचनात्मकता होगी।

हमारी ओर से श्री आनन्द वर्धन एवं उनके मध्य जो बातचीत हुई उसका संक्षिप्त व संपादित रूप प्रस्तुत है। यद्यपि संपूर्ण बातचीत अंग्रेजी में हुयी थी किन्तु पाठकों के लाभार्थ उसका भावानुवाद हिन्दी में प्रस्तुत है-

आनन्द वर्धन

माननीय डॉ० साहब आप प्रमुख भारत विद् है, और आपका सहज स्नेह इस देश के प्रति है। आपने यहां आकर अपनी कल्पना के अनुरूप क्या पाया? आप का क्या अनुभव रहा?

डॉ० ब्रूच

अदभुद्! अनिवर्चनीय!! मैं सोच भी नहीं सकता था कि कोई देश अपनी परम्पराओं और विरासत को समेट इस तरह भी जी सकता है। मैंने उन स्थानों के दर्शन किये जिनका मैंने अभी तक संदर्भ ही पढ़ा था। मैं उन्हें अपने नेत्रों से देख रोमांचित हो उठा। सचमुच इस देश में अभी भी ऋषि परम्परा है, गुरु शिष्य परम्परा है, भावनाओं का मूल्य है, और परस्पर ताने बाने की कड़ियां हैं जो हमारे देश में कहीं बिखर सी गयी हैं।

आनन्द वर्धन

किन्तु डॉ० साहब भारत भारत की छवि विदेशों में तो इस प्रकार की नहीं है।

डॉ० ब्रूच

यह सच है कि वे भारत को एक गरीब देश मानते हैं। यहां के लोगों को असभ्य अशिक्षित एवं इसे गन्दा और बीमारियों के कीटाणुओं से भरा देश मानते हैं, किन्तु उनकी दृष्टि एकांगी है। उनका भी दोष नहीं क्योंकि उनके जीवन में आस्था, विश्वास जैसे भाव ही नहीं हैं। वे भौतिकता की दृष्टि से भारत को परखना चाहते हैं जबकि यह देश तो पहचाना जाएगा आध्यात्मिक दृष्टि लेकर। भले ही इसकी काया बहुत सजी संवरी न हो किन्तु इसकी आत्मा सदैव से पवित्र व निर्मल रही है। मैंने अन्त: दृष्टि से इस देश की आत्मा को चीन्हा है, इसी से मेरी धारणा पाश्चात्य धारणा से भिन्न है।

आनन्द वर्धन

डॉ० साहब आप भारत विद् होने के साथ ही साथ अपने देश के एक प्रमुख पत्रकार भी हैं आप वर्तमान विश्व की राजनैतिक परिस्थितियों के संदर्भ में भारत की नीतियों की प्रासंगिकता के विषय में अपना मत प्रकट करें।

डॉ० ब्रूच

भारत के पूर्व प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा प्रतिपादित समस्त सिद्धांत आज के परिपेक्ष्य में भी उतने ही प्रासंगिक और सही हैं, जितने की वे अपने प्रतिपादन के समय थे। वास्तव में देखा जाय तो उन्होंने एक योगी की भांति केवल उन स्वरों को वाणी दी थी जो सदा सर्वदा से इस देश का स्वर रहा है। उनके सिद्धान्तों में जैन धर्म की अहिंसा, बुद्ध की करुणा, ऋषियों की उदात्तता सभी कुछ तो समाहित है। उन्होंने इस देश की मूल वाणी को ही राजनीतिक संदर्भों में व्याख्यित कर विश्व रंग मंच पर मान्यता दिलाने का प्रयास किया था। भले ही मेरे देश की नीतियां कुछ भी हों, मैं व्यक्तिगत रूप से उनकी गुट निरपेक्षता, विश्व बंधुत्व, पंचशील सभी का प्रबल हामी हूं।

आनन्द वर्धन

आपके इस कथन के प्रकाश में तो फिर यह प्रतीत होता है कि भारत को पूर्ण निःशस्त्रीकरण का भी प्रबल हामी होना चाहिए एवं वर्तमान में भारत द्वारा भी परमाणु बम के निर्माण की जो बात तेजी से उठायी जा रही है उसका कोई औचित्य नहीं है।

डॉ० ब्रूच

(मुस्कराकर) भारत को सचमुच परमाणु बम की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

आनन्द वर्धन

(आश्चर्य एवं किन्चित् उत्तेजना से) डॉ० साहब आप क्या कह रहे हैं? इस प्रकार तो यह देश कहीं विनष्ट ही न हो जाय। विश्व में कैसी परिस्थितियां चल रही हैं क्या आप सदृश्य प्रमुख पत्रकार भी उनसे अनभिज्ञ है फिर भी

तिब्बत का वह लामा मठ: जिसे इस मंत्र का जनक कहते हैं

आप इतनी सहजता से कह रहे हैं कि भारत को परमाणु बम की कोई आवश्यकता नहीं। इस तरह से क्या एक महान संस्कृति विनाश के उस बिन्दु पर नहीं आ जाएगी जिस तरह से अनेक लुप्त हो गयीं।

डॉ० ब्रूच

(सहसा गंभीर होकर) आप मेरा मन्तव्य नहीं समझे। आपका प्रश्न भले ही राजनैतिक रंग लिये था किन्तु मैंने जो उसका उत्तर दिया वह पूर्णतः इस देश की ज्ञान विज्ञान की परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए दिया था। इसी से मैं गलत नहीं था। मेरे उत्तर का यह तात्पर्य कदापि नहीं था कि भारत आत्मरक्षा करे ही नहीं या प्रत्युत्तर न दे। मैं तो यह स्पष्ट कर रहा था कि उसे इस अन्तर्राष्ट्रीय विवाद में पड़ने की आवश्यकता ही नहीं कि परमाणु बम बनाएं या न बनाएं जबकि उसके पास इससे भी अधिक तीव्र विघटनकारी और विध्वंसक शक्तियां उपलब्ध हैं।

आनन्द वर्धन

कृपया अपनी बात को स्पष्टता से हमें बताएं।

डॉ० ब्रूच

मेरे उत्तर को समझने से पूर्व यह आवश्यक है कि आप इसके पीछे निहित ज्ञान की गरिमा को भी समझें। मैं एक मंत्र विशेषज्ञ होने के कारण समझ सका हूं कि इस देश में कैसे-कैसे प्रखर मंत्र सृष्टा ऋषि हुए हैं, और हैं तथा कैसे प्रखर मंत्र विद्यमान हैं। यह विडम्बना है कि भारत के बुद्धिजीवी मंत्र को मात्र कुछ शब्दों का संयोजन मात्र ही मानते हैं कि उनके निरंतर उच्चारण कर व्यक्ति अपनी श्रद्धा व्यक्त करता है। यह सत्य है कि मंत्रों के माध्यम से व्यक्ति अपने इष्ट या गुरुदेव का निरंतर चिन्तन मनन करता है। किन्तु हमारे देश में वैज्ञानिकों ने इसका विवेचन कर निष्कर्ष पाया है कि मानव के दोनों शरीरों अर्थात् अन्तः और बाह्य के परस्पर समन्वय से एक प्रकार की विद्युत संचरित होती है। यह विद्युत अपने स्वरूप में दो प्रकार की होती है। इसमें से प्रथम घार्षणिक विद्युत होती है जो मानव शरीर से उत्पादित होती है जबकि धारावाही विद्युत का उत्पादन केंद्र मानव मस्तिष्क होता है। मंत्र जप में व्यक्ति जाने अनजाने इन दोनों विद्युतों का विशिष्ट प्रकार से घर्षण करता है। जिससे जो ऊर्जा उत्पन्न होती है वह प्राण ऊर्जा होती है। यह प्राण ऊर्जा यदि किसी विशिष्ट मंत्र को लेकर उत्पादित की जाए तो अत्यंत विस्फोटक और दाहकारी हो सकती है।

आनन्द वर्धन

क्या आपके ज्ञान में कोई ऐसा विशिष्ट मंत्र है?

डॉ० ब्रूच

यद्यपि यह गोपनीय विषय है किन्तु मुझे यह देखकर अत्यंत खेद हो रहा है कि जिस तरह से यहां के बुद्धि जीवी एंव वैज्ञानिक मंत्रों के प्रति न केवल उदासीन है वरन यदा कदा उपहास भी बनाते रहते हैं उसी से मैं यह मंत्र स्पष्ट करना अपना कर्तव्य समझता हूं क्योंकि इस देश से मेरा आत्मिक संबंध हो गया है। यह मंत्र है-

ॐ धूं धूं धूमावत्यै धूर्जटे धूं धूं फट्।।

आनन्द वर्धन

आपके उपरोक्त रहस्योद्‌घाटन के बाद हम आपका आभार प्रकट करते ही हैं, साथ ही आप कृपया इस विषय में कुछ और रहस्य खोलेंगे?

डॉ० ब्रूच

वास्तव में मंत्र विज्ञान का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यह तो ऊर्जा के उपयोग का विषय है। आपने चूंकि राजनैतिक संदर्भों में पूछा अत: मैंने उसकी एक पक्षीय व्याख्या की जबकि इसके तो विविध आयाम संभव हैं। यह तो निर्भर करता है कि हम अपनी आन्तरिक भाव शक्ति एवं मन: शक्ति का समन्वय कर इस ऊर्जा अर्थात इस विद्युत का कैसा उपयोग करते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत पुन: अपनी विद्याओं को पहचाने एवं उसी के नियंत्रण से इस विश्व में रचनात्मक कार्यों की पहल हो सकेगी। अन्यथा पश्चिमी देशों में तो केवल विध्वंसात्मक चिन्तन ही बल पा रहा है।

आनन्द वर्धन

धन्यवाद डॉ० ब्रूच। आशा है आपके कथनों से हमें भी इस दिशा में सोचने के आधार मिलेगा और हम इसका रचनात्मक उपयोग कर पाने में सफल रहेंगे। यह एक कल्पना युक्त साक्षात्कार है।

डुबो ली है उंगलिया मैंने, खूने जिगर में

गुरु !

ये दो ही अक्षर दुनिया में ऐसे हैं जो दिल को चीर, अन्दर पहुंचकर जिगर को चाक-चाक कर देते है, बिना गुरु के इस जिन्दगी का मतलब ही क्या? आप और हम जो जिन्दगी जी रहे हैं, इसमें कुछ सार है, क्या? कोई अर्थ है इसका! ऐसी जिन्दगी तो हर इन्सान जी रहा है, अरे जिन्दगी अपने पास रखने से नहीं बनती, इस खेल में "या तो किसी के हो जाते हैं'' या "किसी को अपना बना लेते हैं''..... और जब गुरु को अपना बना ही लिया, या हम उसके हो ही गये तो फिर हमारा वजूद ही क्या रहा-

इन्तजार कर लेंगे तमाम उम्र हम
मगर अफसोस रहेगा, कि उम्र कम थी।

और वह हस्ती जिसे हम "गुरु'' कहते हैं, मामूली सख्सियत नहीं होती एक आला जिन्दगी होती है, बाहिर से देखकर उसे नहीं समझा जा सकता-

बाहिर से देख कर तूं, समझेगा किस तरह?
कितने गमों की भीड़ है इस आदमी के साथ।

और हम तो ऐसी सख्सियत को गम के अलावा दे भी क्या सकते हैं, जो कुछ हमारे मास है, वहीं तो हम देंगे, हमारी तो जिन्दगी भर की कमाई झूठ, छल धोखा फरेब और गम के अलावा रही ही क्या है-

गुरु हम से ऊंचा है, हम तो एक रज कण ही नहीं। वह कुछ नहीं तो एक कतरा तो है ही....और ऐसा कतरा, जिसकी तलाश पूरा समन्दर करता है-

मैं एक कतरा ही सही, मेरा अलग वजूद तो है।
हुआ करे जो समन्दर, मेरी तलाश में है।

मैंने उसकी तलाश की है, उसे पहिचाना है, रूबरू हुआ हूं, एक जिस्म हुआ हूं, क्योंकि वह मेरा पीर है, मेरा सब कुछ है-

धड़कनें तेज हुई, रूक सी गई नब्जे हयात।
आपने अपने होठों पर, मेरा नाम तो नहीं लिया?

लिया है, और खुल कर लिया है क्योंकि मैंने उसके आने के निशां देखे हैं-

आज कोई बेगाना, आदाबे चमन आया है,
मैंने कांटों पर भी होठों के निशां देखे हैं।

और ये निशान फूलों पर नहीं, कांटों पर देखे हैं, खुशगवाई पर नहीं, जख्मों पर देखे है, क्योंकि मैं इन दो हरफों "गुरु'' पर सब कुछ लुटा बैठा हूं।

जमाना याद तुम्हारी न छीन ले मुझसे।
मेरी तो जीवन भर की यही कमाई है।

और हकीकत यह है कि आपके कदमों में मेरी हस्ती ही क्या है, एक जर्रा भर भी तो नहीं-

तुम्हारा नूर है जो पड़ रहा चेहरे पर
वरना कौन मुझे देखता अंधेरों में।

पर मैं हिम्मत हारने वाला नहीं हूं, रुका नहीं हूं, उम्र की रफ्तार से भी तेज चल रहा हूं-

देखता हूं अब भी आप, मिलते हैं, मुझे जिन्दगी में या नहीं
कई गुना तेज चलता हूं, मैं अपनी उम्र की रफ्तार से।

और जहर पी रहा हूं, जिन्दगी ने तमाम उम्र मेरे साथ किया ही क्या है, वह तो मुझे आजमाती ही रही है-

जहर मिलता रहा, जहर पीते रहे,
यूं ही मरते रहे यूं ही जीते रहे।
जिन्दगी भी हमें आजमाती रही, और
हम भी उसे आजमाते रहे।

पर पता नहीं जिन्दगी ने यह दामन क्यों झटक दिया....

हमने तो कांटों को भी नरमी से छुआ है, लेकिन
लोग बेदर्द हैं, फूलों को भी मसल देते हैं।

और इस जमाने ने मुझे आंसू की तरह निकाल फेंका, और आपकी गोद में आ गया, आपके कदमों पर सिर रख दिया, आपको यह खूने जिगर सौंप दिया-

मुझे फूंकने से पहले, दिल निकाल लेना।
यह किसी की है अमानत, कहीं साथ जल न जाए।

और मेरी ख्वाहिश यही है, कि आपके कदमों पर मेरा दम निकले, जब जिन्दगी में "गुरु'' ही मिल गये तो फिर इस नाचीज को कमी ही क्या रही, मैं तो जो कुछ हूं, जैसा हूं, आपका हूं, अगर मैं सिद्धाश्रम आपके साथ न जा सका, तो अफसोस आपको रहेगा।

डूब कर तूफां को दी, थी खबर,
आप ही बेखबर हों तो मैं क्या करूं?

●●●

अंधे को भी पूर्ण नेत्र ज्योति देने वाला

एक गोपनीय और दुर्लभ मंत्र

जिसने

पूरे विश्व से अंधता समाप्त

करने का निश्चय कर रखा है

चाक्षुषोपनिषद्

व्यक्ति के चेहरे में विधाता ने कदाचित सर्वाधिक सुंदर वस्तु उसकी दो आखें बनाई हैं। जहां स्वच्छ व निर्मल आंखें अपने आप में सम्पूर्ण सौन्दर्य को प्रदर्शित करती है वहीं आकर्षक चमक एवं लपक से भरी आंखें व्यक्ति के व्यक्तित्व को एक अतिरिक्त आयाम देती हैं। दृष्टि अपने आप में जीवन का पर्याय है इसी से हमारे ऋषियों ने दृष्टि को जीवन एवं अंधता को मृत्यु की संज्ञा दी है।

मैंने अपने वर्षों के चिकित्सक के जीवन में सैकड़ों रोगियों को देखा है, परखा है एवं स्वस्थ किया है एक सफल होम्योपैथ के रूप में मैं अपने शहर में सुविख्यात हूं। अपने चिकित्सा विज्ञान में एक परिपूर्णता का अभाव अनुभव कर मैं अतिरिक्त ज्ञान के लिये भी सतत प्रयत्नशील रहा एवं इसी क्रम में पूज्यनीय डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी से भी भेंट की। मेरा मंतव्य था कि मैं उनके सान्निध्य में रहकर सम्मोहन विज्ञान सीखूं और उसका चिकित्सक की दृष्टि से उपयोग करूं। मुझे अपने इस प्रयास में आशातीत सफलता मिली और कई एक रोगियों विशेषकर मानसिक जटिलता से संबंधित रोगियों के उपचार में तो स्वयं हतप्रभ रह गया हूं कि इस माध्यम से कितना सही व प्रामाणिक उपचार संभव है।

मेरे चिकित्सकीय जीवन में एक बार एक अलग ढंग का रोगी आया जो नेत्र रोग से पीड़ित था एवं आंखों की अनेक पीड़ाओं के साथ ही साथ उसके चश्मे का नंबर निरंतर घटता बढ़ता ही रहता था। मैंने प्रारंभ में उसका अपने चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से उपचार करना चाहा किंतु सामान्य सफलता ही हाथ लगी। मैंने उसे एक चुनौती मानकर ठीक करने की ठान ली।

उन्हीं दिनों मैं अपनी व्यक्तिगत साधना के संदर्भ में जोधपुर भी गया एवं पूज्य गुरुदेव से वार्तालाप के मध्य जिज्ञासा की कि क्या आंखों का कोई श्रेष्ठ आयुर्वेदिक उपचार भी संभव है। मैं इस तथ्य से परिचित था कि वे आयुर्वेद के भी प्रकांड ज्ञाता है एवं उन्होंने अनेक् असाध्य रोगियों को इस विद्या के माध्यम से लाभ पहुंचाया है। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद के माध्यम से भी उपचार संभव है किन्तु उन्होंने ज्योतिष के क्षेत्र से यह अनुभव किया है कि इस रोग के पीछे मुख्य रूप से कारण व्यक्ति का सूर्य ग्रह या उसके शरीर में सूर्य तत्व निर्बल होना होता है। उन्होंने इस विषय में बताया कि व्यक्ति का मंत्रात्मक उपचार किया जाये तो अधिक फल प्रद होता है । उन्होंने इस विषय में बताया कि व्यक्ति के शरीर में ही नहीं इस सम्पूर्ण सृष्टि में ही सूर्य तत्व ही है जो गतिशीलता का आधार है इसी कारणवश सूर्योपासना हमारे दैनिक जीवन का एक आवश्यक अंग होनी ही चाहिए।

मेरे आग्रह पर उन्होंने गोपनीय "चाक्षुषोपनिषद्" को स्पष्ट किया जो कृष्ण यजुर्वेद का एक अंग है। जब व्यक्ति का नेत्र-रोग सभी उपचारों के बाद भी

न दूर हो तब उसे निश्चित मानना चाहिए कि उसका रोग पूर्वजन्म कृत दोष के कारण है एवं इस पद्धति से सामान्य परिस्थितियों जैसे अनुवांशिकता से प्राप्त, चोट के कारण प्राप्त, कुपोषण से प्राप्त नेत्र दोष के साथ ही साथ पूर्वजन्म कृत दोष से प्राप्त नेत्र दोषों का भी परिहार संभव होता है।

इस पद्धति में शुक्ल पक्ष के किसी भी रविवार से प्रारंभ कर नित्य निम्न स्तोत्र के ग्यारह पाठ करने चाहिए एवं रविवार को १०८ पाठ करने चाहिए। इससे पूर्व संक्षिप्त रूप से सूर्य पूजन अवश्य करना चाहिए जिसमें गुरुध्यान पूजन कर सूर्य देवता से प्रार्थना करनी चाहिए कि वे उसके नेत्र संबंधी सभी कष्टों का निवारण कर उसे तेजस्विता दें। आगे दिये गये मंत्र का जप करने के पूर्व गले में "चक्षुष्मती यंत्र'' धारण कर एक कांसे की थाली में जल रखें तथा सूर्य की ओर मुंह के किये रहें तथा स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र ही धारण करें। सूर्योदय का काल ऐसा काल होता है जब व्यक्ति सूर्य की तेजस्विता को ग्रहण कर सकता है।

चक्षुष्मती विद्या

ॐ चक्षुष्मती तेज: स्थिरोभव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षुरोगान् प्रशमय प्रशमय मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय यथाऽहमंधो न स्यां कल्पय कल्पय, कृपया कल्याणं कुरु कुरु। मम यानि यानि पूर्व जन्मोपार्जितानिचक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय ॐ नमो भगवते श्री सूर्योयक्षितेजसे नमः। ॐ खेचराय नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ सत्वाय नमः। ॐ असतो मा सद्गमय। ॐ तमसो मा ज्योतिर्गमय। ॐ मृत्योर्मामृतं गमय। उष्णो भगवानछुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरः प्रतिरूपः।

अर्थात्-

हे चक्षु के अभिमानी सूर्य देव। आप चक्षु के तेज के रूप में स्थिर हो जाएं। मेरी रक्षा करें रक्षा करें। मेरी आंख के रोगों का शीघ्र शमन करें, शमन करें। मुझे अपना स्वर्ण जैसा तेज दिखलादें दिखलादें जिससे अंधा न होऊं, कृपया वैसा ही उपाय करें, उपाय करें। मेरा कल्याण करें, कल्याण करें। दर्शन शक्ति का अवरोध करने वाले मेरे पूर्वजन्मार्जित जितने भी पाप हैं, सबको जड़ से उखाड़ दें "ॐ सच्चिदानंद स्वरूप'' नेत्रों को तेज प्रदान करने वाले दिव्य स्वरूप भगवान भास्कर को नमस्कार। ॐ करुणा कर अमृत स्वरूप को नमस्कार। ॐ भगवान सूर्य को नमस्कार। ॐ नेत्रों के प्रकाश भगवान सूर्य देव को नमस्कार। ॐ आकाश विहारी को नमस्कार। परम श्रेष्ठ स्वरूप को नमस्कार। ॐ सबमें क्रिया शक्ति उत्पन्न करने वाले रजोगुण रूप भगवान सूर्य को नमस्कार। हे भगवान, आप मुझको असत् से सत् की ओर ले चलिए, अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलिए, मृत्यु से अमृत की ओर ले चलिए। ऊष्ण स्वरूप भगवान सूर्य शुचि रूप हैं। हंस स्वरूप भगवान सूर्य सुचि तथा अप्रतिरूप हैं। उनके तेजोमय स्वरूप की समता करने वाला कोई भी नहीं है।

जो ब्राह्मण इस चक्षुष्मति विद्या का नित्य पाठ करता है उसे नेत्र संबंधी कोई रोग नहीं होता। उसके कुल में कोई अंधा नहीं होता। आठ ब्राह्मणों को इस विद्या का दान करने पर इसको ग्रहण करा देने पर इस विद्या की सिद्धि होती है।

आंख की किसी भी प्रकार की बीमारी अंधापन, भेंगापन, आंख में जाला और दृष्टि न्यूनता.... सभी में यह मंत्र अद्भुत आश्चर्यजनक और रामबाण की तरह है.....

यदि कोई गंभीर रोगी स्वयं पाठ करने में अक्षम हो तो उसके नाम का संकल्प कर कोई ब्राह्मण भी उसका पाठ कर सकता है। संस्कृत उच्चारण में कठिनाई अनुभव करने वाले पाठक हिन्दी अनुवाद का उच्चारण कर समान लाभ प्राप्त कर सकते हैं। एक उल्लेखनीय बात यह है कि साधक अथवा रोगी रविवार के दिन बिना नमक का भोजन एक समय ही करें। पाठ समाप्त होने के बाद साधक कांसे की थाली में रखे जल को अपने दोनों नेत्रों को अधखुला रखकर उनमें छिड़कें और पांच मिनट तक आंखें बंद कर बैठा रहे तदुपरान्त ही दैनिक कार्य आरंभ करे। स्त्रियां रजस्वला काल में इसका पाठ न करें। पूर्ण शुद्धि छठे दिन से होती है।

●●●
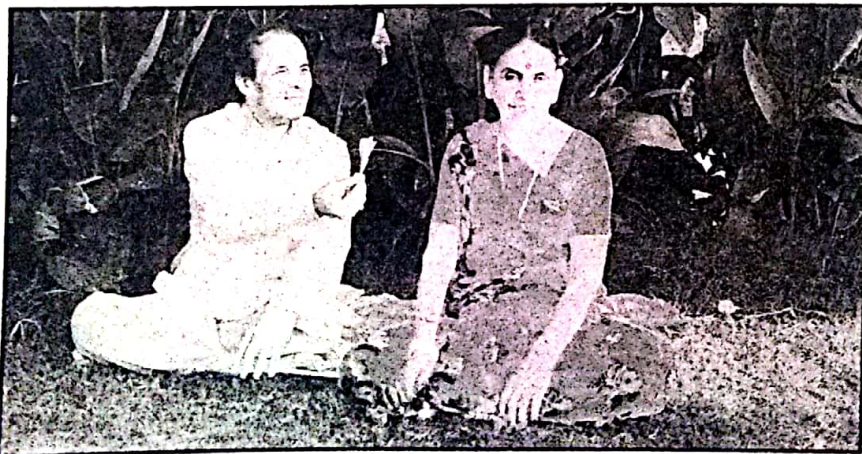
प्रचण्ड तूफान से भी टक्कर लेने वाला

बगला मुखी मंत्र

- मुकदमें में सफलता के लिए
- शत्रुओं को अपने अनुकूल बनाने के लिए
- हमेशा विजयी रहने के लिए
- शत्रुओं पर मंत्रात्मक प्रहार करने के लिए
- किसी भी प्रकार की राजकीय बाधा से बचने के लिए

ऊपर मैंने कुछ सूत्र लिखे हैं एवं निश्चित रूप से कोई न कोई सूत्र आप पर भी किसी न किसी प्रकार से लागू होता ही है। क्योंकि यह तीव्र प्रतिस्पर्द्धा का युग है। आप चाहें या न चाहें विघटन कारी तत्व आपके जीवन की लय क्रमबद्धता शान्ति, सौहार्द्र, भंग करने का प्रयास करते ही रहते हैं। एक दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्ति की अपेक्षा एक सरल और शान्त प्रवृत्ति के लिए मनों अपमान पीड़ा तिरस्कार, भय, कलह के द्वार सदैव खुले ही रहते हैं, जिसके अन्दर कोई भी ओछा व्यक्ति उसे जब भी चाहे धकेल सकता है। आप अपनी सौजन्यता इन तत्वों के हाथ गिरवी तो नहीं ही रखना चाहेंगे।

हमारे क्रियात्मक ज्ञान की परम्परा अत्यन्त समृद्ध है। उसने विशद रूप में जाकर न केवल परम तत्व की प्राप्ति का ही चिन्तन किया वरन दैनंदिन जीवन में आने वाली समस्याओं को भी समझ कर उनकी गहन विवेचना कर समाधान के प्रयास ढूंढे। परम शिव तत्व के साथ ही शक्ति तत्व का भी विवेचन हुआ एवं इसी शक्ति तत्व की विवेचना का एक सुखद परिणाम है "बगला मुखी साधना''।

यह नाम कदाचित किसी भी भारतीय के लिए अपरिचित नहीं है क्योंकि शत्रु मर्दन एवं आपत्ति निवारक देवी के रूप में तो इनका सभी वन्दन करते हैं।

मेरे मानस में एक लम्बे समय से यह इच्छा थी कि अपने पाठकों के समक्ष इस तीव्र शत्रुहन्ता, दारिद्रय हन्ता एवं श्री, समृद्धि दाता देवी की साधना का वह मार्ग स्पष्ट करूं जो जटिल न हो एवं सामान्य जन भी लाभान्वित हो सकें। यद्यपि यह एक अत्यन्त तीव्र साधना है और मात्र कौतुहल वश या अल्पज्ञान के आधार पर, बिना योग्य गुरु के निर्देशन व सतत् निरीक्षण के इस साधना में भूलकर भी नहीं बैठ जाना चाहिए क्योंकि इस तरह की दशा में बहुधा साधक विक्षिप्त होते देखे गये हैं, जिन्हें बड़ी कठिनाई से वापस सामान्य अवस्था में लाया जा सका। इस साधना के कुछ नियम हैं जो इस साधना की सफलता के आधार हैं एवं इनकी परिपालना दृढ़ता से होनी ही चाहिए . . .

१. इस साधना में बैठने से पूर्व मन में दृढ़ संकल्प हो, मात्र कौतूहल अथवा आजमाने की दृष्टि से बैठना उचित नहीं। इसके पश्चात, योग्य गुरु का पूर्ण आर्शीवाद, निर्देश एवं निरीक्षण तो हो ही।

२. साधना काल में ब्रह्मचर्य धर्म का दृढ़ता से पालन हो और पवित्रता का विशेष ध्यान सदैव रखें।

३. इस साधना में पीले रंग का विशेष महत्व है। देवी बगला मुखी का एक नाम श्री पीताम्बरी शक्ति भी है। साधक पीली धोती पहने, ऊपर पीला ही वस्त्र ओढ़े। उसका आसन पीला हो एवं सामने पीले वस्त्र पर ही देवी जी का यंत्र एवं चित्र स्थापित करें। अपने साधना कक्ष को भी पीला पोतें।

उज्जैन स्थित सिद्धेश्वरी मंदिर : जो बगला की ही प्रतिरूप है

४. साधना काल में दीपक में जिस घी का प्रयोग करें वह यथा संभव पीली गाय का हो। जिस रूई का प्रयोग हो उसे पहले पीले रंग में रंग कर सुखा लें।

५. भोजन नित्य एक समय दोपहर में ही हो एवं उसमें भी बेसन का कोई एक व्यंजन कम से कम अवश्य हो।

६. साधक दिन में कदापि निद्रा न ले एवं रात्रि में भी मंत्र जप के पश्चात भूमि शयन करें।

७. साधक दिन में भी व्यर्थ के वाद विवादों, हंसी मजाक में स्वयं को न उलझायें।

८. साधना काल अर्थात मंत्र जप का समय रात्रि दस बजे से प्रातः चार के मध्य ही शास्त्र सम्मत माना गया है।

९. साधना प्रारम्भ करने से पूर्व अपने गुरुदेव से सम्पर्क करें प्रामाणिक यंत्र चित्र प्राप्त कर लें एवं ध्यान रखें कि बगला मुखी मंत्र का जप केवल हल्दी की माला से ही होता है।

इस साधना में प्रामाणिक एवं सही ढंग से सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठित किये गये यंत्र का ही सर्वाधिक महत्व है। प्रख्यात तंत्र वेत्ता एवं योगी श्री त्रिजटा अघोरी का मत है कि जिस व्यक्ति के घर में यह यंत्र स्थापित हो या जिस व्यक्ति की भुजा पर यह यंत्र बंधा हो उस पर कभी भी शत्रु हावी नहीं हो सकते, वह न जहर से मर सकता है, न उस पर आक्रमण से सफलता प्राप्त हो सकती है, और न ही उसकी अकाल मृत्यु हो सकती है। इसे यंत्र ही नहीं महा यंत्र की संज्ञा दी गयी है। स्वदेशी ही नहीं विदेश के तंत्र मर्मज्ञों ने भी इसकी महत्ता को परखा है और लोहा माना है। ब्रिटेन के प्रसिद्ध तंत्र विशेषज्ञ श्री समरफील्ड ने यह यंत्र सिद्ध कर एवं इसका प्रभाव देखकर कहा था कि पूरे विश्व की ताकत भी इस यंत्र से टक्कर लेने में असमर्थ है, असहाय है। इसके निर्माण के विषय में तंत्र शास्त्रों में जो स्पष्ट किया गया है। उससे स्पष्ट होता है यह कितना जटिल एवं पेचीदा कार्य है, फिर इस पर पूजन प्रयोग, संजीवनी मुद्रा के साथ प्राण प्रतिष्ठा कर एक लाख अथवा पांच लाख मंत्र जप कर सिद्ध किया जाता है।

भगवती बगलामुखी की साधना करते हुए पूज्य गुरुदेव

साधना काल में चने की दाल से यंत्र बनाने का विधान है, किन्तु ताम्र पत्र अथवा रजत पत्र पर अंकित यंत्र ही उपयोगी माना गया है एवं वही स्थायी भी रहता है।

नीचे की पंक्तियों मैं वह विधान स्पष्ट कर रहा हूं जो संक्षिप्त, प्रामाणिक गोपनीय और सर्वथा दुर्लभ है।

विनियोग

अस्यश्री ब्रह्मास्त्र-विद्या बगला मुखी नारदऋषये नमः शिरसि त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे। श्री बगलामुखी देवतायै नमो हृदये। ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये। शक्तये नमः पादयोः। ॐ नमः सर्वांगे। श्री बगलामुखी देवता प्रसाद सिद्धयर्थे न्यासे विनियोगः।

आवाहन

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां मुख स्तम्भिनी सकल मनोहारिणी अम्बिके इहागच्छ सन्निधिं कुरु सर्वार्थं साधय साधय स्वाहा।

ध्यान

सौवर्णमनसंस्थितः त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् हेमावांग रुचि शशांक मुकटां सच्चम्पक स्रग्युताम्। हस्तै मुदगर पाश वज्ररिसनाः सम्बिभ्रती भूषणै व्याप्तांगी बगलामुखी त्रिंजगतां संस्तम्भिनी चिन्तयेत्।

अब मैं देवी बगला मुखी का अपने पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त वह दुर्लभ मंत्र स्पष्ट कर रहा हूं जिसके विषय में "मंत्र महार्णव" जैसे ग्रन्थ में वर्णन आया है कि मात्र इसके स्मरण से प्रचण्ड पवन को भी स्थिर किया जा सकता है। इसमें कोई अतिशयोक्ति भी नहीं है।

वह मंत्र इस प्रकार है

ॐ ह्लीं बगलामुखीं सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं फट्।।

इस प्रकार से यह साधना संपन्न होती है। यह साधना जीवन का एक सौभाग्य होती है, क्योंकि इसमें काली, कमला व भुवनेश्वरी साधना भी समाविष्ट है। सफलता प्राप्त करने वाले साधक पर देवी बगला मुखी अपनी सोलह शक्तियों सहित कृपालु हो जाती है, जिससे उसके जीवन के विभिन्न दोष, बाधाएं स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। यदि कोई मात्र बगलामुखी यंत्र ही धारण करता है तो भी उसे एक ऐसा विशिष्ट सुरक्षा कवच प्राप्त होता है जो चौबीसों घंटे उसकी सुरक्षा करता है। देवी बगलामुखी का एक नाम वल्गामुखी देवी भी है और सिद्ध साधक के चारों ओर एक वल्गाचक्र निरंतर घूमता व सुरक्षा करता है जिसे कोई अन्य नहीं देख सकता। जिन्हें बड़े प्रतिष्ठान संभालने हों, जिन्हें महत्वपूर्ण पदों पर रहना हो जिन्हें नेतृत्व का भार प्राप्त हो उनके लिए तो आज के युग में यह दैवी सौगात है। मेरी जानकारी में कई ऐसे विशिष्ट व्यक्ति उद्योगपति, बड़े व्यापारी, राजनेता, अभिनय के क्षेत्र में संलग्न व्यक्ति है जो इस यंत्र को गोपनीय रूप से अपनी भुजा पर धारण किये ही रहते है। मैंने अपने अनुभव से पाया है कि नित्य प्रति प्रातः स्नान कर इस मंत्र की एक माला का जप करना भी उस दिन के लिए सुखद व कल्याणकारी रहता है।

क्या आप पत्रिका के स्थायी सदस्य हैं

यदि नहीं तो

आज ही पत्रिका शुल्क मनीऑर्डर या ड्राफ्ट भेजकर वार्षिक सदस्य बन जाइये.......इससे

- ❑ आपको निश्चित रूप से घर बैठे पत्रिका हर माह प्राप्त होती रहेगी।
- ❑ आप हमारी गौरवशाली पत्रिका के वार्षिक सदस्य बन सकेंगे।
- ❑ समय-समय पर जो उपहार मुफ्त में पत्रिका सदस्यों को प्राप्त होते है वे प्राप्त होते रहेंगे।

और इस पत्रिका प्राप्ति के एक माह के भीतर-भीतर पत्रिका सदस्य बनने वालों को

अष्ट लक्ष्मी-महायंत्र

शुद्ध ताम्र पत्र पर अंकित

२"x२"

मुफ्त

- ❑ आप आज ही हमें मात्र पत्र द्वारा पत्रिका सदस्य बनने की इच्छा लिख कर पत्र भेज दें।

हम आपको जनवरी, ९३ से अब तक के सभी अंक व उपहार १६२/ रु. की वी.पी. से भेज देंगे- १५०/रु. पत्रिका शुल्क व १२/रु. डाक व्यय तथा आगे भी नियमित रूप से हर माह निष्ठापूर्वक पत्रिका भेजने का वायदा करते हैं।

सम्पर्क :

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान : हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राजस्थान)· टेलीफोन-०२९१-३२२०९

मंत्र तंत्र यंत्र पत्रिका

को चाहिए

लेखक, पत्रकार, फोटोग्राफर

अग्रणी आध्यात्मिक पत्रिका- मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान (हिन्दी) को ऐसे **साधकों-लेखकों की आवश्यकता है,** जो तंत्र, मंत्र, योग, साधना आदि के बारे में प्रामाणिकता के साथ लिखकर भेज सकें।

- ❑ **आवश्यकता है** ऐसे फोटोग्राफरों की, जो पत्रिका के कवर के लिये योगियों, साधकों, साधिकाओं के चित्र भेज सकें।
- ❑ **आवश्यकता है** ऐसे **पत्रकारों** की, जो स्थानीय तांत्रिकों योगियों साधुओं, शिविरों, मेलों आदि के बारे में चित्र सहित विवरण लिखकर भेज सकें।
- ❑ **आवश्यकता है** ऐसे लोगों की, जो अपने क्षेत्र और आस-पास की घटनाओं के बारे में लिखकर भेज सकें, जिनमें लेखन प्रतिभा हो।

अपने सम्पूर्ण परिचय और फोटोग्राफ के साथ आवेदन-पत्र पन्द्रह दिनों के अन्दर-अन्दर निम्न पते पर भेजें, लिफाफे के ऊपर **विश्रुत** अवश्य लिखें।

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान (हिन्दी)
३०६ कोहाट एन्क्लेव
पीतमपुरा के पास
नई दिल्ली
टेलीफोन : *०११-७१८२२४८*

अटूट धन प्राप्ति का बेजोड़

मंत्र

भुवनेश्वरी-साधना

इस लेख को प्रारम्भ करते समय सर्वप्रथम मैं अपना परिचय देना आवश्यक समझता हूं। मैं एक प्राध्यापक हूं और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अध्ययन को ही अपने जीवन यापन का साधन बनाया था। अध्यापन मेरा व्यवसाय नहीं था और जीवन के उदात्त मूल्यों को ध्यान में रखते हुए एवं अपनी प्रकृति को समझते हुये ही इस क्षेत्र में प्रवेश किया था। मेरी इच्छा थी कि मैं जहां स्वयं को निंरतर ज्ञान से ओत प्रोत रख ,सकूंगा वहीं आने वाली पीढ़ियों को कुछ प्रदान कर उस अनिर्वचनीय सुख का अनुभव कर सकूंगा जो किसी को कुछ प्रदान करने में होती है। जीवन के प्रारम्भिक वर्ष तो सामान्यत: सुखचैन से व्यतीत हुये क्योंकि मेरी जीवन शैली साधारण थी और पारिवारिक दायित्वों का बोझ नहीं के बराबर ही था। जब मैंने दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया तब भी आदर्शों की उच्च भावभूमि में रहने के कारण उन बातों को उपेक्षा ही करता रहा जो मेरी पत्नी नित्य प्रति के जीवन को लेकर करती थी। धीरे-धीरे परिवार का विस्तार हुआ और जीवन की समस्याऐं कठिन होने लगीं। इन्हें लेकर अब मैं उदासीन नहीं रह सकता था। मैंने समस्त प्रयास करके देखे किंतु आय का कोई स्त्रोत नहीं मिला। इन्हीं सब परिस्थितियों में मैं चाहते हुये भी अपने छात्रों पर ध्यान नहीं दे पा रहा था जब कि मैं जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उन्हें रुटीन पाठ्यक्रम के अतिरिक्त भाँति भाँति से ज्ञान देकर उनका जीवन परिपूर्ण बनाना ही अहोभाग्य मानता था। इसका कारण था वह आर्थिक कठिनाइयां जिनके कारण मेरा मन हर समय भटकता ही रहता

भगवती भुवनेश्वरी

था। पत्नी का उदास बुझा हुआ चेहरा, जो कि यद्यपि मुझसे कुछ नहीं कहती थी किन्तु उसकी व्यथा तो चेहरे से ही परिलक्षित होती थी। मेरे दो पुत्र एवं एक पुत्री जो कि इस घोर भौतिक युग में अपने सहपाठियों के साथ ताल मेल न बैठा पाने के कारण एक प्रकार के दबे व्यक्तित्व को लेकर बड़े हो रहे थे, और अध्यापन का वर्षों का अनुभव मुझे उनकी मनः स्थिति के बारे में बिना उनके कुछ कहे सब कुछ स्पष्ट कर देता था। मैं अत्यन्त उदास हो जाता था, यदि ये इसी प्रकार जीवन जीते रहे तो यह कब उन संस्कारों को प्रस्फुटित कर सकेगें जो मैंने उनके बचपन में उनमें रोपे थे। यूं कहा जाय कि मानों स्वस्थ जाति के पौधे बिना जल के जीवन की धूप में कुम्हला गये थे, और मेरी व्यथा उन सामान्य गृहस्थों से कहीं अधिक थी जो कि अपने पुत्रों को खाने पीने व पहनने की वस्तुएं प्रदान करने के बाद अपने कर्तव्यों की इतिश्री सी मान लेता है।

मैं बिना कुछ सोचे सीधा जोधपुर पूज्य गुरुदेव के चरणों में जा पहुंचा और उनसे अपनी दरिद्रता के बारे में निवेदन किया। काफी दिनों की इन्तजार और परीक्षा के बाद मुझे भुवनेश्वरी साधना करने की आज्ञा प्रदान की।

मैंने पूज्य गुरुदेव के बताए अनुसार भुवनेश्वरी साधना आरम्भ की जिसमें मुझे मूल मंत्र "ह्रीं" के एक लाख जप करने थे। और ये जप प्रतिदिन एक विशेष संख्या में करने थे, मैं सामान्य पूजा पाठ तो प्रतिदिन करता था, किन्तु प्रतिदिन एक लम्बी अवधि तक बैठकर जप करना मुझे अटपटा लग रहा था। फिर मैंने एक दिन जो कि सोमवार था, प्रातः अपने पूजा कक्ष को साफ धोकर सफेद ऊनी आंसन बिछा कर और सामने लकड़ी की छोटी सी चौकी पर भी सफेद ही वस्त्र बिछाकर उस भुवनेश्वरी देवी का यंत्र एवं चित्र स्थापित कर स्वयं भी सफेद धोती पहन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर आसन ग्रहण किया। घी की अखण्ड ज्योति भी स्थापित कर दी। मेरा लक्ष्य था कि प्रतिदिन सौ माला जप कर के मैं दस दिनों में लक्ष्य पूर्ण कर लूंगा। मैंने यह जप पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रदत्त स्फटिक माला से करना प्रारम्भ किया। प्रथम तीन दिन तो जप करता रहा और कोई उल्लेखनीय बात नहीं रही सिवाय इसके कि मैं जब जप करके उठता था तो मेरा मन विशेष प्रफुल्लित रहता था। चौथे दिन कुछ दिव्यता सी अनुभव हुयी जिसे मैं अपनी अज्ञानता वश पूर्णरूपेण समझ न सका। बस ऐसा लगा मानों कोई दिव्य प्रकाश यहां क्षण भर रहा हो और विलीन हो गया हो। पांचवे दिन इसी अनुभव को और अधिक देर तक अनुभव किया तथा छठें दिन तीव्र सुगन्ध स्पष्ट रूप से अनुभव की। मेरा अर्न्तमन अत्यधिक प्रफुल्लित था और लग रहा था मानों यह सब साधना में सफलता के आयाम हैं। इसके पश्चात क्रमशः सातवें, आठवें, नवें व दसवें दिन भी एक श्रेष्ठ मनः स्थिति मैं ही व्यतीत हुए। यद्यपि तुरंत मुझे कोई आर्थिक समाधान नहीं मिला था किन्तु मानसिक स्थिति में जो सुधार हुआ था वह मेरे लिए उत्साहप्रद था। पूज्य गुरुदेव ने कहा था कि संभव है कि पूर्व जन्म के किन्हीं दोषों के कारण पहली बार में सफलता न मिले तो हतोत्साहित न होना एवं इसी साधना को पुनः करना। मेरा मन इतना आह्लादित हो चुका था कि मैं पुनः साधना में बिना किसी संकोच या हील हवाले के बैठ गया। दूसरी बार साधना प्रारम्भ करते ही पहले दिन का मंत्र जप पूरा करके उठा ही था कि मेरे एक दूर के रिश्तेदार जो कि एक बीमा कंपनी में उच्च पदस्थ अधिकारी है आये और सामान्य बातचीत के बाद कहने लगे कि उनकी इच्छा है कि वह मेरे सबसे बड़े पुत्र को अपने साथ रखकर काम सिखाएं। उन्होंने बात को स्पष्ट करते हुए बताया कि वास्तव में कार्य तो उन्हीं को करना है किन्तु वे उच्च पद पर होने के कारण ऐसा करने में असमर्थ है और किसी विश्वसनीय व्यक्ति को ही साथ रखना चाहते है। वे अपनी बात कह रहे थे और मैं मन ही मन मुस्करा रहा था। पूज्य गरुदेव

पूज्य गुरुदेव शिष्यों को साधना सिखाते हुए

को कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा था। मैंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी।

मैं इस सफलता से उत्साहित होकर और अधिक प्रगाढ़ता से साधना में संलग्न हो गया। मेरे सामने जो आर्थिक समस्या विकराल रूप धारण किए खडी थी उसकी तीक्ष्णता में कुछ तो कमी आयी। मैं दूसरे दिन की साधना करने के पश्चात उसका जप समर्पण पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में करने के पश्चात आंखे बन्द करके स्वानन्द में चुपचाप लीन बैठा था तो ऐसा लगा मानों कोई कान में कह रहा हो "तू अपनी कोचिंग क्लास क्यों नहीं खोल लेता" मैंने हड़बडाकर आंखें खोली किन्तु सामने कोई नहीं था मैं इस अवस्था में भी नहीं था कि समझ सकूं कि यह स्वर स्त्री स्वर था कि पुरुष स्वर। किन्तु मेरे मन में एक विचार श्रृंखला सी चल पड़ी। सचमुच इस बात में महत्व था, क्योंकि मेरा छोटा पुत्र एम.ए करने के बाद और वह भी अच्छे अंको के साथ, एक साधारण से प्राईमरी स्कूल में अध्यापन का कार्य नहीं पा सका था। मैंने उसी क्षण साधना कक्ष से निकल कर उसे बुलाया एवं उससे यह बात कही। वह अत्यन्त प्रसन्नता से बोला कि विचार उसका भी यही था किन्तु वह मेरी अप्रसन्नता के भय से नहीं कह पा रहा था। मैंने अपनी पत्नी से विचार विमर्श किया उसकी भी सहमति थी। प्रारम्भ में ऐसा करने में अर्थ की समस्या थी किन्तु यह समस्या भी तब सहज में हल हो उठी जब मैंने अपने बड़े पुत्र को अपना निर्णय बताया, उसने बताया बीमा व्यवसाय में जुड़े मेरे उन रिश्तेदार के परिचय अत्यन्त व्यापक हैं और नगर के श्रेष्ठ व्यवसायियों से है। क्या पता कहीं से बिना ब्याज के भी ऋण प्राप्त हो जाय, मेरा आश्चर्य से मुंह खुला रह गया कि क्या जीवन में इस सहजता से भी मार्ग मिल सकते हैं।

भगवती भुवनेश्वरी साधना तो जीवन की अद्वितीय साधना है, जिसकी तुलना हो ही नहीं सकती। यह एक ऐसी साधना है जिसके कई गुप्त रहस्य हैं जो गुरुदेव के द्वारा ही ज्ञात हो सकते हैं ऐसा हो ही नहीं सकता, कि भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की जाय, और दरिद्रता घर में रहे . . . यह तो तीव्र, तुरन्त प्रभाव युक्त एवं अजस्र धनवर्षा से संबंधित साधना है।

तीसरे दिन साधना करते समय मेरी आंखों के समक्ष क्षण भर के लिए कोई दिव्य नारी मूर्ति आयी जिसने विविध आभूषण धारण कर रखे थे, और जिसके शरीर से अलौकिक सुगन्ध भी आ रही थी। उसी प्रकार चौथे दिन भी वही दिव्य नारी मूर्ति सामने आयी आज उसके चेहरे पर मुस्कान स्पष्ट दिख रही थी मानो मुझे आश्वस्त कर रहीं हो कि मेरी साधना आराधना सही चल रही है। पांचवे दिन मेरे बडे पुत्र ने यह सुखद समाचार दिया कि उसके प्रयत्न सफल रहे हैं और शहर के एक प्रतिष्ठित व्यवसायी सहयोग के लिए तैयार हैं। साथ ही उनके पूर्वजों का विशाल पैतृक भवन भी कालेज के रुप में निःशुल्क प्रयोग में लाया जा सकता है। मैंने उन व्यवसायी महोदय से उसी दिन जाकर बातचीत की। यह सुखद आश्चर्य था कि वे मेरी समस्त बातों से सहमत थे। उसके पश्चात मैंने शेष दिनों की साधना भी अत्यंत श्रेष्ठ व आनन्ददायक स्थिति में सम्पन्न की और आज मेरा बडा पुत्र बीमा कम्पनी में एक उच्चपद पर है। मेरा छोटा पुत्र मेरे अवकाश ले चुकने के बाद विद्यालय का कार्यभार कुशल रूप से संभाल चुका है और पर्याप्त धन के साथ ही साथ उसकी शहर में एक प्रतिष्ठा है। मेरी पुत्री ने भी मुझसे प्रेरणा लेकर मां भुवनेश्वरी की साधना की थी और अनेक दिव्य अनुभूतियों के साथ उसे अपने अभीष्ट में सफलता मिली। वह भुवनेश्वरी साधना के माध्यम से चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में जाने की इच्छुक थी क्योंकि पूज्य गुरुदेव ने मुझसे बातचीत के मध्य स्पष्ट किया था कि भुवनेश्वरी साधना प्रकारान्तर से सरस्वती साधना ही है मेरी पुत्री इसी बात को मुझ से सुनकर प्रेरणा पाकर एक कुशल चिकित्सक बनने में सफल हुयी है। वह इस बात का पूरा श्रेय भुवनेश्वरी साधना को ही देती है एवं मां भगवती भुवनेश्वरी की साधना उसके दैनिक जीवन का एक अंग हो चुकी है। मैं भी मां भगवती के इस स्वरूप का नित्य प्रति चिन्तन मनन करने में अपनी वृद्धावस्था का अधिकांश समय व्यतीत करता हूं। उनकी ही कृपा से मेरा भौतिक जीवन इतना परिपूर्ण हो सका है कि मैं स्वयं का कालेज खोलकर जहां अपने चिन्तनों के अनुसार श्रेष्ठ वातावरण बना कर एक तृप्ति का अनुभव कर सका हूं। वहीं व्यक्तिगत जीवन में अनेकानेक आध्यात्मिक अनुभूतियों से तृप्त व दिव्य बन सका हूं। मैं हृदय से पूज्य गुरुदेव का कृतज्ञ हूं और चिरऋणी हूं। ●

रोग निवारण की मंत्र साधना

यह ध्यान रहे कि मंत्र साधना में मंत्र और रोग का आपस में कोई संबंध नहीं है, संबंध है मंत्र और शरीर का। जब शरीर के किसी भाग में कोई रोग हो जाय तो मंत्र क्रिया द्वारा उस भाग को पुष्ट बनाने एवं शरीर में रोग से लड़ने की प्रतिरोध करने की शक्ति उत्पन्न की जाती है, और जब यह शक्ति पनपने लगती है तो रोग अपने आप भागने लगता है। इसी कारण कई बार मंत्र साधना द्वारा रोग को जड़ मूल से समाप्त करने में समय अवश्य लगता है लेकिन यदि कोई व्यक्ति धैर्य एवं विश्वास के साथ संपन्न करें तो रोग अवश्य दूर हो जाता हैं।

अनुभव सिद्ध विशेष मंत्र

रोग के कारण जब जीवन पर बन आएं और कष्ट बढ़ता ही चला जाय तो व्यक्तिको महामृत्युंजय विधान संपन्न करना चाहिये। इसमें "महामृत्युंजय यंत्र" को स्थापित कर उसके आगे जल रखकर महामृत्युंजय मंत्र से अभिमंत्रित कर रोगी को पिलाने से अवश्य ही आराम पहुंचता है।

सम्पुट महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिंपुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।।

इसके अतिरिक्त साधक लघु महामृत्युंजय मंत्र का जप भी स्वयं कर सकते हैं।

लघु महामृत्युंजय मंत्र

ॐ हौं जूं सः।

ज्वर शांति हेतु

यदि नित्य बुखार आ जाता है, अथवा एक दिन छोड़कर एक दिन बुखार आता है तो रोगी को "रोग निवारण यंत्र" धारण कराकर निम्न मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

मंत्र

ॐ नमो भगवते रूद्राय नमः क्रोधेश्वराय नमो ज्योतिः पतगांय नमो नमः सिद्धिरूद्र आजापयति स्वाहा।।

इस मंत्र का सात बार उच्चारण करते हुए प्रत्येक बार हाथ में पीली सरसों लेकर रोगी के शरीर पर फेंकनी चाहिये। सात दिन में ही ज्वर निवृति हो जाती है।

शारीरिक पीड़ा दोष निवारण हेतु

"राम रक्षा यंत्र" धारण कर निम्न मंत्र का प्रतिदिन ११ माला पाठ कर देने से किसी भी प्रकार की शारीरिक पीड़ा हो, चाहे वह वात, पित्त, कफ किसी से संबंधित हो, निश्चय ही दूर हो जाती है।

मंत्र

ॐ क्लीं रीं हुं फट्-रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम। रोगान् नाशाय मे क्षिप्रं श्रियं दास्य देहि में ॐ क्ली रां हुं फट्।।

२१ दिनों तक इसका निरन्तर प्रयोग करना आवश्यक है, यदि बीच में आराम भी हो जाय तो भी प्रयोग को अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए।

बालकों की स्वास्थ्य रक्षा हेतु

बच्चों की रोग से लड़ने की प्रतिरोधात्मक शक्ति कम होती है, और कई बार माँ-बाप की गल्तियों के कारण बच्चे जन्म से ही बीमार रहते हैं। इस कारण बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान विशेष रुप से रखना चाहिये।

बच्चों को "बाल रक्षाकारक यंत्र" गले में पहनाया जा सकता है, यह ताबीज नुमा यंत्र होता है, जो कि मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होता है। इससे बच्चों के शरीर पर रोग का आक्रमण नहीं होता है।

यह यंत्र मंगलवार या रविवार को ही धारण कराया जाना चाहिये।

रोग एवं बीज मंत्र

बीज मंत्रों का नित्य प्रति जप करने से शरीर को विशेष शक्ति प्राप्त होती हैं।

"ह्रीं" बीज मंत्र के जप से फेफड़े, गले और हृदय को शक्ति प्राप्त होती है।

"ह्रूं" बीज मंत्र के जप से पेट, यकृत, बड़ी आंत एवं गर्भाशय को शक्ति प्राप्त होती है।

"ह्रां" बीज मंत्र के जप से गले एवं मस्तिष्क को विशेष लाभ पहुंचता है।

"ह्रूं" बीज मंत्र के जप से मूत्र नलिका एवं उससे संबंधित अंगों को विशेष शक्ति प्राप्त होती है।

"ह्रौं" बीज मंत्र के जप से पेट एवं पेट से संबंधित समस्त व्याधियां शांत होती हैं।

उपरोक्त बीज मंत्र का जप प्रातः खाली पेट, स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण कर करना चाहिये। ●

हम खुदा के कभी कायल न थे।
आपको देखा तो खुदा याद आया।।
-चन्द्रसिंह पहल

जैन तंत्र साधना

सर्व सिद्धि दायक

दुर्लभ मंत्र

जैन साहित्य में तंत्र विद्या विस्तार से वर्णित है। जैनों के उच्चकोटि के योगी, यति और साधु, तंत्र के अद्वितीय आचार्य बने हैं। पिछले दिनों जैन साहित्य की हस्तलिखित पाण्डुलिपि में दुर्लभ तंत्र प्राप्त हुए हैं, जो अपने-आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

तंत्र का तात्पर्य हैं तुरन्त प्रभाव होना, और इस दृष्टि से जैन साहित्य में तंत्र का विवरण-वर्णन विस्तार से प्राप्त होता है। मारण, मोहन वशीकरण, उच्चाटन आदि में संबंधित सैकड़ों तंत्र जैन साहित्य में प्राप्त हैं।

पिछले दिनों अमेरिका यात्रा में एक श्रेष्ठि जैन कस्तूरीचंद जैन के यहां दुर्लभ हस्तलिखित प्रति देखी, जिसमें तंत्र के कुछ विशिष्ट प्रयोग दिए हुए थे, उसमें निम्न तंत्र का विस्तार से वर्णन दिया हुआ था और यह बताया गया था कि यह तंत्र अपने-आप में इस प्रकार से निर्मित है कि इसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को सारी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकता है। उसमें तंत्र की विधि निम्न प्रकार से दी हुई थी।

पंचणमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमों उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं

तंत्र प्रयोग

अठारह कार्यों में इस तंत्र का प्रयोग यिा जा सकता है-

१. घर में सुख-शान्ति के लिए, २. बीमारी दूर करने के लिए, ३. व्यापार वृद्धि के लिए, ४. पूर्ण आयु प्राप्ति के लिए, ५. दुर्घटना आदि के बचाव के लिए, ६. आर्थिक उन्नति के लिये, ७. योग्य पुत्र प्राप्ति के लिए, ८. राजद्वार में सम्मान प्राप्ति के लिए, ९. शत्रु मारण के लिए, १०. धार्मिक कार्य सम्पन्नता के लिए, ११. विदेश यात्रा के लिये, १२. प्रमोशन, मुकदमे में सफलता आदि के लिए, १३. भाग्योदय के लिये, १४. अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते कि लिए, १५. कलह नाश के लिए, १६. समस्त प्रकार की उन्नति एवं मानसिक शांति के लिये।

दुर्लभ गोपनीय जैन तंत्र

ॐ णमो अरिहंताणं णमो ह्रां

ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः

अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा

ॐ ह्रीं अर्हं

असि अऊ सा ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।१।।

ॐ णमों अरिहंताणं णमो जिणं ह्रां।।२।।

णमो परमोहिजिणाणं ह्रां।।३।।

णमो सब्वोहिजिणाणं ह्रां।।४।।

णमो अणंतोहिजिणाणं।।५।।

णमो कुट्ठबुद्धीणं।।६।।

णमो बीजबुद्धीणं।।७।।

णमो पदाणुसारीणं पदं:।।८।।

णमो संभिन्नसोयाण।।९।।

णमो पत्तेययुद्धाणं।।१०।।

णमो ऊं सयंबुद्धाणं।।११।।

णमो बोहिबुद्धाणं अन्तरगृहीते श्रृते एक संघो भवति।।१२।।

णमो उन्नुमईणं।।१३।।

णमो विउलमईणं बहुश्रृतत्वम्।।१४।।

णमो दसपुव्वोणं।।१५।।

णमो चऊदसपुव्वीणं।।१६।।

णमो इठ्टंगनिमित कुसलाणं।।१७।।

णमो विउव्वणरिद्धिपत्ताणं।।१८।।

प्रयोग विधि

प्रात:काल उठकर स्नान कर सफेद धोती पहनकर तथा सफेद धोती ओढ़ लें, फिर भगवान महावीर स्वामी की मूर्ति के सामने दीपक व अगरबत्ती जलाकर निम्न स्तोत्र मंत्र का पाठ बार-बार करें। पाठ से पूर्व और अन्त में तीन-तीन बार "णमोंकार मंत्र" का उच्चारण करें। इस प्रकार यदि नित्य अपनी पूजा में यह प्रयोग शामिल कर लें, तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रह सकता।

ऊपर लिखित जैन तंत्र का पाठ जीवन की पूर्णता के लिए सौभाग्यदायक हैं।
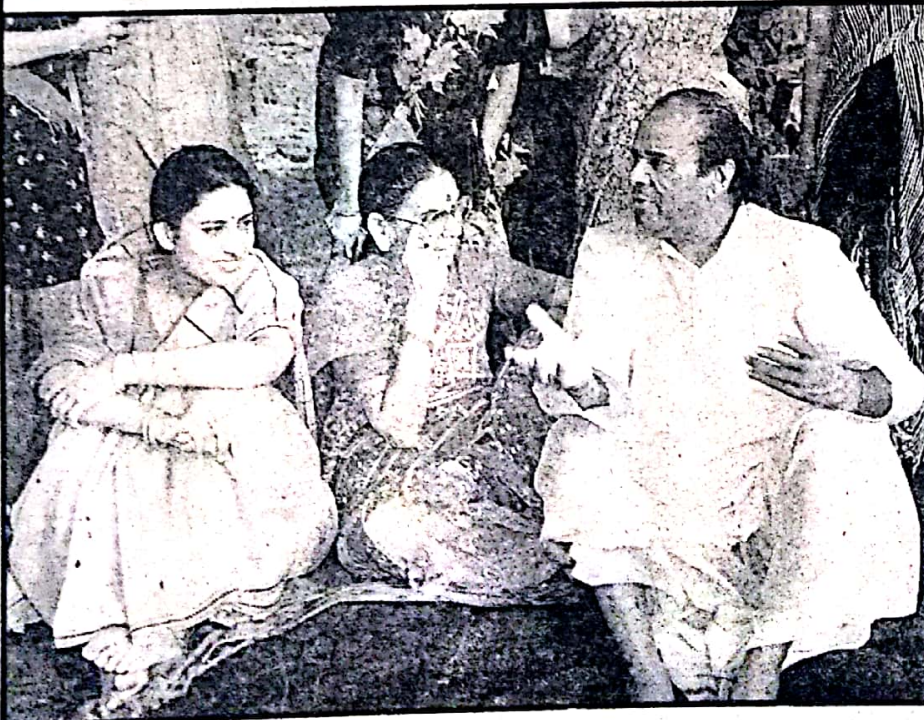
पूर्ण समृद्धता हेतु मंत्र

णमो एवज्जायाणं पंच णमो कारा महावीर बलाय गृहे णमो समृद्धिं धनं देहि सम्मि श्रयाणं पंच पदा णुसरिणं अणंतो महावीर णमो।

एक अलौकिक लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र जो ब्रह्माण्ड की ध्वनियों से निर्मित हुआ

अमावस्या का पर्व पूर्ण "विजय पर्व" है, इस पर्व का तात्पर्य दरिद्रता पर विजय, कष्टों पर विजय, अभावों, परेशानियों और पीड़ाओं, दुःख, दैन्य और दरिद्रता पर विजय है। यह पर्व ऐसा है जिसे पूरा भारतवर्ष एक साथ उमंग और उल्लास के साथ मनाता है। विदेश में भी इस पर्व को विजय पर्व के रूप में मनाते हैं। अफ्रीका के कुछ कबीलों में इस दिन दरिद्रता को आटे की मूर्ति बनाकर विशेष मंत्रों से काटकर नदी में प्रवाहित करने की परम्परा है। चीन में अमावस्या के दिन घास-फूस का पुतला बनाया जाता है, जो कि भूख और दुःख का प्रतीक होता है, और फिर उस पर कुछ मंत्र पढ़कर आग लगा देते हैं, जिसका तात्पर्य है कि हम मंत्रों से अपने जीवन की भूख और दरिद्रता को मिटा रहे हैं। मारिशस में यह पर्व अत्यन्त उल्लास के साथ मनाया जाता है, और पांच दिनों तक लक्ष्मी की विशेष साधना संपन्न की जाती है। तिब्बत के बौद्ध मठ तो तांत्रिक क्षेत्र में विश्व विख्यात हैं, वे पांच दिनों तक विशिष्ट साधना संपन्न करते हैं, और अपने मठों को अद्वितीय धन सम्पन्न बना देते हैं।

तिब्बती तंत्र साधना

मंत्र-तंत्र साधना भारतवर्ष की जितनी प्राचीन है, तिब्बत में भी उतनी ही प्राचीन है। तिब्बत के अधिकतर लामा तो इस क्षेत्र में आज भी अद्वितीय हैं। उन्होंने योगबल से और तंत्र के माध्यम से जो कुछ प्राप्त किया है, वह अपने-आप में अद्वितीय है। उसकी तुलना तो हो ही नहीं सकती।
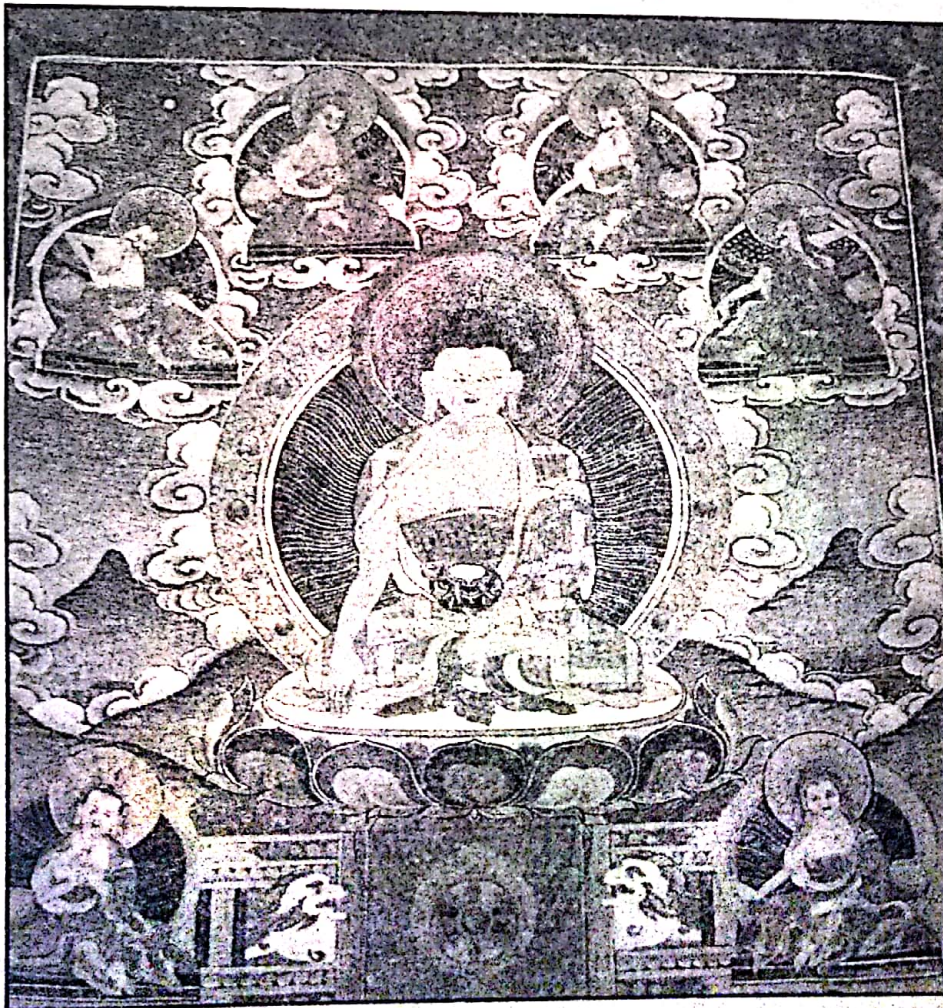
तिब्बत किसी समय भले ही छोटा सा देश रहा हो, परन्तु वहां बौद्ध मठ अपने-आप में पवित्र, दिव्य और उच्चस्तरीय रहे हैं। लक्ष्मी को पूर्णता से प्राप्त करें और घर में स्थायी रूप से निवास कराएं, इसके लिए उन्होंनें तंत्र की विशेष साधना पद्धति ढूंढ निकाली, जो अभी तक अपने आप में गोपनीय और दुर्लभ रही है। यह एक ऐसी साधना है, जिसके माध्यम से हमेशा के लिए दुःख, दैन्य और कष्ट समाप्त हो जाता है। यह एक ऐसी

साधना है, जिसके द्वारा लक्ष्मी से संबंधित पूर्वजन्म के दोष नष्ट हो जाते हैं, और यह एक मात्र ऐसी साधना है, जिससे घर में निरन्तर धन-धान्य, सुख सौभाग्य तथा ऐश्वर्य की वृद्धि होती रहती है।

राहुल सांकृत्यायन का नाम तो विख्यात है। उन्होंते तिब्बत के दुर्लभ मठों की यात्रा की और उनका एक मात्र उद्देश्य लक्ष्मी सिद्ध करने की उस विशिष्ट विधि को ढूंढ़ निकालना था, जिसके द्वारा घर में लक्ष्मी को स्थायित्व दिया जा सके, निरन्तर व्यापार वृद्धि हो सके, घर में सुख सौभाग्य बढ़ सके, जिसके द्वारा वह चंचल लक्ष्मी सदा के लिए घर में बनी रह सके, परन्तु राहुल जो को भी वह हस्तलिखित ग्रन्थ या साधना विधि का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सका, जो कि वह चाहते थे।

पिछले वर्ष मैं मानसरोवर की यात्रा पर था। मैं तो सन्यासी, फक्कड़-अलमस्त योगी रहा हूं। मुझे न रुपये-पैसे का लालच है, और न किसी प्रकार की चाह ही, परन्तु कालतवांग से आगे जाने पर इतने जोर का अंधड़ और तूफान आया कि मेरे साथ जो भार ढोने वाला तिब्बती था, वह मुझसे बिछुड़ गया और मैं अलग-थलग गिरता-पड़ता, एक किलो मीटर दूर छोटी सी पहाडी पर बने हुए बौद्ध मठ में जा पहुंचा। ल्हून बौद्धमठ की चर्चा पूरे तिब्बत और भारतवर्ष में है। सुनते थे कि यहां पर उच्चकोटि के ग्रन्थ भरे पड़े हैं, जो तंत्र साधना से संबंधित हैं यह संयोग ही था कि मैं इस तिब्बती मठ में जा पहुंचा। वहां के रक्षक ने मुझे देखा और जोरों के अंधड़ और तूफान को अनुभव कर मुझे अन्दर आने की स्वीकृति दे दी। मैं जब अन्दर पहुंचा, सर्दी के मारे मेरे दाँत किट किटा रहे थे और सारा शरीर सर्दी से थरथरा रहा था। उसने मुझे गर्म रजाई दी और याक पशु का दूध गर्म कर पीने के लिए दिया। इससे मेरी कंपकंपी कुछ दूर हुई और मैं चैतन्य हुआ।

तूफान आया तो ऐसा आया कि रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था, तीन दिन बीत गए। समय का कुछ पता नहीं चल रहा था। यद्यपि मैंने तंत्र साधनाएं सिद्ध कर रखी थीं और मुझे अपने जीवन में यह गर्व रहा है कि मैं स्वामी निखिलेश्वरानंद जी का प्रिय शिष्य रहा हूँ। उनके सानिध्य में ही मैंने तंत्र की कुछ ऐसी विशेष साधनाएं सिद्ध की थीं, जो मेरे जीवन की धरोहर हैं। उन्होंने ही एक बार चर्चा के दौरान बताया था कि तिब्बत के बौद्ध मठों में "अखण्डलक्ष्मी सिद्धि प्रयोग'' से संबंधित कोई प्रयोग था उन्होंने पांच सात बौद्ध मठों का जिक्र किया था, जिसमें ल्हून बौद्ध मठ का नाम भी था। यह संयोग ही था कि मैं इस आंधी तूफान में इस बौद्ध मठ में आ पहुंचा।

मेरे अत्यधिक अनुरोध करने पर और दो दिन तक तो सर्वथा भूख हड़ताल तथा जल का भी परित्याग कर देने पर मुझे ल्हून बौद्ध मठ के प्रधान लामा से मिलने का अवसर मिला। वास्तव में वह तंत्र के साक्षात स्वरुप थे और उनके पास, असीम सिद्धियाँ थी। मैंने उनसे तंत्र के संबंध में अपनी जिज्ञासाएं रखीं और तभी मुझे पूज्य गुरुदेव का कथन स्मरण हो आया कि शायद यह दुर्लभ साधना पद्धति इन लामा महोदय को ज्ञात हो। मैंने डरते-झिझकते इस गोपनीय विधि के बारे में चर्चा की, तो उन्होंने दो क्षण के लिए मेरे चेहरे की ओर ताका और फिर अन्दर से छोटी सी हस्तलिखित पुस्तिका मेरे सामने रख दी, जिसमें इस पद्धति का पूर्ण विवरण था।

साधना समय

यह साधना वर्ष में मात्र अमावस्या के दिन ही सम्पन्न की जा सकती है, और यह पांच दिनों की साधना हैं।

साधना मुहूर्त

यह पांच दिन की साधना है, जो अमावस्या के दो दिन पहले से प्रारम्भ होती है और अमावस्या के दो दिन बाद तक चलती है। इसके अलावा यह प्रत्येक वर्ष कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी से कार्तिक शुक्ल पक्ष तृतीया तक भी हो सकती है। इस अवधि में यह साधना संपन्न की जा सकती है।

साधना कौन करे

यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी अपने घर में सम्पन्न कर सकता है। इस साधना में नित्य केवल तीन घंटे देने होते हैं।

साधना विधि

प्रातःकाल उठकर स्नान कर सफेद आसन पर बैठकर पूर्व की ओर मुंह कर साधना संपन्न करना चाहिए। इस साधना में स्फटिक या हकीक माला का प्रयोग किया जाता है, इस माला की विशेषता यह होनी चाहिए कि इस माला का प्रयोग किसी अन्य साधना में नहीं किया हुआ हो। इस माला से केवल इसी साधना को संपन्न किया जा सकता है।

इसमें घी का दीपक और तेल का दीपक जलता रहना चाहिए। साधक स्वयं सफेद धोती और सफेद वस्त्र धारण करके बैठे और नित्य माला मंत्र जाप आवश्यक है। यह साधना प्रातःकाल या रात्रि को संपन्न की जा सकती हैं।

एक अद्वितीय साधना, जो तिब्बती लामाओं की श्रेष्ठ एवं दुर्लभ साधना है, जिसके माध्यम से उनके मठ हमेशा धन धान्य एवं द्रव्य से सम्पन्न एवं पूर्ण रहते हैं . . . एक दुर्लभ परन्तु सरल साधना एक महत्वपूर्ण . . . परन्तु पूर्ण सफलता दायक साधना

साधना काल में साधक के लिए यह जरूरी नहीं है कि एक समय भोजन करे, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे, जमीन पर सोवे, वह जिस प्रकार से भी चाहे, अपनी दिनचर्या व्यतीत कर सकता है।

साधना सामग्री

इस साधना में पांच महत्वपूर्ण वस्तुओं की जरूरत होती है, जो सभी पवित्र, दिव्य और अखण्ड लक्ष्मी मंत्र से सिद्ध हों। मैं एक बार फिर दोहरा रहा हूं कि प्रत्येक सामग्री अखण्ड लक्ष्मी प्रयोग से सिद्ध हो, तभी इस साधना में सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

१. सहस्र सिद्धि अखण्ड लक्ष्मी यंत्र (जो ताबीज से वेष्टित हो)
२. लघु नारियल-जो विशिष्ट कुबेर मंत्र से सिद्ध हो।
३. तीन हकीक पत्थर, १. महालक्ष्मी २. अखण्ड लक्ष्मी ३. सौभाग्य लक्ष्मी मंत्रों से पूर्ण चैतन्य हों।
४. गोमती चक्र, जो रावणकृत कुबेर साधना से सिद्ध हो।
५. हकीक माला, जिसका प्रत्येक मनका लक्ष्मी मंत्र से चैतन्य हो। यह अस्सी दानों से एक सौ दस दानों की हो सकती है।

अन्य सामग्री

इसके अलावा कुछ अन्य सामग्री पहले से ही व्यवस्था करके रख लेनी चाहिए १. आसन २. जलपात्र ३. कुंकुम ४. चावल ५. पुष्प ६. घी का तथा तेल का दीपक ७. दूध का बना हुआ प्रसाद (नैवेद्य)।

साधना प्रयोग

प्रातःकाल स्वयं या अपनी पत्नी के साथ शुद्ध शांत चित्त से आसन पर बैठ जाएं और सामने सारी सामग्री रख दें। भगवती महालक्ष्मी के चित्र को पहले से ही कांच के फ्रेम में मढ़वाकर और हकीक माला से मंत्र जप संपन्न करें। इसके अलावा सारी सामग्री किसी चांदी के या स्टील के पात्र में रख दें, फिर "महालक्ष्म्यै नमः" शब्द का

> **अमावस्या तो दीपावली का प्रतीक है ही, किसी भी अमावस्या को लक्ष्मी प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है और अमावस्या का महत्व केवल भारत में ही नहीं, अपितु लगभग सम्पूर्ण विश्व में है . . .**

उच्चारण करते हुए इस सारी सामग्री को जल से स्नान कराएं, फिर कच्चे दूध से धोएं और पुनः जल से या गंगाजल से धोएं, फिर सबको पोंछ कर चांदी, स्टील या तांबे के पात्र में स्थापित कर दें और सब पर कुंकुम या केसर का तिलक करें, फिर इत्र छिड़कें, पुष्प चढ़ाएं और अगरबत्ती जलाएं, कपूर से लक्ष्मी की आरती करें, इसके बाद हकीक माला से मंत्र जप संपन्न करें। यह ११ माला मंत्र जप आवश्यक है। पांचों दिनों के लिए अलग-अलग मंत्र हैं।

तिब्बती मंत्र

प्रथम दिन ॐ ह्रीं मणिभद्रे हुं।
दूसरे दिन ॐ ऐं विराट् देव्यै हुं।
तीसरे दिन ॐ श्रीं तैवांग भद्रे हुं।
चौथे दिन ॐ ऐं श्रीं तनत्वयै फट्।
पांचवें दिन ॐ ऐं ह्रीं सवसेव्यै हुं।

सामग्री उपयोग

साधना संपन्न करने के बाद यहां से जो सामग्री भेजी जायेगी, उसका प्रयोग इस प्रकार से करना चाहिए। १. भगवती महालक्ष्मी के प्रामाणिक चित्र को पूजा स्थान में ही रहने दें। २. सहस्र सिद्धि अखण्ड लक्ष्मी यंत्र पीले धागे में डालकर एक महीने तक अपने गले में धारण किए रहें ३. कभी-कभी साधना के समय हकीक माला को धारण कर लें ४. इसके अलावा बाकी सारी सामग्री एक सप्ताह तक पूजा स्थान में ही रहने दें, और इसके दूसरे दिन किसी नदी या तालाब में प्रवाहित कर दें या किसी मंदिर में रख दें।

यक्षिणी साधना

कनकावती

"यक्षिणी" शब्द समाज में प्रायः एक भयदायक शब्द है एवं लोग इसके नाम से जगुप्सा सी प्रकट करते है जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है जो इसके विषय में हम ऐसा चिंतन करें। जिस प्रकार "अप्सरा" शब्द हमारे मानस में सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित करता है उसी प्रकार से यक्षिणी भी अप्सरा वर्ग की ही योनि है। बल्कि गुणों में इससे श्रेष्ठ ही है क्योंकि जहां एक ओर अप्सरा के समान साधक को अपने यौवन एवं सौन्दर्य से सिक्त करती है वहीं अप्सराओं से एक कदम आगे बढ़कर साधकों को धन, स्वर्ण, आभूषण आदि भी प्रदान करती है।

इस साधना में तंत्र की विशेष क्रियाओं के द्वारा अद्वितीय सौन्दर्यवान स्वर्णावती यक्षिणी को सिद्ध किया जाता है जिसके विषय में शास्त्रोक्त कथन है कि यदि सही ढंग से गुरु सानिध्य में नित्य एक हजार मंत्र किया जाये तो आठवीं रात्रि को वह सुन्दरी यक्षिणी समस्त अलंकारों एवं गहनों से सज-धज कर साधक के पास आकर उसे उसका अभीप्सित प्रदान करती है एवं जीवन भर प्रेमिका बनकर उसे धन द्रव्य की पूर्ति प्रचुरता से करती रहती है।

इस साधना में जिस विशेष मंत्र का प्रयोग होता है वह इस प्रकार है-

ॐ ह्रीं आगच्छ कनकावती स्वाहा।।

इस साधना में तंत्र की क्रियायें होने के कारण आवश्यक मुद्रायें, न्यास, ध्यान, क्रियाओं को गुरु चरणों में रह कर ही सीखा जा सकता है एवं उसे पन्नों पर स्पष्ट नहीं किया जा सकता। इस मंत्र के संबंध में मंत्र महाणर्व ग्रंथ में कहा गया है।

सहस्त्रमेकंजपेन्नित्यं यावत्सप्रदिनं भवेत्।
अथागत्य दधत्यस्मै मन्त्र मन्जन मुत्त मम्।
जपप्रभावान्नरः पश्येन्निधानमाविशतिम्।

अर्थात् जप के नित्य प्रति एक हजार जप करने से देवी आकर साधक को उत्तम मंत्र तथा अंजन देती है-जप के प्रभाव से साधक निःशंक हो कर भूमि की निधियों को देखता है।

शेयर मार्केट : इस महीने आपके लिये

अप्रैल

अप्रैल माह में जो ग्रह योग बने हैं, उनके कारण देश के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में दीर्घकालिन प्रभाव दृष्टिगोचर होगा। ग्रहों का सेनापति मंगल चार नवम्बर से काफी लम्बे समय तक के लिये उसकी नीच राशि कर्क में है, जो कि गोचर में मकर के शनि के सामने भ्रमण कर रहा है। यह मंगल १४ अप्रैल से पुन: अपनी नीच राशि कर्क में प्रवेश करेगा। मंगल के कर्क राशि में भ्रमण के समय शनि कुंभ राशि में प्रवेश कर चुका होगा और मंगल आठवीं दृष्टि से कुंभ राशि में स्थित शनि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। शनि-मंगल का यह अशुभ दृष्टि योग देश के लिये अत्यन्त तूफानी सिद्ध होगा। इस समय के पश्चात् राम जन्म भूमि-बाबरी मस्जिद का विवाद फिर से गंभीर रूप धारण करेगा फलस्वरूप देश भर में आन्दोलन होगें और साम्प्रदायिक हिंसा-अराजकता भीषण पैमाने पर होगी।

राजनीतिक प्रभाव

शनि ग्रह नीति को प्रभावित करने वाला होता है, इसीलिए इससे देश की राजनीति प्रभावित होती है। उल्लेखनीय है कि पांच मार्च को शनि के कुंभ राशि में प्रवेश करने के कुछ घंटों के अन्दर ही भारतीय शासन के अति महत्वपूर्ण अंग अर्थात सुरक्षा मंत्री का पद प्रभावित हुआ। श्री शरद पंवार सुरक्षा मंत्री पद से हटकर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बने। कुछ ही घंटे बाद दूसरी घटना घटी और श्री नरसिंह राव के मंत्री मंडल को, लोक सभा के ११ सदस्यों की ताकत रखने वाले अनाद्रमुक दल ने जयललिता के निर्णय से केन्द्र सरकार का समर्थन वापस ले लिया। यह ध्यान देने योग्य है कि स्वतंत्र भारत की कुण्डली में शनि लग्नेश है जो इस समय द्वितीय स्थान में गतिशील है। नाम से सुश्री जयललिता का राशिपति भी शनि ही है। श्री शिवराज पाटिल जो लोकसभा अध्यक्ष हैं और महामहिम श्री शंकर दयाल शर्मा जो राष्ट्रपति है दोनों की नाम राशि का राशि पति शनि ही है।

अप्रैल में ग्रह मण्डल के सेनापति मंगल के कर्क राशि में प्रवेश करने से शासन में भारी फेर बदल संभव है। सैन्य एवं पुलिस प्रशासन में भी इसी प्रकार महत्वपूर्ण परिवर्तन होगें। सरकारी को ऐसे कठोर निर्णय लेने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

जून १९९२ में, दिसम्बर १९९२ में एक पक्ष में दो ग्रहण पड़ चुके है। और एक साल की अवधि पूरी होने से पहले ही तीसरी बार पुन: माह मई और चार जून १९९३ को एक पक्ष में दो ग्रहण होने जा रहे हैं, अत: अपने आप में स्पष्ट है कि यह समय और आने वाले कई माह अत्यन्त विषमता युक्त होगें। सभी क्षेत्रों में मानसिक तनाव का वातावरण होगा।

कर्क राशि का मंगल कांग्रेस पार्टी में विभाजन की स्थिति उत्पन्न करेगा। वरिष्ठ नेताओं में मतभेद होगें। अनेक कांग्रेसी मंत्री असंतोष व्यक्त करेगें। ऐसा भी लगेगा कि कांग्रेस पार्टी पुन: विभाजित हो जायेगी। प्रधानमंत्री श्री नरसिंहराव के लिये यहं कठिन परीक्षा का समय होगा और उन्हें पार्टी अध्यक्ष का पद खोना पड़ सकता है उनके नेतृत्व के लिये अनेक कठिनाईयाँ आ सकती हैं। इस बीच सरकार को इस्तीफा देने की पूरी सम्भावना है।

शेयर बाजार पर प्रभाव

नववर्ष के प्रारम्भ, नवरात्रि के प्रथम दिन अर्थात २४ मार्च, ९३ बुधवार है, और उसी दिन बुध मार्गी होने से शेयर बाजार में मजबूती का रूख होगा। अप्रैल माह का प्रारम्भ ऐसी ही परिस्थितियों में हो रहा है, और इस दिन श्री रामनवमी गुरूवार तथा पुष्य नक्षत्र का योग है, जो व्यापार की दृष्टि से आशा जनक है। अनाज, सोना, चांदी, रुई, घी, आदि के दामों तथा एग्रो इण्डस्ट्रीज से सम्बंधित खाद्य पदार्थो के उत्पादन से जुड़ी कम्पनियों के शेयरों में पर्याप्त सुधार होगा। तीन अप्रैल से चावल के भाव प्रभावित होगें। इसी प्रकार स्टील कम्पनियों के शेयरों में उतार चढ़ाव होगा। १३ अप्रैल को सूर्य की मेष संक्राति है, शनि कुंभ में होने से तथा १४ अप्रैल को मंगल मिथुन से कर्क राशि में प्रवेश कर पुन: शनि से षडाष्टक योग बनायेगा। जिससे स्टील, केमीकल, कपड़ा, पैट्रोलियम आदि से सम्बंधित कम्पनियों के शेयरों एवं उपरोक्त वस्तुओं के दामों में विशेष प्रभाव पड़ेगा।

पांच मार्च को शनि के कुंभ राशि में प्रवेश करने और उच्च के शुक्र के कारण ही रेल बजट, यात्री किराया और माल भाड़े में भारी वृद्धि हुई। इन्हीं ग्रह योगों के कारण यह बजट शुक्र, शनि और मंगल ग्रहों से प्रभावित वस्तुओं जैसे केमीकल, टेलीविजन, फ्रिज, अनेक प्रकार के वाहन आदि के लिये राहत देने वाला साबित हुआ। विदेश व्यापार में उल्लेखनीय राहत और प्रोत्साहन के निर्णय इसी ग्रह के कारण सम्भव हुए।

अप्रैल मास में मकर राशि, मकर लग्न, कन्या राशि, कन्या लग्न, मिथुन राशि, मिथुन लग्न, वृश्चिक राशि और वृश्चिक लग्न से सम्बंधित व्यक्ति और इन वस्तुओं से सम्बंधित व्यापार, उद्योग, इसी तरह इनसे सम्बंधित वस्तुओं के उत्पादन से जुड़ी कम्पनियों के शेयर विशेष रूप से प्रभावित होगें। विशेष उल्लेखनीय यह है कि शेयर बाजार में स्थिरता का अभाव होगा, और इनसे सम्बंधित व्यक्तियों में भारी हलचल रहेगी।

भरत की लग्न मकर है, और उसके भाग्य स्थान में बृहस्पति कन्या राशि में गतिशील है जो कि बुध की राशि है, बुध व्यापार और बैंक का कारक ग्रह होने से उल्लेखनीय प्रभाव छोड़ेगा। संयुक्त राज्य अमेरिका की लग्न मिथुन है अहमदाबाद बम्बई जैसे शहरों की लग्न भी बुध ग्रह के आधीन ही है। अत: स्पष्ट है कि वाणिज्य व्यापार बैंक के यह प्रमुख स्थान विशिष्ट हल चलों के लिए समाचार पत्रों में चर्चित रहेगें।

रिपोर्ताज

महाकाल की नगरी उज्जैन में सिद्धाश्रम साधकों का विजय-नाद

पीत वस्त्र धारण किये साधकों की कतारें . . . गुरुनामी चादर ओढ़े हजारों साधक . . महाकालेश्वर उज्जैन का पावन प्रवचन भवन . . . गुरुदेव की गूंजती वाणी . .

साधकों द्वारा शक्ति साधना . . . द्वादश ज्योतिर्लिंग पूजन, विविध प्रान्तों से आये गुरुभाई बहिन . . . उल्लास समस्त वातावरण में गुरुदेव की जय जयकार से गूंजता साधना पंडाल, . . . हर हर महादेव का जयघोष

यह सब संपन्न हुआ उज्जैन में शिवरात्रि पर्व के तीन दिनों में जिसका प्रत्येक क्षण जीवन के उन मूल्यवान क्षणों की भांति प्रत्येक के दिलों दिमाग पर अमिट छाप छोड़ गया, जिन क्षणों की याद आते ही मन पुलक उठता है, नेत्रों से आनन्द अश्रु बहने लगते हैं। यह संगम था गुरुदेव की उपस्थिति में साधना, भक्ति और शक्ति का जो आनन्द से मन को आह्लादित कर देने वाला था।

पूज्य गुरुदेव द्वारा महाकालेश्वर का पूजन

तीन दिन के इस महोत्सव हेतु तैयारियां बहुत बड़े-लम्बे चौड़े पैमाने पर करनी आवश्यक थी, और १६ नवम्बर, १९९२ को पूज्यगुरुदेव के चरणों में बैठकर श्री सुब्बाराव, भोपाल एम.पी. शुक्ला, कोरबा, शकुन्तला श्रीवास्तव, जबलपुर, पूर्णेश चौबे, श्री अरुण मोरानिया, सनावद, श्री ओमप्रकाश शर्मा, इंदौर, श्री प्रेमनारायण गोस्वामी, चन्द्रप्रकाश सेनी, श्री कैलाश श्रीवास्तव, श्री बंधीधर तिवारी, अम्बिकापुर, श्री मुरली पांडे, प्रतापपुर, राजकुमार यादव, वाड्रक नगर, श्री दिनेश यादव, श्री आर.पी. त्रिवेदी, श्री भगवत प्रसाद दुबे, श्री हरीश गौड़, आदि ने संकल्प लिया था कि महाशिवरात्रि पर्व उज्जैन में ही संपन्न होगा, और हम इसे सफल बनाने हेतु कोई कसर नहीं छोड़ेंगे, और इन सब ने अपने संकल्प को पूरा करने में तीन महीने दिन-रात एक कर दिया। शिविर की तैयारी, साधना की सूचना, स्थान-स्थान पर पूजन के अलावा छोटे-मोटे सैकड़ों कार्य आवश्यक होते हैं, और उन सबके लिये एक निष्ठा आवश्यक होती है, और जो संकल्प १६ नवम्बर को था वहीं संकल्प १९ फरवरी को महाशिवरात्रि पर भी था वही जोश, वही लगन, वही समर्पण।

जब शिष्य इस बात को भलीभांति समझ लेता है कि हमारे तन, मन, धन का सर्वोत्तम उपयोग गुरु सेवा, गुरु विचारों का प्रचार-प्रसार और अपने साथ ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ना है, तो फिर उन्हें सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। पूज्यगुरुदेव के शिष्यों ने जो तालमेल, उत्साह के साथ कार्य किया उसका जीता जागता उदाहरण है सिद्धि प्रद महाकालेश्वर साधना महोत्सव, जिसने भी इसमें भाग लिया उसने अपने जीवन को धन्य समझा।

शिविर की तैयारी

शिविर की विशेष तैयारी हेतु मध्यप्रदेश के साधक जुटे हुए थे। कुक्षी

से श्री पूर्णेश चौबे, श्रीमती शोभा और उनके कई सहयोगी कई माह से इस शिविर के लिए सपने संजोये हुए थे। दिसम्बर की कड़कड़ाती सर्दी में उन्होंने नर्मदा के जल में खड़े होकर साधना सम्पन्न की, ताकि गुरुदेव शिवरात्रि पर्व पर उज्जैन पधारें, और उनका आशीर्वाद समस्त गुरु भाई-बहनों को प्राप्त हो।

भोपाल, इन्दौर, कुक्षी सिद्धाश्रम साधक परिवार के सदस्यों में तो मानों प्रतिस्पर्धा रही कि वे इस शिविर में यह स्पष्ट कर सकें कि पूज्य गुरुदेव इन्दौर पधारे, हवाई अड्डे पर हजारों की संख्या में उनका स्वागत करने हेतु उपस्थित थे। पूरा हवाई अड्डा गुरुदेव की जय-जयकार से गूंज उठा, अब तक इन्दौर में ऐसा स्वागत शायद ही किसी सिद्ध पुरूष योगी का हुआ होगा। वहां उपस्थित प्रत्येक सदस्य इस बात को स्पष्ट कर रहा था कि आज भी जन-जन में योगी व्यक्ति के लिए स्थान है, और उनकी समाज को बहुत अधिक आवश्यकता है।
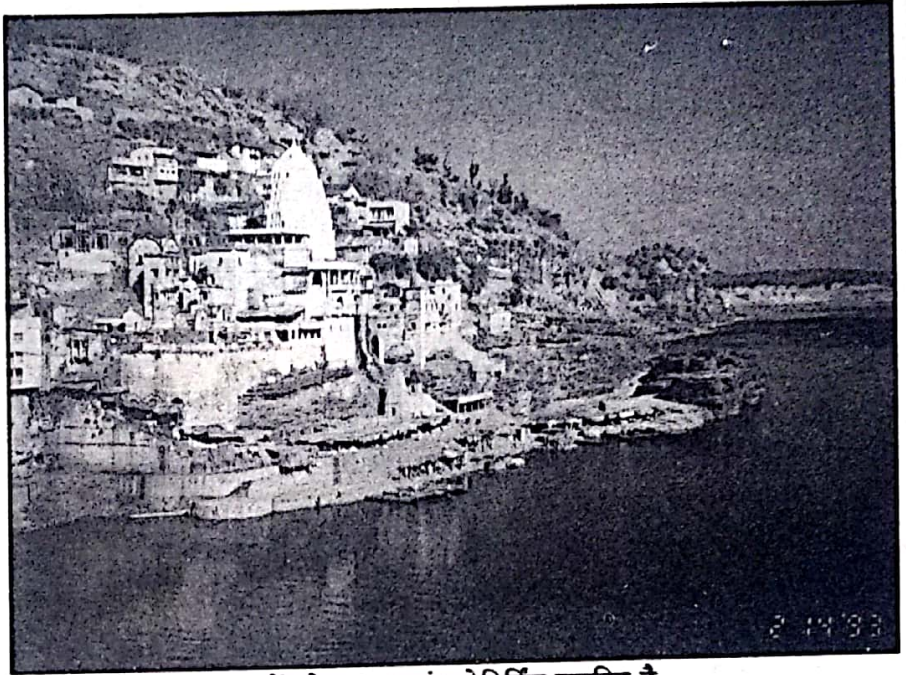
ओंकारेश्वर : जहां ज्योतिर्लिंग स्थापित है

दूसरे दिन पूज्य गुरुदेव ओंकारेश्वर पधारे। वहां नर्मदा और कावेरी के संगम स्थल पर पूज्यगुरुदेव के कुबेरेश्वर शिवलिंग पूजन कर स्वयं रुद्राभिषेक सम्पंन किया। और पुण्यदायनी नर्मदा का पूजन किया। यह वही स्थल था जहां कुबेर ने शिव साधना सम्पन्न की थी। पूज्यगुरुदेव ने कहा कि यहां आकर मुझे अपने सन्यासी जीवन के वे दिन याद आ गये जब मैं नर्मदा तट पर भ्रमण करता हुआ सन्यासियों का मार्गदर्शन करता था।

१६ फरवरी से १९ फरवरी के तीन दिन विशेष महत्वपूर्ण थे, पूज्यगुरुदेव ने २१ किलो के पारदेश्वर शिवलिंग का पूजन सम्पन्न किया और उसी समय द्वादश ज्योतिर्लिंग पूजन सम्पन्न हुआ। गुरु सेवक श्रीवास्तव ने अपने प्रारम्भिक उद्‌बोधन में सभी साधकों का अभिनंदन एवं गुरु प्रार्थना सम्पन्न की।

गुरुदेव ने अपने तीन दिन के प्रवचनों में साधकों को महत्वपूर्ण विषयों पर प्रवचन दिये, जीवन में चिन्ता से मुक्ति कैसे प्राप्त की जाये, और क्या मृत्यु से अमृत्यु की ओर जीवन को ढाला जा सकता है? इसके लिए जीवन के स्वरुप में क्या बदलाव आवश्यक है? जीवन में कौन सी क्रियाएं सम्पन्न की जायें, कहां साधक अपने जीवन में गल्ती कर बैठता है, और अपना मार्ग खो देता है। उसके लिए जीवन में कौन वास्तविक रुप से सहयोगी हो सकते हैं, गुरु-शिष्यों का सम्बंध क्या है, इसके बारे में पूज्यगुरुदेव के प्रवचनों का एक-एक शब्द सीधे साधकों के हृदय में उतर गया।

सभी तो समर्पित

गोगांवा के भाई जगदीश जोशीला और उनके सम्बंधियो-मित्रों ने शिविर कार्य के लिये कोई कसर नहीं छोड़ी। सनावद से **अरुण मौरानिया, दिनेश यादव** खण्डवा से **श्री शरद गीते, ईश्वर कोठी, जिगतेश पटेल** और उनके मित्रों ने इसके लिये कार्य किया। धार से **कुमारी उषा पासलकर,** बदनावर से **श्री ओ. पी. दुबे,** खाचरोच से डी.एस.पी. **श्री भदौरिया,** नागदा से टेलीफोन आपरेटर **श्री सोनी,** आलोट से **भाई गोविन्द लाल सोनी** और उनका पूरा परिवार **पं. दयाराम व्यास** आदि ने इसे सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया। भोपाल से **श्री सुब्बाराव, श्री कैलाश सोनी, श्री आई.एस. पदम, श्री चौहान, श्री परिहार, श्री हिंगदासिया पटिकार, श्री सुनिल तिवारी, बाला सुब्रहण्य्म, अमीत सक्सेना, श्री कुंमरे, श्री धुर्वे,** ओबेदूलांगज से **श्री आर.सी.उइके,** बडखेरा से रज्जू लाल, इटारसी से **राजेन्द्र मालवीय** और उनके साथी **श्री भैरव सिंह** तथा **श्री कनसाना,** टिमरनी से **श्री विजय सिंह** अमला से **रविबाबा** और उनकी टीम, विदिशा से **श्री वी.पी. दुबे, श्रीमती शशिकला दुबे, राजेश गुप्ता, धर्मेन्द्र, डॉ. खरे,** नरसिंहगढ़ से **श्री चन्द्रप्रकाश सोनी** और उनका परिवार **राजू सोनी, रामेश्वरी सोनी,** गुना से **कोमल सिंह** पोस्टमेन **अरविन्द श्रीवास्तव,** सागर से **श्री एन.आर. वर्मा, श्री अहिरवार** इत्यादि ने पूरा-पूरा सहयोग दिया।

इन्दौर से **श्री ओमप्रकाश शर्मा, श्रीमती संतोष शर्मा, कणसिंह परिहार, अशोक कुमार, नवीन जोशिला, श्रीमती राधा** एवं **जेश्रीविद्या** ने इस शिविर की सफलता के लिये दिन-रात एक किया। उज्जैन से **श्री विजय चौहान** पत्रकार, **श्री गोपाल शुक्ला** तथा उनके मित्र ने पूरा-पूरा ध्यान रखा कि यह शिविर अच्छी तरह सफल हो। उज्जैन के सभी पत्रकारों ने पूज्यगुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने की कोई कसर नहीं रखी।

महाकालेश्वर मंदिर समिति के प्रशासक **श्री महाडिक,** प्रवचन भवन के व्यवस्थापक **श्री विश्वकर्मा, श्री नेगी** तथा उनके सभी साथियों ने जिस आत्मीयता का परिचय दिया उसकी सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

पत्रकारों से भेंट वार्ता

१७ फरवरी को पत्रकार परिषद सम्पन्न हुई। पत्रकारों ने पूज्यगुरुदेव से विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछे, सभी प्रश्नों का पूज्यगुरुदेव ने सरल भाषा में पूर्ण शंका समाधान के साथ उत्तर दिये, और इसीलिए इस पत्रकार वार्ता में उपस्थित पत्रकारों ने यह कहा कि उज्जैन में तो सभी विभूतियां आती है कुंभ के अवसर पर हमने दिगज संत महात्माओं का साक्षात्कार किया है, परन्तु अपने विषय के उद्भटट विद्वान और दिव्य पुरुष का साक्षात्कार लेकर हमें पहली बार अद्वितीय आनन्द हुआ है। यह केवल उन्होनें कहा ही नहीं बल्कि अपने अपने समाचार पत्रों में उनकी रिर्पोटिंग से भी स्पष्ट हो रहा था। उन्हें शिविर संचालक से शिकायत रही कि हमने उन्हें हर कार्यक्रम की ओर गुरुदेव के हर प्रवचन की प्रतियां क्यों नहीं दी? उनकी इच्छा गुरुदेव के प्रत्येक शब्द को और कार्यक्रम की प्रत्येक झलक को प्रकाशित करने के लिये रही।

महाशिवरात्रि के अवसर पर सम्पूर्ण रात्रि जिस उत्साह के साथ पारदेश्वर शिवलिंग पूजन सम्पन हुआ, और पूरे हॉल में उपस्थित साधकों द्वारा सामूहिक आरती रंग और गुलाल के साथ उछल-उछल की आरती जयघोष को देखकर उज्जैन के पंडितों ने भी कह दिया कि ऐसा दिव्य महाशिवरात्रि पूजन हमने पहली बार ही देखा है।

संकल्प का यह शिविर

उज्जैन शिविर क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के लिये संकल्प का शिविर भी रहा है। सनावद के कार्यकर्ता **दिनेश यादव** ने **निखिल विद्यापीठ** स्थापित कर सभी बच्चों में प्रतिदिन सरस्वती मंत्र और गुरु मंत्र के माध्यम से दिव्यचेतना प्रवाहित करना प्रारम्भ कर दिया है। **श्री अरुण कुमार** नर्मदा तट पर **निखिल आश्रम** के लिये भूमि प्राप्त करने में जुट गये हैं, और बहुत शीघ्र इससे पूरा कर लेंगे। **श्री शरद गीते हरसूद,** खंडवा और बुरहानपुर में **सिद्धाश्रम साधक परिवार** की २१ ईकाईयों के गठन के कार्य में लग गये हैं, तो **श्री पूर्णेश चौबे** के संयोजन में श्री जगदीश जोशीला, श्री विजय चौहान, कुक्षी के अन्य कार्यकर्ताओं ने गांव-गांव में **सिद्धाश्रम साधक परिवार** और **गुरुदेव** के संदेश को पहुंचाने के लिये बीड़ा उठा लिया है। **श्री ओमप्रकाश शर्मा** और उनकी पत्नी **श्रीमती संतोष** तो गुरुदेव के चरणों में शपथ ले ही चुके हैं,

कि उनका जीवन अब **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के लिये हैं। और इन्दौर क्षेत्र के कार्यकर्ताओं **श्री अशोक, श्री सभाजीत सिंह, श्री शर्मा, कृष्ण सिंह परिहार, नवल शर्मा,** भास्कर पुर के **श्री खरे, श्री नारायण प्रसाद गुहा, श्री गार्गव, श्री नवीन जोशीला, परमानंद सिसोदिया** आदि साथी मिलकर पूरे इंदौर को **"सिद्धाश्रम शहर"** बनाने में जुट गये हैं। उनके सहयोग से ही बेतमा के **श्री राधेश्याम त्रिवेदी,** धार के **अरुण पासलंकर, शंकर साहूकार,** सिहौर के **दौलत राम त्यागी,** तथा **श्री हरिश्चन्द्र राय,** आष्टा के **श्री गोस्वामी, श्री जोशी, श्री श्रीवास्तव,** कन्नौद के **श्री बृजमोहन चौहान** तथा उनकी पत्नी आदि ने भी अपने अपने लक्ष्य निर्धारित कर नवरात्रि तक लक्ष्य प्राप्त कर जोधपुर में उपस्थित होना तय किया हैं।

दिल्ली के **श्री दीक्षित,** अहमदनगर के **कर्नल गणपति** ने राज्याभिषेक दीक्षा इस दिव्य अवसर पर प्राप्त की और पूरा जीवन **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समर्पित करने का निश्चय किया। भिलाई के **सेवा बोरकर, श्री यादव** और राजनांदगांव के **श्री भूखनलाल वर्मा,** बिलाईगढ़ के **डॉ. सुभाष मिश्र,** पामगढ़ के **मदन अग्रवाल** आदि ने भी अपने-अपने क्षेत्र में शिविर आयोजित करने के प्रस्ताव दिये।

बम्बई से श्री राकेश कड़किया और **राजेश गुप्ता** ने पुस्तक विक्रेताओं के माध्यम से पत्रिकाओं को पूरे बम्बई में फैलाने का निश्चय किया। **श्री नागजी भाई** और **श्री प्रवीण जोशी** ने मंच से यह घोषणा की कि अप्रैल तक गजानंद पुस्तक भंडार, सूरत के माध्यम से मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका का गुजराती संस्करण प्रारम्भ कर लेंगे। उन्होंने पूज्यगुरुदेव के चरणों में पत्रिका के आवरण पृष्ठ आदि के रंगीन प्रारूप भी अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किये, इसी प्रकार गुजराज के प्रत्येक क्षेत्र में पहुंचाने का संकल्प भी उन्होंने लिया।

अहमदाबाद के **श्री जीवन सिंह** ने भी अहमदाबाद के प्रत्येक वार्ड में पत्रिका उपलब्ध कराने की बात की। रायबरेली से आए **राजेन्द्र भदौरिया, रामचन्द्र श्रीवास्तव "नील"** और उनकी धर्म पत्नी रायबरेली ने श्री मिश्रीलाल ने वाराणसी में, **श्री जायसवाल, डॉ. बनर्जी** एवं **गीता बनर्जी** ने लखनऊ में शिविर संपन्न किये जाने का प्रस्ताव किया। तो **श्री सुरेन्द्र कुमार मिश्रा** आदि ने तीर्थ राज प्रयाग में शिविर करने का पूज्यगुरुदेव से अनुरोध किया। मध्यप्रदेश के सभी साधकों ने अमर-कंटक (नर्मदा उद्‌गम) पर शिविर कराने का आग्रह किया। यह सब इस बात का द्योतक था कि प्रत्येक गुरु भाई और बहिन ने इस बात का उत्साह इस शिविर से संचरित हुआ कि गुरुदेव को दिव्य चेतना के आगे बड़ी से बड़ी सफलता का भी कोई पुण्य नहीं है। गुरुदेव की कृपा दृष्टि ही वह पाथेय है जिसके द्वारा जीवन की पूर्णता प्राप्त की जा सकती हैं। इसलिये जगदलपुर में **श्री एम.पी. चतुर्वेदी, श्री राधाकृष्ण कुशवाह, श्री राठौड, श्री अशोक पाण्डेय, श्री पैकरा,** आदि ने मिलकर **श्री निर्मोही जी** की उपस्थिति में जगदलपुर जैसे दूरस्थ जिले के प्रत्येक विकास खण्ड में गुरुदेव के संदेश को पहुंचाया है और वहां पर साधना का प्रवाह सतत प्रवाहित होता रहे, इसके लिये ३ एकड भूखण्ड के साथ एक मंदिर की व्यवस्था की हैं।

महाकालेश्वर शिविर में साधक शिष्य अपने हृदय में एक अनोखी शांति आत्मविश्वास ओर शक्ति प्राप्त कर, जब अपने अपने घरों के लिए रवाना हो रहे थे, उस समय वे पूज्यगुरुदेव के चरणस्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त कर, जीवन के नये ध्येय स्थापित कर उन्हें पूरा करने के लिये, कृतसंकल्प लग रहे थे। गुरु शिष्य मिलन का यह महापर्व वास्तव में आनंद उत्सव ही था।

जिन लोगों ने शिविर में सक्रिय सहयोग दिया

दुर्लभ साधना

वीर-मंत्र

जिसने आज के बुद्धिजीवियों एवं वैज्ञानिकों को भी हैरत में डाल रक्खा है

यों तो संसार में हजारों साधनाएं हैं, परन्तु उन सबमें वीर साधना अपने-आप में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और दुर्लभ है। जो लोग साधना क्षेत्र में है, वे इस बात के महत्व और गोपनीयता को जानते हैं। इसी कारण उच्च कोटि के साधक अपना सब कुछ दांव पर लगाकर भी वीर साधना सम्पन्न करने की इच्छा रखते हैं।

वीर साधना का तात्पर्य ऐसी साधना है, जिसे सम्पन्न करने पर वीर वश में रहकर काम करने वाला बन जाए, तो फिर चिन्ता ही किस बात की?

वीर विक्रमादित्य की कहानी सर्वविदित है कि उन्होंने एक वीर वश में कर रखा था और वह हमेशा उनके नियन्त्रण में रहते हुए उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार रहता था। जब भी जो आज्ञा विक्रमादित्य देते वह एक पल में ही उस कार्य को पूरा कर देता। विक्रमादित्य ने उस वीर की सहायता से ही अपने सारे शत्रुओं को काबू में किया। उस वीर की सहायक से ही, जब राज्य पर पड़ोस की फौजें चढ़ आयीं तो पूरी फौज का सफाया किया। वीर की सहायता से ही विक्रमादित्य ने अपने राज्य में अपार धन-सम्पति जोड़ ली और उसी की सहायता से वह सारे संसार में विख्यात हुए।

रामभक्त हनुमान ने भी वीर साधना सम्पन्न कर रखी थी, इसीलिए उनको "महावीर" हनुमान कहते हैं। उस वीर की सहायता से वह चार सौ योजन का समुद्र एक ही छलांग में पार कर सके थे। ऐसे वीर की सहायता से ही वह लंका के अशोक वन को तहस-नहस कर अपनी धाक जमा सके और उस वीर की सहायता से ही बड़े से बड़े पर्वत को गेंद की तरह हथेली में लेकर कहीं पर भी फेंक सकते थे।

शंकराचार्य ने भी वीर साधना संपन्न कर रखी थी। जिसकी वजह से चौबीसों घण्टे उनकी सुरक्षा बनी रहती थी। वीर की सहायता से ही जब वह जंगल में एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते, वीर उनका सही मार्ग दर्शन करता, जंगल के हिंसक पशुओं से भी रक्षा वही करता। वीर की सहायता से ही शंकराचार्य ने अकेले ही पूरे भारतवर्ष में बौद्ध धर्म को बढ़त को रोका और हिन्दु धर्म को पुनः स्थापित करने में सफलता पाई। वह स्वयं इस बात को स्वीकार करते थे कि मैंने अपने जीवन में सैकड़ों साधनाएं सम्पन्न की हैं, परन्तु वीर साधना के द्वारा ही मैंने जीवन की पूर्णता, यश, सम्मान और अद्वितीय सफलता प्राप्त की है।

गुरु गोरखनाथ वीर साधना के तो आचार्य ही थे और उनके शिष्यों को इस बात का गर्व था कि गुरु गोरखनाथ ने वीर को सिद्ध किया है, जिसकी वजह से वह तंत्र के क्षेत्र में पूर्ण सफलता पा सके हैं। यद्यपि कई लोगों ने मिलकर गुरु गोरखनाथ को मारने को चेष्टा की परन्तु अकेले गुरु गोरखनाथ सैकड़ों लोगों से मुकाबला कर सके और विजय प्राप्त कर पाए।

वीर

जिस प्रकार "भूत साधना" या "शून्य साधना" सम्पन्न कर जीवन की प्रत्येक आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है, उसी प्रकार "वीर साधना" के द्वारा भी संसार का कठिन से कठिन कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। वीर का तात्पर्य भूत से ज्यादा मजबूत, हनुमान से भी ज्यादा बलवान, राम से ज्यादा क्षमाशील और कृष्ण से भी ज्यादा चतुर व्यक्तित्व से है। "वीर" का तात्पर्य एक

Scanned by CamScanner

ऐसे महान् व्यक्तित्व से है, जो अत्यधिक सरल, भलाई करने वाला प्रत्येक प्रकार की मुसीबत में सहयोग देने वाला और अपने मालिक के कठिन से कठिन कार्य को भी चुटकियों में हल करने वाला है।

यह साधना वास्तव में अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रही है, अपने अंतिम समय में गुरु अपने शिष्य को ही यह महत्वपूर्ण साधना समझाते और उसे पूर्ण सिद्ध योगी बना देते हैं।

आज के युग में भी जहां कई योगी और सन्यासी इस साधना में सिद्ध है, वहीं कई गृहस्थ भी इस साधना को सम्पन्न कर सफलता पा सके हैं। नेपाल के रणवीर थापा, बालकृष्ण आचार्य, कृष्ण यादव, सरोजिनी बहिन आदि ऐसे ही गृहस्थ साधक साधिकाएं हैं, जिन्होंने सफलता पूर्वक इस साधना को सिद्ध किया और पूर्ण सफलता पाई है, इनमें से सभी से मुझे मिलने का अवसर मिला है, और सभी ने एक स्वर में कहा है कि वास्तव में यह अद्वितीय साधना है। इस साधना को संपन्न करने पर किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती, और न साधना काल में किसी प्रकार का कोई भय ही पैदा होता है। गायत्री उपासक और सरल सौम्य गृहस्थ साधक भी इस साधना को संपन्न कर सकते हैं।

साधना विधि

मैं नहीं चाहता कि कोई भी विद्या गोपनीय रहे। अतः इस देवदुर्लभ साधना को भी प्रस्तुत कर रहा हूं और मुझे विश्वास है कि आप इस साधना को संपन्न कर सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

यह साधना मात्र १४ दिन की है, और हकीक माला से ही मंत्र जप संपन्न करना चाहिए। इस साधना को संपन्न करने के लिए निम्न पांच नियम हैं-

१. किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ करें। रात्रि को पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर लाल आसन पर लाल धोती पहनकर बैठ जाएं। आधा किलो गेहूं के आटे से मनुष्य की आकृति का पुतला बनाएं और उसे सिन्दूर से रंग दें। इसे ही वीर कहते हैं। अब पास में तेल का दीपक जलाएं और वीर के पास ही "वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यंत्र" स्थापित कर दें।

२ नित्य रात्रि को हकीक माला से १५ माला मंत्र जप करें। इसमें एक घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगाता। मंत्र जप "वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यंत्र" के सामने करें। इसमें यंत्र का ही सर्वाधिक महत्व है।

३. साधना की अवधि में ब्रह्मचर्य व्रत से रहें। एक समय भोजन करें। और मंत्र जप करें, यदि बीच में कोई अनुभव हो तो भी नहीं बताएं।

४. जब साधना संपन्न हो जाए, तो १५ वें दिन उस वीर को जंगल में दक्षिण दिशा की ओर रख दें और कहें कि मैं जब भी तुझे आज्ञा दूं, तू उपस्थित होगा और आज्ञा पालन करेगा। इसके अलावा हर क्षण अदृश्य रूप से मेरे सामने उपस्थित रहना तथा मेरी रक्षा करना। उस यंत्र को लाल धागे से अपनी दाहिनी भुजा पर बांध लें।

५. साधना संपन्न होने के बाद जब पांच बार मंत्र उच्चारण कर वीर को आवाज दी जायेगी, तो आंखों के सामने वीर प्रत्यक्ष होगा और उस समय आप उसे जो भी आज्ञा देंगे, वह तुरन्त आज्ञा का पालन करेगा।

> ***एक अद्भुत, एक अलौकिक, एक तेजस्वी मंत्र . . . जिसकी तुलना विश्व के किसी भी मंत्र से करना संभव ही नहीं है।***

गोपनीय वीर मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रं वीराय प्रत्यक्षं भव ह्रीं ह्रांम् फट्।

यह अद्वितीय और गोपनीय साधना वरदान स्वरूप है, और साधकों को चाहिए कि वे अवश्य ही संपन्न करें।

आपकी दी हुई हमें हर चीज से है प्यार।
चाहे वह हमारी बिगड़ी हुई तकदीर ही क्यों न हो।।

हरीराम, फैजाबाद
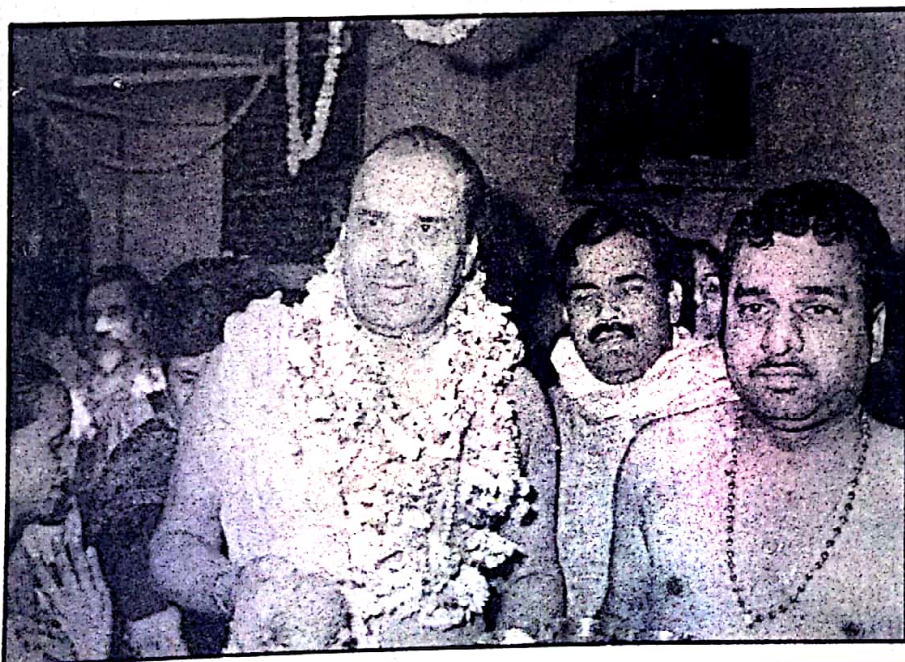
गणपति साधना-मंत्र

जो ऋद्धि सिद्धि एवं सम्पूर्ण ऐश्वर्य देने में समर्थ है, जो अकेला ही हजार हजार कुबेर मंत्रों के बराबर है।

जब हमारे पास इतना तेजस्वी एवं ऋणहर्ता मंत्र एवं साधना मौजूद है तो फिर हमारे जीवन में दरिद्रता रह ही कैसे सकती है?

मैंने पूज्य गुरुदेव की आज्ञानुसार अपना जीवन उनके श्री चरणों में रह कर साधना करने एवं ज्ञान विज्ञान के विभिन्न पक्षों को समझने के लिए समर्पित कर दिया था। मैं उनके निर्देशन में सतत गतिशील था किंतु एक बात रह रह कर कचोटती रहती थी कि मैं संभवतः उस गति से गतिशील नहीं हो पा रहा हूं जो कि होनी चाहिए। यह बात मैं निश्चित रूप से जानता था कि मेरे पूज्य गुरुदेव एक अत्यंत उच्च कोटि की देवआत्मा है एवं ऐसी दिव्य आत्माएं इस छल-कपट, द्वेष, पाखंण्ड से भरे जग में अधिक समय तक नहीं रहती। मैं इसी कारण वश उनके सानिध्य का पूर्ण लाभ प्राप्त करने का इच्छुक था।

मैंने एक दिन उचित अवसर पाकर उनके श्री चरणों में अपनी मानसिक व्यथा का निवेदन किया। पूज्य गुरुदेव ने सहज हास्ययुक्त होकर कहा यह तो मैं भी देख रहा था किंतु जीवन की यह भी एक स्थिति होती है जो मैं चाहता था कि तुम्हारे सामने स्पष्ट हो। उन्होंने इसके पश्चात् मुझसे पूछा कि क्या तुमने गणपति साधना की है। मैंने उत्तर दिया कि यद्यपि श्री गणपति जी के प्रथम पूज्य देव होने के कारण मैं उन का चितंन पूजन तो साधना के प्रारम्भ में अवश्य करता हूं किंतु साधना के रूप में तो नहीं किया है। पूज्यपाद गुरुदेव ने स्पष्ट किया कि श्री गणपति जी का स्वरूप शिव और शक्ति का साकार रूप है एवं इन दोनों तत्वों का सुखद संयोग ही तो किसी कार्य में पूर्णता देगा। पूज्यपाद गुरुदेव जब भी किसी साधना को करने का निर्देश देते है तो सर्वप्रथम उस देव या देवी का तात्विक विवेचन अवश्य ही स्पष्ट करते हैं क्योंकि उनके अनुसार जब तक हम किसी देव का स्वरूप ही नहीं समझेंगे तो साधना किसकी करेंगे? और वह तो दैनिक पूजा के समान ही हो जायेगी। स्थान भय से उस पूर्ण विवेचन को न स्पष्ट करके मात्र यही कहना चाहूंगा कि जीवन के आठ मूल दोषों आलस्य, कृपणता, दीनता, निद्रा, शिथिलता, अचैतन्यता, पुरुषार्थहीनता एवं विस्मृति इनका परिहार मात्र गणपति साधना से ही संभव हैं। कुबेर साधना व लक्ष्मी साधना भी तभी पूर्ण हो सकती है जब उसमें विघ्नहर गणपति साधना समाविष्ट हो।
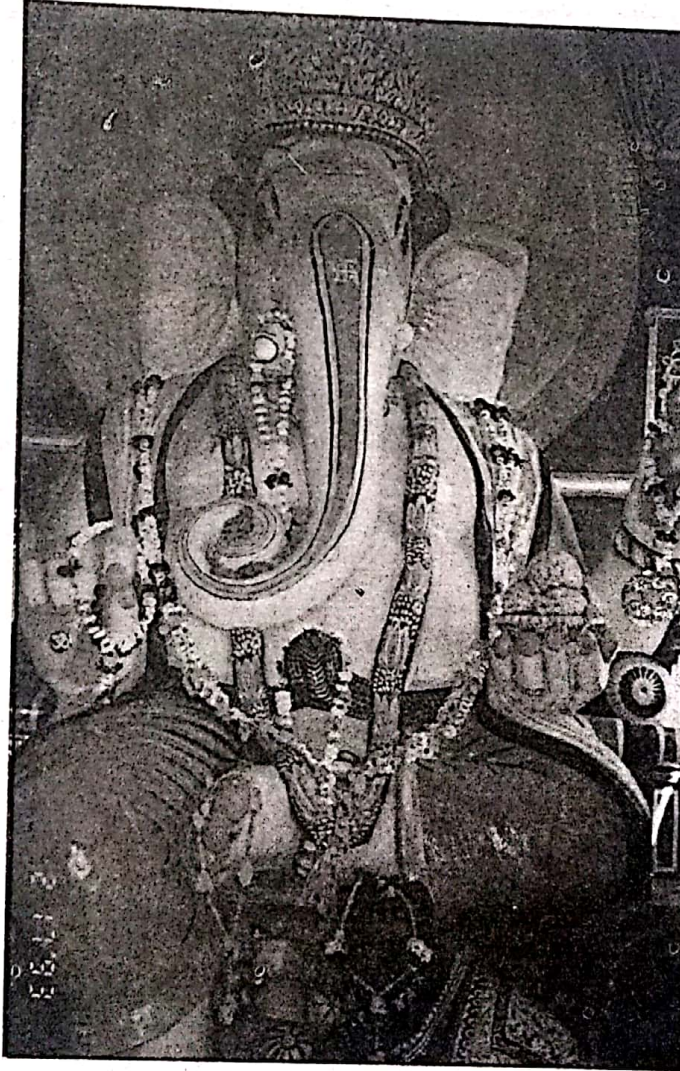
पूज्यपाद गुरुदेव ने विस्तृत विवेचना के बाद चिंतन कर मुझे आज्ञा दी कि मैं श्री गणपति की विभिन्न साधना पद्धतियों में से श्री विजय गणपति साधना सम्पन्न करूं। क्योंकि यह

साधना विशेष रुप से संकटों से मुक्ति दिलाने एवं सभी प्रकार से मार्ग प्रशस्त करने में सहायक है। मुकदमे बाजी या किसी संकट विशेष के समय यह साधना तो अचूक फल देती ही है।

इस साधना में सर्वाधिक महत्व **"श्री श्वेतार्क गणपति विग्रह"** का है। साधक को श्रेष्ठ समय में किसी योग्य कारीगर से इसका निर्माण कराकर शुभ नक्षत्र में इसे अभिषेक पूर्वक पूजा स्थान में स्थापित कर इसके विशिष्ट संजीवन मंत्रों से संजीवित कर प्राण प्रतिष्ठा करनी चाहिए। इसके पश्चात दूर्वा, जल एवं दूध से निरंतर ग्यारह सौ "गणेश गायत्री" मंत्र से इस विग्रह को चैतन्य कर उसे अनंत काल हेतु चैतन्य फलदायक एवं पूर्ण प्रभाव युक्त बनाना चाहिए ऐसे विग्रह का निर्माण करवाना या ऐसे विग्रह को प्राप्त कर अपने घर के साधना कक्ष में रखना ही पुण्य है। आधी से अधिक सफलता तो ऐसे विग्रह के स्थापन से ही हो जाती है। गृहस्थ साधकों के लिए तो यह वरदान स्वरूप ही है जो लम्बे व जटिल विधि विधानों में अपने को नहीं उलझा सकते।

ऐसे श्रेष्ठ विग्रह को प्राप्त करने के बाद किसी बुधवार की प्रातः इस विग्रह को लाल रंग के आसन पर स्थापित कर स्नान कराकर केसर का तिलक करें एवं स्वयं भी पूर्वाभिमुख होकर लाल रंग के आसन पर बैठें। गुरु का भोग लगायें एवं रक्त चंदन अर्पित करें। इसके पश्चात् लाल रंग के २१ पुष्प (यदि कनेर के प्राप्त हो सकें तो सर्वाधिक उपयुक्त) लें एवं प्रत्येक पुष्प अपनी उस कामना को बोल कर कर अर्पित करें, जिसकी पूर्ति या विजय आप चाहते हैं। श्री गणपति पूजन में दूर्वा, अगरबत्ती, सुगन्धित द्रव्य एवं घी के दीपक का विशेष महत्व है। इसके पश्चात मूंगे की अथवा रक्त चंदन की माला से विजय गणपति मंत्र का सवा लाख जप पांच दिनों के अंदर करना चाहिए। यह मंत्र अत्यंत श्रेष्ठ एवं विशेष बड़ा न होने के कारण सुविधा पूर्वक पांच दिनों में सवा लाख अर्थात १२५० मालाएं जप किया जा सकता है। यह मंत्र इस प्रकार है-

ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः।

मंत्र जप के पूर्ण होने पर छठें दिन पांच छोटी कुमारी कन्याओं को भोजन कराकर उन्हें भेंट देनी चाहिए। ऐसा करने से यह अनुष्ठान पूर्ण होता है। मनोवांछित सफलता शीघ्र ही मिलती है।

मैंने पूज्य गुरुदेव द्वारा वर्णित उपरोक्त विधि से अनुष्ठान किया। प्रथम दिन ही मुझे अनुकूलता मिल गई एवं अनुष्ठान समाप्त होते होते ही श्री गणपति जी के भव्य दर्शन भी सुलभ हुए। उनका वह तेजस्वी व अत्यंत मधुर स्वरूप आज भी मेरी आंखों के सामने स्पष्ट है। उनकी मंद मुस्कान, कृपा पूर्ण दृष्टि सभी आह्लादित करने वाला था। मैंने जब पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में नत होकर इस सफलता पर उन्हें कृतज्ञता अर्पित की तो उन्होंने प्रेमपूर्ण स्वर से कहा कि गुरुदेव के समान ही श्री गणपति भी ब्रह्मत्व प्रधान देव हैं जो अपने भक्तों पर सहज ही कृपालु हो उठते हैं। वस्तुतः यह सफलता पूज्य गुरुदेव के आर्शीवाद का ही एक स्वरूप थी। इस श्रेष्ठ साधना को सम्पन्न करने के बाद जहां एक ओर मैं तीव्रता से अपनी साधना में बढ़ सका हूं वहीं आर्थिक पक्ष की भी ऐसी पुष्टि सदैव बनी रही जिससे मेरी साधना में विघ्न नहीं आ सका। मेरी हार्दिक कामना है कि इस श्रेष्ठ प्रयोग को मेरे गुरुभाई बहन अपनायें और लाभान्वित हों। ●
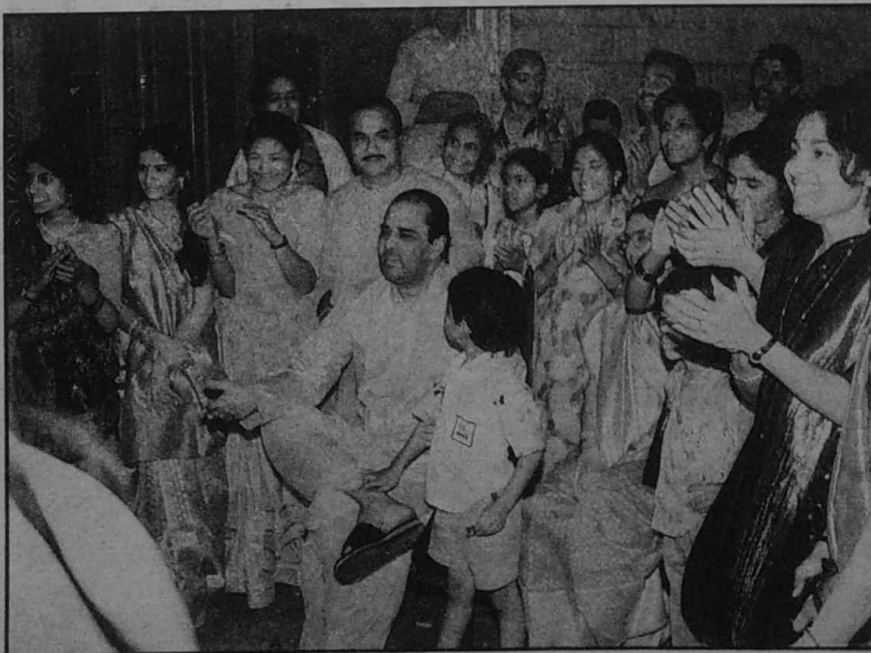
वक्र तुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु में देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

आयुर्वेद और आपका स्वास्थ्य

यदि सही कहा जाय तो हमने अभी तक आयुर्वेद को समझा ही नहीं है। यह तो एक सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति है, जिसके क्षेत्र में हमारा सारा इतिहास गौरवमय शब्दों में अंकित है।

प्रस्तुत लेख कुछ ऐसी ही गोपनीय आयुर्वेदिक औषधियों का विवरण दे रहा है जो शत प्रतिशत सही हैं, प्रामाणिक है, सैकड़ों बार आजमायी गयी हैं और प्रत्येक बार खरी उतरी है।

आप भी इन चमत्कारिक औषधियों की अपनाकर अपने तथा दूसरों के भी दु:खदायी रोग का समूल नाश कर सकते हैं।

प्राचीन काल से ही आयुर्वेद अपने आप में सफलतम चिकित्सा पद्धति रही है। आयुर्वेदिक क्षेत्र में हमने जो उपलब्धियां अर्जित की थीं, वे विश्व में अनन्यतम थी। अचूक रोग निदान, रोग के मर्म तक पहुंचने की क्षमता और अत्यधिक कम मूल्य पर सफल चिकित्सा आयुर्वेद की ही विशेषता है। अब पाश्चात्य देशों में भी आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों का लोहा मानने लगे हैं और यह विडम्बना ही कही जाएगी कि हमारी ही जड़ी बूटियों द्वारा वे करोड़ों डालर कमा रहे है, जबकि हम प्रकृति के इस वरदान से स्वयं को वंचित किए बैठे हैं।

अग्रलिखित पंक्तियों में मैं कुछ आधुनिक व्याधियां और उन्हें समूल नष्ट करने की कुछ प्रामाणिक आयुर्वेदिक औषधियों का विवरण दे रहा हूं, कोई भी व्यक्ति इन्हें आजमाकर शत प्रतिशत सफलता प्राप्त कर सकता है।

१. रक्तचाप

जब शरीर में प्रवाहित हो रहे रक्त का दबाव बढ़ जाता है तो इस उच्च रक्त चाप या हाईब्लड प्रेशर कहा जाता है। यह एक गम्भीर बीमारी है और आजकल पूरे संसार में व्याप्त है। अभी तक इसके निश्चित कारणों का पता नहीं लग पाया है। कुछ में यह अनुवांशिक होती है तो अधिकांश में यह अत्यधिक धूम्रपान, मोटापे, या गुर्दे के विकारों के कारण उत्पन्न होती है।

चिकित्सा

१. जटामांसी को घोंट कर यदि एक तोल पाउडर नित्य लिया जाए तो उच्च रक्तचाप समाप्त हो जाता है।

२. आंवले का चूर्ण दिन में तीन बार लेने से रक्तचाप में अन्तर आता है।

३. कान्दे के रस में नीम के पत्ते घोट कर एक चम्मच लेने से भी रक्तचाप में कमी आती है।

सावधानियां

१. धूम्रपान तुरंत त्याग देना चाहिए।

२. भोजन नमक रहित ही करना चाहिए।

३. मानसिक चिन्ताओं को यथा संभव दूर रखना चाहिए।

४. चिकनाई वाले खाद्य पदार्थों का सेवन अत्यंत कम कर देना चाहिए।

२. गठिया

दो अस्थियों के बीच स्थित झिल्ली में सूजन आ जाने से यह रोग उत्पन्न होता है, इसकी वजह से व्यक्ति कार्य करने में असमर्थ सा हो जाता है, जोड़ों में दर्द होने लगता है और गांठे सी पैदा हो जाता है, कभी कभी शरीर का कोई हिस्सा निष्क्रिय भी हो जाता है और व्यक्ति अपंग और असहाय सा जीवन जीने को बाध्य हो जाता है।

चिकित्सा

१. जायफल, जावित्री तथा खद बराबर मात्रा में लेकर नित्य गुनगुने पानी के साथ दिन में तीन बार लेना चाहिए।

२. ग्वारपाठे के रस में तीवर आधा तोल मिलाकर पानी के साथ पांच बूंदे नित्य लेने से गठिया में आराम मिलता है।

३. अबूखण्डा का कन्द नित्य दूध के साथ लेने से भी गठिया समाप्त हो जाता है।

पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी की आयुर्वेद का अन्यतक ज्ञान है, हिमालय स्थित सैकड़ों हजारों जड़ी बूंटियों की खोज कर उन्होंने अप्रतिम कार्य किया है, जिनके माध्यम से उन्होंने असाध्य से असाध्य रोगों का शमन किया है।

पक्षाघात, श्वास रोग, सफेद दाग, प्रोटेस्टेड (पौरुष ग्रंथि) दमा, यकृत, केंसर, चर्मरोग, स्त्रियों से संबंधित बीमारी व बुढापे जैसे रोगों की उन्होंने आयुर्वेद के माध्यम से सफलता पूर्वक चिकित्सा की है वस्तुतः गुरुदेव अपने आप में अन्यतम हैं।

कायाकल्प जैसे कठिन कार्य को सम्पन्न कर, बुढापे को यौवन में परिवर्तित कर उन्होंने दिखा दिया है, कि आयुर्वेद के माध्यम से सब कुछ संभव है।

३. मोटापा

मोटापा अपने आप में कई भयंकर बीमारियों की जड़ है। ८० प्रतिशत रक्तचाप और हृदय के रोग मोटे व्यक्तियों को ही होते है। मोटापे के कारणों में अधिक भोजन करना, चिकनाई युक्त पदार्थों का अधिक सेवन करना तथा निष्क्रिय जीवन बिताना है। कुछ लोगों में यह अनुवांशिक भी होता है।

चिकित्सा

१. उत्तान बंद पौधे की पत्तियों का चूर्ण एक तोला नित्य सेवन करने से तीन सौ ग्राम वजन प्रतिदिन कम होता है।

२. गिलोय का चूर्ण और त्रिफला दोनों ३-३ ग्राम प्रातः सायं मधु से मिलाकर चाटने पर मोटापा कम होता है।

सावधनियां

१. आलू, चावल, घी, बेसन, मिठाइयों का त्याग करें।

२. नित्य पांच प्रकार के व्यायाम करें-पश्चिमोत्तान आसन, हलासन, उत्तान पाद आसन, चक्रासन और धनुरासन।

३. शारीरिक श्रम अवश्य करें। याद रखें कर्मयोगी के पास मोटापा फटक ही नहीं सकता।

४. यथा संभव दिन में एक बार भोजन करें तथा प्रतिदिन प्रातः पानी में शहद मिलाकर पिएं।

४. सौन्दर्य वर्धक औषधि

कुछ तो सौन्दर्य ईश्वर की ओर से जन्मजात मिलता है परन्तु कुछ प्रयत्न भी हैं जिनके द्वारा सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है, कुरुपता को भी सुन्दरता में परिवर्तित किया जा सकता है, सारे शरीर को सन्तुलित, आकर्षक, तेजस्वी और मन मोहक बनाया जा सकता है। इसके लिए प्रामाणिक उपाय निम्न है।

कपूर, नागरमोथा, चिरायता, हल्दी, पीपरामूल, चित्रक, छाणा, त्रिफला, गजीपर, सूंठ, कालीमिर्च और सैन्धा नमक बराबर मात्रा में लेकर इसे अदरक के रस में घोटकर फिर इसमें चार गुनी शक्कर तथा चार गुनी गुग्गल मिलाकर गोलियां बनानी चाहिए।

नित्य सुबह शाम एक एक गोली का सेवन करने से शरीर के समस्त विकार नष्ट हो जाते है, अनावश्यक चर्बी पिघला जाती है और पूरा शरीर संतुलित, बेदाग, आकर्षक और सौन्दर्य युक्त बन जाना है।

वास्तव में ही ये सभी नुस्खे शत-प्रतिशत प्रामाणिक हैं और आश्चर्यजनक सफलता देने में समर्थ हैं, मैंने कई बार इन्हें आजमाया है और हर बार सफलता प्राप्त की है। आप भी इन्हें प्रयोग कर इनमें चमत्कारिक परिणामों को अनुभव कर सकते हैं।

अपने व्यक्तिगत विश्वस्त वैद्य या चिकित्सक की सलाह से ही इन औषधियों का सेवन करें।

कर्णपिशाचिनी को थप्पड़ मैंने मारा था

रातों रात ही प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच गया था मैं . . बड़े से बड़ा सेठ भी गिड़गिड़ाता था मेरे सामने . . यजमान वृत्ति से पेट भरने वाला मैं गरीब ब्राह्मण अब त्रिकालज्ञ माना जाने लगा था . . और फिर मैंने कहा-

- *रेल के डिब्बे में अनजान यात्री से-"तुम कत्ल करके भाग रहे हो"।*
- *एक सौम्य स्त्री से-"तुम कुल्टा हो पर पुरुष से अवैध सम्बंध है तुम्हारे"।*
- *एक निर्दोष से व्यक्ति से-"आज शाम को ही अपने मित्र की हत्या की योजना है तुम्हारी"।*
- *एक मासूम षोडशी से-"कल रात ही अपने प्रेमी के साथ तुम घर से भाग आई हो"।*
- ***यह सब गोपनीय जानकारी आप भी हासिल कर सकते हैं . . . इस कर्ण पिशाचिनी साधना से . . .***

छः माह बीत चुके थे मुझे गाँव छोड़े हुए। घर की दरिद्रता से विकल होकर मैं जीवन से विरक्त हो चुका था। अक्सर मैं सोचता-"मेरे पूर्वज उच्चकोटि के ब्राह्मण थे। उनके पास अलौकिक सिद्धियाँ थीं, ज्योतिष के क्षेत्र में वे अद्वितीय थे। काल को अपने चिन्तन से उन्होंने बांध रखा था, पर आज वे विद्यायें कहाँ है?"।

अपने ब्राह्मणत्व पर लांछन लगते देखना मुझे असह्य था। मैंने तो निश्चय कर लिया था कि मुझे उन विशिष्ट योगियों तक पहुंचना है जिनके पास अलौकिक ज्ञान है, जिनसे मैं कुछ साधनात्मक बल प्राप्त कर सकूं।

अमरकंटक के पास विचरण करते हुऐ एक दिन मुझे श्रीमाली जी के दर्शन हो गये। कोई साधनात्मक शिविर चल रहा था। मौका देखकर मैंने उनसे भेंट की और अपनी व्यथा से अवगत कराया। मेरे ज्योतिष के प्रति रुझान को देखकर शायद उनका हृदय पसीज उठा, मुस्कुराकर बोले, "तू कर्णपिशाचिनी सिद्ध कर ले"।

पिशाचिनी का नाम सुनते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गये। सुना था कि यह वाममार्गी साधना है और अत्यन्त वीभत्स तरीके से सम्पन्न की जाती है। सारे वैदिक कर्म त्याग देने पड़ते हैं और साधना खण्डित कर देने पर तुरन्त मृत्यु हो जाती है। साथ ही साथ कर्णपिशाचिनी को सिद्ध कर लेने के बाद भी उसकी कामपिपासा शान्त करनी पड़ती है और उसमें आनाकानी करने पर वह गला घोंट देती है। ये सभी कर्म मेरे पवित्र आनुवांशिक संस्कारों से भिन्न थे और मैं कल्पना में भी यह घृणित कार्य नहीं कर सकता था।

मेरे सारे संशय श्रीमाली जी भांप गये। अब उन्होंने एक नवीन रहस्य खोला, "कर्णपिशाचिनी साधना को दक्षिणमार्गी तरीके से भी सम्पन्न कर सकते हैं और यह तुम्हारी ब्राह्मण वृत्ति के अनुकूल भी रहेगा, पर इसके लिये तुम्हें सर्वप्रथम गुरु दीक्षा लेनी पडेगी।"

दीक्षा लेकर साधना रहस्यों को समझने के बाद मैं घर लौट आया और शुभ मुहूर्त में साधना आरम्भ की। घर के

एकान्त कक्ष को मिटटी और गोबर से लीपकर उस पर कुश बिछाई और मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त कर्णपिशाचिनी यंत्र स्थापित कर भगवती कर्णपिशाचिती का पंचोपचार पूजन किया और फिर काली हकीक माला से निम्नलिखित मंत्र जप आरम्भ किया।

मंत्र

"ॐ हंसो हंस: नमो भगवति
कर्णपिशाचिनी चंडवेगिनि स्वाहा"

कर्ण पिशाचिनी शब्द से घबराने की जरूरत नहीं है। एक सरल सौम्य एवं मधुर साधना है, जिसे कोई भी स्त्री या पुरुष सम्पन्न कर सकता है और जिसे सिद्ध करने पर साधक किसी भी अनजान पुरुष या स्त्री के मन के भेद जान सकता है। उसके भूतकाल की गोपनीय से गोपनीय बातें ज्ञात कर सकता है. . . और

नित्य दस हजार मंत्र जप करता था मैं। पांचवें दिन ऐसा लगा जैसे मेरे कक्ष में कोई स्त्री जोरों से हंस रही है। उसकी हंसी अत्यन्त वीभत्स थी और चूड़ियों की खनक मन में भय भी उत्पन्न कर रही थी परन्तु मैं देवी के चित्र पर नजर टिकाये मंत्र जप करता रहा।

सातवें दिन तो वह स्त्री सचमुच मेरे सामने प्रकट हो गई-लम्बे बिखरे केश, अंगरों सी आंखे, निवर्सन देह पर हड्डियों के आभूषण, मेरी चीख निकलते निकलते बची। अचानक उसने मेरे बाल मुठ्ठी में पकड़कर जोरों से झकझोर दिये। मेरी आखों के सामने तारे नाच उठे, पूरे कमरे में मरे हुए जानवर की दुर्गंध सी फैल गई। आंखे खोलकर देखा तो वह जा चुकी थी। खैर मैंने मंत्र-जप पूरा कर लिया।

साधना की नवीं रात्रि को मेरे गालों पर एक झन्नाटेदार तमाचा पड़ा। मैं संज्ञाशून्य होते-होते बचा। नजरें उठाई तो वही भयानक स्त्री खड़ी थी। कड़ककर उसने कहा, "बन्द कर यह मंत्र जप। क्या मिलेगा तुझे इससे? अब अगर यह कार्य किया तो गला दबोचकर तेरा खून पी जाऊंगी" और वह अट्टहास कर उठी।

मेरे पुन: मंत्र जप करने पर उसने मेरे गले को पकड़ लिया। गले की नसें उभर आयीं। आंखे बाहर को निकलने लगी और पूरा शरीर काँपने लगा। मुंह से घरघराहट सी आवाज ही निकल रही थी। मृत्यु को स्पष्ट सामने अनुभव कर मैंने गुरुदेव के चरणों का स्मरण किया। तुरंत उसने हाथ हटा लिया और बाहर निकल गई।

मेरी हिम्मत जवाब दे गयी थी। पर गुरु आज्ञानुसार मैं पुन: दसवें दिन साधना में बैठा। आज तो कमाल ही हो गया। रात्रि में लगभग दो बजे एक अतीव सुन्दरी प्रकट हुई, गुलाबी कंचुकी, गुलाबी ओढ़नी में वह सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा लग रही थी, उसके पूरे शरीर से मादक सुगंध प्रवाहित हो रही थी। एक क्षण को तो मैं विचलित हुआ पर तुरंत गुरुदेव का स्मरण हो आया कि वह कर्णपिशाचिनी हर दृष्टि से मुझे डिगाने का प्रयत्न करेगी, पर मंत्र जप नहीं तोड़ना है।

तभी उसने अपना सिर मेरे कन्धे पर रख दिया और मेरे पूरे शरीर से बिजली सी दौड़ गई। उसकी मादक सुगन्ध से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हुए मैं मंत्र जप करता रहा।

आज साधना का अन्तिम दिन था, और मेरी परीक्षा का भी। मंत्र जप आरम्भ करते ही वह अप्सरा सी रूपसी सामने आ गई। आज उसने जी भर कर श्रृंगार किया था, हंसनी ग्रीवा और उन्नत वक्ष मानो आमंत्रण दे रहे थे, यौवन से भरा हुआ उसका शरीर ऐसा लग रहा था मानो कामदेव अपनी प्रत्यंचा टेढ़ी कर पूरे विश्व पर विजय प्राप्त करने के लिये आतुर हो। निश्चय ही आज वह अपने रूप, यौवन और माधुर्य की त्रिवेणी ने मुझे डुबो देने को कटिबद्ध थी।

तभी उसने आगे बढ़कर मेरे गले में हाथ डाल दिया, स्पर्श होते ही जैसे मेरे पूरे रक्त में उबाल सा आ गया, मै अटक-अटक कर मंत्र उच्चारण कर रहा था। उसके शरीर की महक मेरे पूरे अंतर को मथ रही थी। मैंने गुरुदेव को स्मरण किया और अचानक मेरी विवशता क्रोध में परिवर्तित हो गयी। उस रूपसी के मेरी गोद में लेटने के बावजूद भी मैं पूरी शक्ति से मंत्रोच्चारण करने लगा।

अन्तिम माला पूरी होते होते उसने मेरे शरीर से खेलना आरंभ कर दिय, मेरे शरीर को पकड़कर कई बार भींचा, पर मैं अविचलित भाव से आसन पर स्थिर था। जप समाप्ति करते ही मेरा एक झन्नाटेदार तमाचा उस रूपसी के गाल पर पड़ा।

वह सन्न रह गयी, स्वप्न में भी उसे गुमान नहीं था कि उसका सौन्दर्य इस प्रकार प्रताड़ित हो जायेगा। पर अब वह विवश थी, भीतहरिणी की भांति क्योंकि

मेरी साधना अब सफल हो चुकी थी, मैंने उसे क्यों मारा, वह मेरी समझ के बाहर था शायद ग्यारह दिनों तक उसके अत्याचार सहन करने का आक्रोश ही उस तमाचे के रूप में सामने आ गया था।

अब मेरे सामने एक सौम्य स्त्री खड़ी थी। उसने मुझे आश्वस्त किया कि जब भी मैं कुछ प्रश्न पूछूंगा वह मेरा जवाब देगी और जीवन भर मेरी आज्ञाओं का पालन करेगी।

इसके बाद तो मेरा जीवन ही बदल गया आर्थिक वृद्धि तो असाधारण रूप से हुई है। किसी को भी देखते ही उसका भूतकाल मेरे सामने स्पष्ट हो जाता है और वह मुझे त्रिकालज्ञ मान बैठता है। वास्तव में ही यह एक चमत्कारी साधना है जिसे सम्पन्न कर कोई भी गृहस्थ व्यक्ति सांसारिक दृष्टि से पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

परिचय

सुभाष शर्मा, दिल्ली

निःस्वार्थ भाव से पूज्य गुरुदेव से जुड़कर इस साधक ने शिष्यत्व की सही पहिचान दी है, और आज भी चौबीसों घण्टे अनथक प्रयत्न कर गुरुभाइयों के लिये यह व्यक्तित्व जो कार्य कर रहा है, वह आशीर्वाद के योग्य है।

आपके हाथों में जिस सुन्दर सुरुचिपूर्ण तरीके से पत्रिका पहुंच रही है, उसका बहुत कुछ श्रेय शर्मा जी को है। इन्होंने खुले आम ऐलान कर रखा है कि हर हालत में मैं जुलाई तक इस पत्रिका को एक लाख तक पहुंचाकर ही दम लूंगा।

अप्रैल माह में आपका भविष्य

मेष : मास उत्साहवर्धक और उपलब्धिपूर्ण होगा। शत्रु पक्ष का पराभव होगा। नवीन योजनाओं में उल्लेखनीय प्रगति होगी। उदर और पित्त के विकार पनप सकते हैं। रचनात्मक कार्यों के लिए यह अनुकूल समय होगा। मासांत में सुखद यात्रा के संयोग हैं।

वृष : विषम परिस्थितियों का उदय होगा परन्तु साहस और परिश्रम से कार्यों में सफलता मिल सकेगी। संभाषण पर नियंत्रण रखें। शत्रुओं के गुप्त षडयंत्र कार्यों से अवरोध तथा अल्प अस्वस्थता का सामना करना पड सकता है। विद्यार्थी जनों को पठन पाठन की अधिकता रहेगी।

मिथुन : आजीविका सम्बंधी कार्यों में तीव्रगामी सफलता मिलेगी परन्तु धार्मिक अथवा मांगलिक कार्यों में व्यय अधिक होगा। नवीन वस्तु का क्रय होगा। प्रियजन के कारण भावात्मक पीड़ा का सामना करना पड़ सकता है। परोपकारी प्रयासों में सावधानी बरतें। स्वास्थ्य अनुकूलता ही रहेगी।

कर्क : आध्यात्मिक अभिरूचि जाग्रत होगी। संपत्ति विवाद टालना हितकर होगा। व्यर्थ का मानसिक तनाव, अज्ञात भय विद्यमान रहेगा। राजकीय कार्यों में शत्रु पक्ष क्रियाशील रहेगा। प्रवास के योग हैं। घर में नये सदस्य का आगमन हो सकता है। अपव्यय पर नियंत्रण रखें। मासांत में उत्साह वर्धक समाचार मिलेंगे।

सिंह : मास भाग्यवर्धक है। स्वास्थ्य सम्बंधी कष्ट दूर होगें। प्रियजनों के सहयोग से रुके हुए कार्य पूरे होंगे। सृजनात्मक कार्यों में अद्वितीय सफलता मिलेगी। संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी विद्यार्थियों को परीक्षा में अनुकूल परिणाम प्राप्त होगें। मन सदा प्रफुल्लित रहेगा और आनन्ददायक यात्रा भी होगी। महिलाओं की नवीन इच्छाएं भी पूरी होंगी।

कन्या : अधिकारियों पर प्रभाव बढ़ेगा। रक्तविकार उत्पन्न हो सकते हैं। खान पान पर संयम रखें। धार्मिक आस्था में वृद्धि होगी। परिवार में कोई चमत्कार घटित हो सकता है। आर्थिक अस्थिरता का उदय होगा पर जीवन साथी के सहयोग से रुका हुआ धन प्राप्त होगा। प्रियजनों से भेंट भी होगी। शत्रु पक्ष की क्रियाशीलता से संजग रहे। मासांत में वाहनादि से सावधानी रखें।

तुला : मास संघर्ष पूर्ण तथा विषमतादायी होगा। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी। शारीरिक अस्वस्थता के कारण कार्यो में अवरोध आएगा, परन्तु पुरुषार्थ और पराक्रम से प्रतिकूल स्थितियों पर विजय प्राप्त होगी। आकस्मिक धनागम से गंभीर समस्या का समाधान हो सकेगा। महिलाओं को वाणी पर संयम रखना हितकर होगा।

वृश्चिक : मास अनुकूल फलदायी होगा। प्रेम सम्बंधों में प्रगाढ़ता आएगी। उन्नति के नवीन द्वार खुलेंगे। शत्रु पक्ष निष्क्रिय हो जाएगा। किसी महान व्यक्ति से सम्पर्क के भी योग हैं। यात्रा पीड़ादायी पर उपलब्धि पूर्ण होगी। व्यवसाय में वृद्धि के संकेत हैं। मासांत में घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे।

धनु : मास मिश्रितफलदायी है। अधिकारी वर्ग को अपमान का सामना करना पड़ सकता है अतः क्रोध पर संयम रखें। पारिवारिक दुःखों में वृद्धि होगी। मस्तिष्क में नवीन रचनात्मक विचारों का उदय होगा। विद्यार्थी वर्ग को कठिन परिश्रम करना पड़ेगा यह अंत में उन्हें आशातीत सफलता भी मिलेगी। महिलाओं को आपसी सौहार्द बनाए रखना आवश्यक है।

मकर : सम्पन्नता में आंशिक वृद्धि होगी। मित्रों के सहयोग से कई दुर्घटनाएं टलेंगी। आपसी मतभेद दूर होंगे। जोड़ों में दर्द कष्ट दे सकता है। भावात्मक दबाव भी बढ़ेगा। लेखन कार्यों में तीव्रता आएगी और समाज को नेतृत्व प्रदान करने की भी क्षमता उत्पन्न होगी। सहनशीलता रखना आवश्यक होगा। मासांत में विशिष्ट व्यक्ति से भी भेंट होगी।

कुम्भ : कठिन परिश्रम का परिणाम धन लाभ के रुप में मिलेगा। परिवार में नवीन योजनाएं बनेगीं। पुत्र की ओर से उत्साह वर्धक समाचार मिलेगें। उच्चाधिकारियों से सहयोग भी प्राप्त होगा यह विवादस्पद स्थितियों से बचना ही हितकर होगा। पत्नी के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव से पड़ सकता है। पारिवारिक खिन्नता से अप्रिय घटनाएं घट सकती है। वाहन पर व्यय अधिक होगा। शत्रु पक्ष के षडयंत्रों का भी पता चलेगा।

मीन : उद्यम के नवीन अवसरों का उदय होगा। प्रणय सम्बंध मजबूत होगें। मनोवांछित जीवन साथी के मिलने के भी आसार हैं। परोपकारी कार्यों में व्यय होगा। शत्रुपक्ष की क्रियाशीलता चिन्तनीय रहेगी। यात्रा के दौरान स्वजनों के भेंट होगी। शरीर में कमजोरी अनुभव हो सकती है यद्यपि रोगों से सुरक्षित रहेंगें। आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है सन्देहास्पद व्यक्तियों से दूर रहना हितकर रहेगा। ●

सितारों, ग्रहों, चांद तारों से पूछो।
तुम्हारे रहे है, जहां भी रहे है।।

-एस.के मिश्रा, प्रयाग

एक · साक्षात्कार

अनास्था में आस्था

साक्षात्कार एक साधक से

अरुण कुमार श्रीवास्तव पूज्य गुरुदेव के प्रिय शिष्य हैं और साधनात्मक क्षेत्र में उच्च अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं। पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में साधनाएं सम्पन्न कर इन्होंने कई सिद्धियों को भी हस्तगत किया है। उनका दावा है कि वर्तमान युग में भी मंत्र तंत्र उतने ही प्रभावी और अचूक हैं जितने की वे प्राचीन काल में थे, और कोई व्यक्ति साधनात्मक क्षेत्र में प्रवेश कर जीवन को पूर्णता से प्राप्त कर सकता है। प्रस्तुत है उनसे लिये गए साक्षात्कार का संक्षिप्त विवरण-

प्र०-अरुण जी। सर्वप्रथम तो आप यह बताएं कि साधनाओं की तरफ आपका रुझान कैसे हुआ?

उ०-पूर्व जन्म का संस्कार कह लीजिए। पर ये संस्कार भी तभी जाग्रत हुए जब मैं पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आया, अन्यथा मैं भी एक सामान्य भौतिकवादी की तरह देवताओं का मखौल उड़ाता था और उन्हें किस्से-कहानियों से अधिक महत्व नहीं देता था।

प्र०-गृहस्थ जीवन का निर्वाह कैसे करते हैं आप?

उ०-पेशे से मैं व्यापारी हूं, दिल्ली में ही मेरा कारोबार है और मैं उससे पूर्णतया सन्तुष्ट हूं।

प्र०-व्यापार और साधना! कैसे समन्वय कर लेते हैं आप?

उ०-आज तक तो कोई कठिनाई नहीं हुई। साधनाएं तो हमारे जीवन को अधिक सात्म सुख बनाती हैं। नौकरी पेशा होना या व्यापार करना साधना में कोई बाधा नहीं करता। यह तो जीवन का अनिवार्य कर्मक्षेत्र है। जिसे पूर्णता देने के लिये ही साधनाओं का विधान किया गया है। हां! अगर दिन भर आप अत्यधिक व्यस्त हों तो रात्रि समय में भी आप मनोवांछित साधन सम्पन्न कर सकते हैं। समय तो आपको निकालना ही पड़ेगा।

प्र०-क्या गुरुदेव जी से मिलते ही आप साधनाओं में संलग्न हो गए?

उ०-ऐसा नहीं है। प्रथम बार जब मैं श्रीमाली जी से मिला तो वे मुझे सामान्य गृहस्थ ही प्रतीत हुए, मेरी बुद्धि मुझ पर हावी हो गयी और मुझे संशय भी हुआ कि इन्हें कुछ ज्ञान है भी या नहीं। इन्हें गुरु बनाऊं भी या नहीं। खैर कुछ मित्रों की सलाह पर मैंने सामान्य गुरु दीक्षा ले ली, और अविश्वास के झूले पर झूलता हुआ ही घर लौट आया।

प्र०-फिर पहली बार साधना करने का मानस कैसे बना आपका?

उ०-प्रतिकूल परिस्थितियां चल रहीं थीं उस समय। मेरी सारी मेहनत के बाद भी कारोबार में बराबर घाटा हो रहा था, चारों ओर से शत्रु हावी हो रहे थे मुझ पर। उन्होंने तीन चार मुकदमें भी दायर कर दिये थे, इन्हीं सब चिन्ताओं में घुलकर मेरी पत्नी का स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा था।

साधना के माध्यम से सिद्धि एवं सफलता प्राप्त होती ही है, मैं इसका जीता जागता प्रमाण हूं। आवश्यकता है गुरुदेव पर श्रद्धा, मंत्रों पर आस्था एवं साधना में विश्वास।

और फिर सिद्धियां तो पूज्य गुरुदेव के चारों ओर हाथ बांधे खड़ी हैं, यह मेरा अनुभव है।

-अरुण श्रीवास्तव, दिल्ली

हर तरफ से निराश होकर मुझे गुरुदेव का स्मरण हो आया उनसे सुना था कि साधना के माध्यम से हर समस्या का निराकरण हो सकता है। मैंने सोचा चलो कोशिश करके देख लेते हैं, समस्या भी सुलझ जाएगी और तंत्र मंत्र की प्रामाणिकता का भी पता चल जाएगा।

प्र०-किस प्रकार गुरुदेव जी ने आपका मार्गदर्शन किया?

उ०-जोधपुर पहुंचते ही मैंने विशिष्ट दीक्षा ले ली। गुरुदेव जी को अपनी व्यथा से अवगत कराया और साधना आरंभ करने की अनुमति मांगी। यह भी बता दिया कि मैं एक्सपेरिमेंट के तौर पर यह काली साधना करना चाहता हूं, ताकि मुझे इसकी सत्यता ज्ञान हो सके।

उन्होंने कठोर शब्दों में समझाया कि साधना कोई एक्सपेरिमेंट करने की वस्तु नहीं है। तूने अपने जीवन में विवाह किया, संतान उत्पन्न की। क्या वह सब एक्सपेरिमेंट के तौर पर तू कर रहा था? अध्यात्म में संशय का कोई स्थान नहीं है। बिना विश्वास से साधना में बैठेगा तो सात जन्म में भी सफलता नहीं मिलेगी। पहले आस्था की नींव मजबूत कर, फिर मेरे पास आना।

एक महीने तक गुरु मंत्र जप कर मैंने स्वयं को परिवर्तित करने का प्रयास किया। मन में उठते तर्क-कुतर्क को शांत किया और दृढ़ निश्चय के साथ गुरुदेव के पास पहुंचा। इस बार उन्होंने मुझे बगलामुखी दीक्षा दी और साधना के गोपनीय रहस्यों को भी समझा दिया।

प्र०-कृपया बतायें आपने यह साधना किस प्रकार सम्पन्न की?

उ०-कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से मैंने यह साधना प्रारंभ की। साधना कक्ष को मैंने पीले रंग में रंगवा लिया था। रात्रि १० बजे में पीली धोती पहनकर, दक्षिण की ओर मुंह कर पीले आसन पर बैठा। सामने पीले तख्ते पर बगलामुखी का चित्र और यंत्र स्थापित कर लिया। ये दोनों ही उपकरण मंत्र सिद्ध और प्राण प्रतिष्ठा युक्त थे। जोधपुर कार्यालय से ही मैंने इन्हें प्राप्त कर लिया था। तत्पश्चात् पीले पुष्पों से पूजत कार्य सम्पन्न कर मैंने निम्नलिखित मंत्र का जप आरंभ किया-

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व्व दुष्टांना व्वाचम्मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा

काली हकीक माला से मैं नित्य १०१ माला मंत्र जप पूरा करता था। इस तेरह दिनों की साधना में मैंने मात्र दूध का ही सेवन किया और गृहस्थ से सम्बंधित कोई कार्य नहीं किया।

प्र०-अपने साधनात्मक अनुभवों को उजागर करेंगे आप?

उ०-क्यों नहीं। आज के संशय भरे वातावरण में तो यह आवश्यक भी हो गया है। साधना आरंभ करते समय मेरे मन में भी अनुभूतियों की लालसा थी पर जब सात दिनों तक कुछ अप्रत्याशित नहीं दिखा तो मैंने गुरुदेव को फोन किया। उन्होंने उत्तर दिया कि किसी भी हालत में साधना खण्डित न करूं और पूरी एकाग्रता के साथ मंत्र जप करूं।

आठवें दिन जप करते समय मुझे अपने कक्ष में किसी स्त्री की उपस्थिति का आभास हुआ, उसकी भयानक सी हंसी भी सुनाई दी, वह बार-बार चूड़ियां खनका कर मेरा ध्यान बंटाने की चेष्टा कर रही थी, यह मैंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

दसवीं रात्रि को अचानक एक बिम्ब सा उपस्थित हुआ लम्बे बिखरे केश, पूरे शरीर की हड्डियां निकली हुई, डरावनी आंखें अंदर को धंसी हुई, गले में अस्थियों की माला, एक भयानक स्त्री स्वरूप अट्टहास कर रहा था। मेरी तो चीख ही निकल गई, पर तुरंत गुरुदेव को स्मरण किया और किसी प्रकार १०१ मालाएं पूरी कर लीं।

मेरी हिम्मत जवाब दे रही थी, घबराकर गुरुदेव जी को फोन किया तो उत्तर मिला कि हर हालत में साधना पूरी करनी ही है। और बिना साधना पूरी किये मिलने नहीं आना है। किसी तरह ग्यारहवीं और बारहवीं रात्रि को जप सम्पन्न कर लिया इन दोनों ही रात्रियों को मेरे सीने पर कई लातें पड़ीं, मेरे केश खींचे गये, धमकाया गया, यहां कि गला भी पकड़ा गया। पर गुरुदेव जी तो सदा साथ थे, कुछ नुकसान तो होना ही नहीं था।

तैरहवीं रात्रि को जैसे ही मैंने अंतिम माला पूरी की, कमरे में तेज प्रकाश सा हो गया, भगवती बगलामुखी अपने दैदीप्यमान स्वरूप में मेरे समक्ष थीं, उनका मुस्कराता मुख और अभय मुद्रा सदा के लिये मेरे चित्त पर अंकित हो गया।

प्र०-वास्तव में ही काफी रोमांचक रहा आपका अनुभव। साधना सिद्ध होते ही सबसे पहले आपने क्या किया?

उ०-करना क्या था? भागा सीधे जोधपुर। देखते ही गुरुदेव जी मुस्कराए कुछ अनुभव हुआ या नहीं? मैं उनके चरणों से लिपट गया। वार्तालाप की अब कोई आवश्यकता ही नहीं थी वे तो सर्वज्ञ थे, क्या बताना था उन्हें।

उन्होंने आशीर्वाद दिया और बताया कि जब भी इस मंत्र का प्रयोग करना हो तो ग्यारह माला मंत्र जप सम्पन्न करके ही कार्य पर निकलूं, साथ ही बताया कि इस मंत्र में शत्रु के नाम का संकल्प करूं, इतना ही पर्याप्त है।

प्र०- तो इस साधना का लाभ आपको किन रूपों में मिला?

उ०- जिस दिन कचहरी में मेरी पेशी होनी थी, मैं प्रातः ही ग्यारह माला मंत्र जप सम्पन्न कर मुकदमे की सुनवाई के लिये पहुंचा और मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब न्यायाधीश ने सभी फैसले मेरे पक्ष में दिये। भय वश अन्य शत्रुओं ने भी उसी दिन मुझसे समझौता कर लिया। और तो और उन्होंने अपने पूर्व कृत्यों के लिये मुझसे क्षमा याचना भी की।

प्रसन्न मन से छुट्टियां बिताने में ऊटी चला गया। शाम को वापस आते समय अचानक किसी अपराधी ने मुझ पर चाकू से हमला करना चाहा। मैं अकेला ही था परंतु हठात् ही उस समय मेरे मुख से बगलामुखी मंत्र उच्चरित हो गया और मैंने देखा कि एक दिव्य शक्ति ने उस चाकू के प्रहार को रोक लिया है, संतुलन बिगड़ जाने से वह चाकू उसी व्यक्ति की बांह में जा घुसा। एक भयानक हादसा होते-होते टल गया।

अब भी किसी उच्चाधिकारी से मिलने के पूर्व इस मंत्र का उच्चारण कर लेता हूं और अप्रत्याशित रूप से वह मेरी सारी बातें मान लेता है।

साधना सम्पन्न होने के तीन महीनों के अंदर ही मुझे आश्चर्यजनक उपलब्धियां मिली हैं। आर्थिक दृष्टि से मुझे विशेष लाभ हुआ है। सारा ऋण मैंने चुका दिया और व्यापार में भी लगातार सफलता मिलती जा रही है। एक तरह से मेरी पूरी जिंदगी सुखी निर्द्वंद्व और आनन्ददायक बन चुकी है और इन सबका श्रेय इस अद्वितीय बगुलामुखी साधना को ही है।

प्र०-पाठकों के नाम कोई संदेश देना चाहेंगे आप?

उ०-एक साधक के रूप में मैं उन्हें यही संदेश दूंगा कि वे साधना क्षेत्र में प्रविष्ट हों, पूरी लगन और श्रद्धा के साथ। बुद्धिजीवी वर्ग भी आगे आकर स्वयं देखें कि मंत्रों की विस्फोटक शक्ति आज भी गोली सा असर करती है। यज्ञ कुण्ड में अग्नि आज भी मंत्र द्वारा प्रज्ज्वलित होती है और आज भी देवी देवताओं से साक्षात्कार किया जा सकता है।

साधक गण भी एकान्त कक्षों से निकल कर सामने आएं, और आध्यात्मिकता के वातावरण का निर्माण कर साधना के सही स्वरूप को उजागर करें, एक स्वस्थ और सुखी समाज के निर्माण में सहभागी बनें। यही मेरी इच्छा है। यही मेरी कामना है।

ग्रहनाश भूतेश्वर मंत्र

एक अद्वितीय मंत्र - जो समस्त प्रकार की बाधाओं परेशानियों और कष्टों का शमन करने वाला है, जो भूत प्रेत पिशाच तंत्र-बाधा निवारण में अद्वितीय है, एक तेजस्वी मंत्र.....

ग्रहों का मानव जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है और वह वह चाहे अनचाहे उनके प्रभाव से मुक्त न होकर प्रायः वह करने में अपने को असमर्थ पाता है जो उसका चिंतन होता है, या उसकी इच्छा, लक्ष्य होता है। ऐसे में एक प्रकार की हतोत्साह की स्थिति बन जाती है। इसके निवारण के लिये शास्त्रों में एक श्रेष्ठ विधान दिया गया है जिसका नित्य पाठ करने से सभी प्रकार की ग्रहबाधा में लाभ होता है-

अथ श्री ग्रहनाशन भूतेश्वर मंत्र

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलीकलीनखाय रौद्र दंष्ट्रा कराल व वत्राय त्रिनयनाय धगधगित पिशंगललाट नेत्राय तीव्र कोपान लामित तेज से पाश शूल खटवांग डमरू धनुर्बाणमुद्‌गराभयदण्डतास मुद्रा व्ययदण्डतासमुद्रा व्ययदसंपदाइदण्डमञ्जिताय कपिलजटाजूटादि चन्द्र धारिणे भस्मरागरञ्जित विग्रहाय उग्रफाणिकाल कटाकूट मण्डितकण्ठदेशाय जय जय भूतनाथामरात्मन् रूपं दर्शय दर्शय नृत्य नृत्य चल चल पाशेन बंध बंध हुंकारेण त्रासय त्रासय वज्रदण्डेन हन हन निशित खंगेन छिन्धि छिन्धि शूलाग्रेण भिन्धि मिन्धि मुद्‌गरेण चूर्णय चूर्णय सर्वग्रहानावेशयावेशय स्वाहा।

शास्त्रोक्त कथन है कि मधु से सिक्त गुग्गुल का घी के साथ धूप देते हुए यदि पीड़ित व्यक्ति पर इस मंत्र के साथ प्रयोग करे तो वह ग्रह बाधा से मुक्त हो जाता है। यूं भी नित्य इसके एक या पांच पाठ करने से नित्य प्रति सुखद व मंगलमय वातावरण बनता ही है।

भूगर्भ निधि

प्राचीन काल से ही मनुष्य की रुचि ऐसे धन को प्राप्त करने में रही है जो पूर्वजों द्वारा या किन्हीं विपरीत परिस्थितियों में किसी के द्वारा दबा दिया गया हो। दबे खजानों को लेकर अनेक कथाएं समाज में प्रचलित ही हैं एवं प्रायः यह माना जाता है जहां कहीं सांप का बिल हो वहां खजाना होता है। शास्त्रों में भी इस विषय में पर्याप्त विवेचन मिलता है जिसे मैं इच्छुक पाठकों के लिये स्पष्ट कर रहा हूं। इस मंत्र के प्रयोग से मानव न केवल दबे खजाने धन आदि के विषय में वरन् समस्त निधियों के विषय में ज्ञान अर्जित कर महत्वपूर्ण सहयोग दे सकता है। यह महत्वपूर्ण मंत्र इस प्रकार है-

ॐ नमो भगवते रुद्राय कल्कले पांजनं दर्शय दर्शय स्वाहा ठः ठः।

वस्तुतः यह एक विशद विषय है एवं इस विषय में योग्य गुरु के निर्देशन में विभिन्न क्रियाएं सम्पन्न कर समुचित ज्ञान प्राप्त हो सकता है। मदन मेखला नामक यक्षिणी की साधना इस क्षेत्र में विशेष फलप्रद पाई गई है।

अनिन्द्य अद्वितीय सौन्दर्य

के

छः आसन- मंत्र

सौन्दर्य कहते ही एक ऐसा पुंज साकार हो उठता है जो अपने आप में बेदाग हो, सम्मोहक हो, अद्वितीय हो, जिसमें गुलाब की कोमलता और ताजगी हो, और ऐसा सौन्दर्य योगासनों के द्वारा ही प्राप्य है।

और यदि आसनों के साथ मंत्र शक्ति भी सम्मिलित हो जाए तो वह सौन्दर्य अपने आप में एक आनंद का स्रोत, मधुरता का प्रवाह बन उठेगा, एक सनसनाहट सी फैल जाएगी जो अमिट होगी।

छः राज की बातें प्रस्तुत हैं.... .सर्वांग सुन्दरी बनने के लिये.....स्त्रियों के लिये वरदान के रूप में....

सौन्दर्य और स्त्री तो एक दूसरे के पर्याय ही हैं, और प्रत्येक स्त्री ऐसा सौन्दर्य प्राप्त करना चाहती है जिसे देखते ही हृदय की धड़कन रुक सी जाए, जो सीधे ही हृदय में उतर जाए, जो हर पल नवीन और आकर्षक बनी रहे। और ऐसा ही सौन्दर्य प्राप्त हो सकता है अग्रलिखित छः आसनों का नियमित अभ्यास करने से।

१. धनुरासन

पेट के बल लेट जाएं। घुटनों को मोड़कर दोनों हाथ पीछे ले जाकर दोनो पैरों को टखने के पास मजबूती से पकड़ लें, अब दोनों जांघों सिर व सीने को भूमि से ऊपर उठाएं केवल नाभि के आसपास का हिस्सा जमीन पर टिका रहने दें। इसके बाद पैरों को आगे की ओर तथा हाथों को पीछे की ओर खींचने का प्रयत्न करें। ऐसा करने पर शरीर का आकार धनुष की भांति हो जायेगा।

मंत्र

ॐ हूं.

लाभ- इस आसन से उदर के तमाम विकार नष्ट हो जाते हैं। जठराग्नि तीव्र होती है। गर्भाशय के रोग दूर हो जाते हैं। नेत्र ज्योति बढ़ती है। आवाज मधुर बनती है। चर्बी दूर होकर शरीर को सुन्दर आकार प्रदान करती हैं।

२. उष्ट्रासन

दोनों पैरों को पीछे मोड़कर घुटनों के बल बैठें। दोनों एड़ियों के मध्य में नितम्ब भाग रखें। पैर का ऊपरी हिस्सा भूमि पर ही रहेगा और अब दोनों हाथों को दोनों जांघों पर रखें। रीढ की हड्डी पूरी तरह सीधी रखनी चाहिए। तत्पश्चात धीरे-धीरे कमर, पीठ और गर्दन को पीछे झुकाए, गर्दन जितनी पीछे झुकेगी, उतना ही अच्छा रहेगा।

मंत्र

ॐ ॐ हूं हूं ॐ ॐ

लाभ- इस आसन से कद बढ़ता है। पीठ तथा पैरों में होने वाले वात रोग का नाश होता है। पाचनशक्ति बढ़ती है। फेफड़े, हृदय और कमर से संबंधित सभी रोग नष्ट हो जाते हैं। आंखों के विकार दूर होते हैं। और शरीर सशक्त बनता है।

३. मत्स्यासन

पद्मासन में बैठकर पीछे की ओर हाथों के बल सावधानी पूर्वक लेट जाएं। बांये हाथ से दाहिने हाथ की ओर दाहिने

हाथ से बायें हाथ की भुजा को पकड़ लें। सांस बाहर निकालते हुए कमर हो ऊपर उठायें। घुटने नितम्ब तक तथा सिर के शिखर को पृथ्वी से लगाकर रखें। अब ठोड़ी को गले के नीचे सीने के ऊपर वाले भाग पर लगावें।

मंत्र

"ॐ"

लाभ- इस आसन से गले, सीने, पेट की सब व्याधियां दूर हो जाती हैं, नेत्र ज्योति बढ़ती है, रक्त प्रवाह तीव्र होता है, वक्षस्थल का विकास होता है तथा त्वचा के रोग नहीं होते। श्वास प्रक्रिया अच्छी होती है।

४. भुजंगासन

पेट के बल लेटकर पांव के दोनों अंगूठों को खींचकर रखें। हाथ को पीछे कमर की ओर ले जाएं। तत्पश्चात् मस्तक और सीने को पीछे की ओर धीमी गति से ले जाएं। नाभि भूमि पर ही टिकी रहे। शरीर का सारा भार हाथ के पंजों पर डाल दें। सिर को यथा संभव पीछे की ओर ले जाएं। दृष्टि को ऊपर की ओर स्थिर रखें।

मंत्र

"ॐ"

लाभ- इस आसन से सम्पूर्ण नाड़ी तंत्र चैतन्य, शक्तिशाली, सुदृढ़ बनता है। रीढ़ की हड्डी के विकार दूर हो जाते हैं। पेट के स्नायु खिंचने से उदरस्थ अवयवों को शक्ति मिलती हैं। रजोधर्म संबंधी सारी तकलीफे नष्ट हो जाती है। हृदय मजबूत बनता है, वक्षस्थल पुष्ट होता है तथा शरीर में नव स्फूर्ति का संचार होता है।

५. चक्रासन

पैरों में थोड़ा अंतर रखकर सीधे खड़े हो जाएं। हाथों को ऊपर करें। श्वांस अंदर भरकर हाथों के पीछे की ओर ले जाएं। सिर तथा पीठ को पीछे झुकाएं। फिर धीमे-धीमे सावधानी पूर्वक हाथों को भूमि पर रखें। हाथों के पंजे पैरों की ओर रखें। प्रयत्न करके हाथों तथा पैरों को समीप लाएं। इससे सारा शरीर चक्रवत् बन जाएगा।

मंत्र

'ह्लीं'

लाभ- इस आसन से सिर गले, उदर, पीठ, कमर, भुजाएं, पांव इत्यादि अनेक अंग पुष्ट होते हैं, जोड़ों का दर्द नहीं रहता। पाचन शक्ति बढ़ जाती है। अनावश्यक चर्बी दूर हो जाने से पूरा शरीर तेजस्वी तथा स्फूर्तिवान बन जाता है। नियमित अभ्यास करने से वृद्धावस्था में भी कमर नहीं झुकती।

६. सर्वांगासन

पीठ के बल लेट जाएं। दोनों हाथ बगल में रखें। दोनों पैर सीधे रखें। अब दोनो पैरों को ऊपर उठाकर दोनों हाथों से कमर को थाम लें। ऐसा करने से कमर और पीठ का हिस्सा भी उठ जाएगा, मात्र कुहनियां भूमि पर टिकी रहेंगी। दृष्टि दोनों पावों के मध्य भाग में रखें।

मंत्र

'हुं हुं हुं हुं फट्'

लाभ- इस आसन से वात, पित्त, कफ, के दोषों का शमन होता है। थायराइड की सक्रियता बढ़ती है। मंदाग्नि, अजीर्ण, अकाल वृद्धावस्था रक्त विकार, त्वचा के दोष, दमा इत्यादि दूर हो जाते हैं। नेत्र और मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है। नियमित अभ्यास से चिर यौवन की प्राप्ति होती है।

ये सभी आसन प्रामाणिक हैं, अनुभव गम्य हैं, इनके नियमित अभ्यास से जहां तक और आपका स्वास्थ्य उन्नत होगा, वही चेहरे पर ओज और चमक भी आएगी। मात्र पन्द्रह दिन नियमपूर्वक इन आसनों का अभ्यास करें और दर्पण में अपने मुखमंडल और शरीर सौष्ठव को स्वयं आंक लें-एक अमिट, स्थायी, प्राकृतिक और मनोमुग्धकारी सौन्दर्य की स्वामिनी बन चुकी होंगी आप!

वायवीय मंत्र

से

किसी भी तथ्य का मूल रहस्य जब तक हमें समझ में नहीं आता तब तक वह असंभव ही लगता है। हमारी बुद्धि उस स्तर तक सोच ही पाती कि ऐसा भी हो सकता है, परंतु जब वह गुप्त कुंजी मिल जाती है, जब वह सिद्धि हस्तगत हो जाती है तो जन्म - जन्म की दरिद्रता समाप्त हो जाती है और ऐसी ही साधनाओं में से एक-वायवीय साधना।

आइये देखें प्रसिद्ध योगी हर्षानन्द जी क्या कहते हैं इस विषय में......

वायवीय साधना निश्चय ही परम गोपनीय रही है और यही नहीं वरन अधिकांश साधना-रहस्य गोपनीय ही रहे क्योंकि इनके जानकार सिद्ध योगी बाह्य जगत प्रति के उदासीन ही रहे। सुदूर हिमालय की कंदराओं में तपस्यारत रहना ही उन्हें अधिक प्रिय था। दुरुपयोग के भय से ऐसे सन्यासी अपने शिष्यों के सम्मुख भी साधनाएं उजागर नहीं करते थे और अन्तिम समय में अपने किसी अत्यंत प्रिय शिष्य को ही ऐसी साधनाओं का रहस्य समझाते थे।

भगवतपाद शंकराचार्य इस साधना के अद्वितीय सिद्धयोगी थे। अपने जीवन काल में उन्होंने हजारों बार इस विद्या का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन किया और शून्य से मनोवांछित पदार्थ प्राप्त कर लोगों को अचम्भित कर दिया। इन सामग्रियों में खास पदार्थ, स्वर्ण मुद्राएं या अन्य कोई भी पदार्थ हो सकता है।

ऐसा नहीं कि अब यह विद्या लुप्त हो चुकी है। एक दृढ़ निश्चयी साधक आज भी इस सिद्धि को हस्तगत कर सकता है और मैं भी इसी संकल्प के साथ घर छोड़कर निकला था कि किसी भी कीमत पर मुझे ऐसे गुरु के चरणों में पहुंचना है जो मुझे इस साधना रहस्य को समझा सके, दो वर्षों तक मैं भटका भी। सम्पूर्ण हिमालय के चप्पे-चप्पे को छान मारा। कुछ ऐसे साधु मिले भी जो अपने भक्तों के सामने हवा में से भभूत और छोटी-मोटी वस्तुएं प्रकट करते थे परंतु वह सब मुझे हाथ की सफाई ही प्रतीत हुई, ऐसे धूर्त पाखण्डियों से मुझे कोई सरोकार नहीं था।

इसी भ्रमण के दौरान मुझे केदारनाथ से पहले गौरी कुण्ड के पास एक योगी के दर्शन हो गये, जो कि देखने में सीधे सादे से थे परंतु उनके चेहरे पर अपूर्व तेज था। बाद में ज्ञात हुआ कि वे शंकराचार्य की परंपरा में ही उच्चकोटि के योगी प्रणवाचार्य जी थे। उस समय वे भी केदारनाथ की यात्रा पर थे अतः मैं उनके साथ हो लिया और उनका सामान अपने कंधों पर उठा लिया। वृद्ध योगी ने राहत की सांस लेकर मुझे आशीर्वाद दिया। उनके साथ रहते हुए अनेक चमत्कारिक घटनाएं घटित हुई फलस्वरूप मेरे मन में वायवीय विद्या जानने की लालसा उत्पन्न हुई। एक दिन मार्ग में चलते हुए मैं स्वयं को रोक नहीं पाया और उनसे इस विद्या के विषय में पूछ ही लिया। योगी ने अत्यंत स्नेह सिक्त शब्दों में उत्तर दिया कि यह साधना भारतीय योगियों और सन्यासियों के लिये कोई अजूबा नहीं है। हम पर्वतों पर इसी साधना के बल पर तो मस्ती के साथ रहते हैं, अन्यथा इन हिम मंडित शिखरों पर कौन भिक्षा देने आयेगा,

-यह कहकर वे खिलखिलाकर हंस पड़े।

धड़कते हुए हृदय से मैंने यह विद्या सीखने की इच्छा प्रकट की। साथ ही उन्हें आश्वस्त किया कि इसके लिये मैं किसी भी परीक्षा से गुजरने को कटिबद्ध हूं। उन्होंने कुछ क्षणों के लिये मेरी आंखों में झांका और अप्रत्याशित रूप से इस विद्या को सिखाने के लिये सहमति प्रदान कर दी। उनकी स्वीकृति मेरे लिये वरदान स्वरूप थी क्योंकि इससे मुझे दोहरा लाभ होने जा रहा था। एक तो मैं अपने जीवन को सुख सुविधा पूर्ण बना सकता था। इससे मुझे इस विद्या की प्रामाणिकता का भी ज्ञान हो जाता कि वास्तव में ही यह सत्य है अथवा कपोल कल्पित घटना।

यह मेरा सौभाग्य रहा कि मैं लगभग तीन वर्षों तक उनके केदारनाथ स्थित आश्रम में रहा और उनकी कृपा से ही मुझे वायवीय साधना में सिद्धि प्राप्त हुई। मैंने इसे सार्वजनिक रूप से सैकड़ों स्थानों पर दिखाया है और हर बार यह पूर्णता के साथ सम्पन्न हुई है।

परम पूज्य गुरुदेव से आज्ञा प्राप्त कर मैं पहली बार इस गोपनीय व दुर्लभ साधना रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं जो कि सर्वथा प्रामाणिक है।

वायवीय साधना सिद्ध करके ही एक सन्यासी हिमालय पर आनंद के साथ जीवन व्यतीत करता है। यह साधना जितनी उनके लिये महत्वपूर्ण है उतनी ही हम गृहस्थों के लिये भी उचित है। इसके माध्यम से शून्य में से मामूली सुई भी प्राप्त की जा सकती है और हाथी को भी प्राप्त किया जा सकता है।

साधना समय

शून्य साधना को सम्पन्न करने का सर्वश्रेष्ठ समय किसी भी शुक्लपक्ष के प्रथम दिन से प्रारंभ होता है। वैसे अपने गुरु की अनुमति प्राप्त कर इसे किसी भी रविवार से आरंभ कर सकते हैं। यह मात्र पांच दिनों की साधना है और शीघ्र ही सफलता प्रदान करती है।

साधना उपकरण

साधना में तीन वस्तुओं की आवश्यकता होती है जिन्हें साधक को पहले से ही प्रामाणिक स्थल से मंगाकर रख लेना चाहिए। यह ध्यान रहे कि यह वस्तुएं मंत्र सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठायुक्त हों। ये वस्तुएं हैं- १. स्फटिक माला २. बंग नाल ३. शून्य गुटिका

साधना नियम

इस साधना में साधक को पांचों दिन मात्र दूध पर ही बिताने चाहिए। अन्न ग्रहण न करे परंतु दूध जितनी बार भी चाहे और जितना भी चाहें पी सकते है। यदि दूध आप के स्वास्थ्य की दृष्टि से अनुकूल नहीं पड़ रहा हो तो सर्वथा उपवास रख कर अथवा चाय लेकर भी साधना की जा सकती है। इसके साथ ही साथ भूमि शयन, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन इत्यादि अनिवार्य है। अन्य कोई जटिल बंधन या विधि विधान नहीं है।

साधना विधि

रविवार को प्रातः स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें तथा घर के एकान्त कक्ष में सफेद सूती आसन बिछाकर सामने जल पात्र रख दें। घी का दीपक लगाएं और किसी पात्र में केशर का कुंकुम से स्वास्तिक चिन्ह बनाकर उस पर शून्य गुटिका रख दें। उसके सामने ही बंग की नाल रखें और स्फटिक माला से मंत्र जप आरंभ करें।

मंत्र

ॐ वैताली वायु मार्गेण इच्छित पदार्थ प्राप्ति क्रीं क्रीं ह्रीं हुं फट्।।

नित्य १०१ माला मंत्र जप करें। जब साधना पांचों दिन पूरी हो जाए, तब इस बंग नाल और शून्य गुटिका को किसी चांदी के ताबीज में बन्द कर अपनी दाहिनी भुजा पर धागे में बांध लें। ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है। इसके बाद जब कभी भी कोई आवश्यकता हो तो केवल एक बार मंत्र उच्चारण कर जिस वस्तु की इच्छा की जाती है, तो वह वस्तु तुरंत उसके हाथों में प्राप्त हो जाती है। इसी प्रकार इस मंत्र का एक बार उच्चारण कर ऐसी भावना मन में लाते ही वह वस्तु शून्य में विलीन हो जाती है।

इस साधना का कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता यदि साधना किसी कारण से खण्डित भी हो जाती है तो भी कोई हानि नहीं होती। यह सौम्य मांत्रिक साधना है और इसका फल शीघ्र ही प्राप्त होता है।

आज मैं घनघोर जंगल में ताजा और स्वादिष्ट भोजन प्राप्त कर सकता हूं, स्वर्ण मुद्राओं का ढेर लगा सकता हूं। जो कुछ भी चाहूं वह सामग्री हवा में मुठ्ठी लहराने ही से प्राप्त कर सकता हूं, यह सब मेरे द्वारा सिद्ध की गयी वायवीय साधना का ही कमाल है।

मैं देर तक तुझे खुद ही न रोकता लेकिन
तूं जिस अदा से उठा है, उसी का रोना है।

भविष्य को ज्यों का त्यों

बताने वाली

पंचांगुली साधना

भारतीय ज्ञान विज्ञान के अनमोल खजाने में एक महत्वपूर्ण साधना पंचांगुली साधना है। यह भविष्य कथन की महत्वपूर्ण साधना है और जो ज्योतिष के क्षेत्र में है अथवा भविष्यवक्ता हैं उनके लिये तो यह परमावश्यक साधना है। यह न केवल उन्हीं के लिये वरन जन सामान्य के लिये भी पर्याप्त उपयोगी है क्योंकि व्यक्ति यदि नौकरी में है तो इस प्रकार की साधना कर अपने अधिकारियों का प्रिय व सामीप्य प्राप्त करने वाला हो सकता है। व्यापारी अपने व्यापार में आने वाले उतार चढ़ाव का अनुमान लगा सकता है और यूं भी आप अपने भावी जीवन की विसंगतियों को समय से पूर्व यदि जान जाऐं तो बचाव के आवश्यक प्रबंध कर सकते हैं। देश के जितने भी प्रख्यात ज्योतिषी हैं उन्होंने यह साधना सिद्ध कर रखी है क्योंकि शास्त्र का ज्ञान तो अगाध है और व्यक्ति अल्पजीवन में प्रयत्न करके भी कदाचित उसे सम्पूर्णता से अर्जित नहीं कर सकता जबकि कोई दैवी बल होने पर उसका यही कार्य सुगम हो जाता है।

इस साधना में सर्वाधिक महत्व यंत्र का होता है। इसके निर्माण की विधि अत्यंत जटिल है जिसमें गणपति पूजन संकल्प, न्यास, यंत्र पूजा, प्रथमावतरण, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थ आवरण से लेकर नवमावरण के बाद भूतोसंहार करने के बाद यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा, संजीवनी क्रिया, अन्तर्मातृका, बहिर्मातृका आदि विधियों को यदि विस्तार से दिया जाये तो लगभग चालीस पचास पृष्ठों में सम्पूर्ण विधि आयेगी। मेरा उद्देश्य पाठकों को किसी जटिलता से परिचित कराना नहीं वरन इससे है कि कैसे सरलता से हम एक अद्वितीय साधना को हस्तगत कर सकें।

मेरे अनुभव में यह आया है कि यदि सही एवं प्रामाणिक तथा प्राण प्रतिष्ठित पंचांगुली यंत्र व पंचांगुली देवी का चित्र व्यक्ति को मिल जाएं और वह आगे दिये गये मंत्र का उसके समक्ष पाठ करे तो उसे कुछ ही समय में अभीष्ट फल प्राप्त होने लग जाता है। देश के श्रेष्ठ साधकों व विद्वानों का भी यही मत है।

पंचांगुली देवी का ध्यान व मंत्र मैं आगे स्पष्ट कर रहा हूं-

पंचांगुली ध्यान

पंचांगुली महादेवी श्रीसीमन्धर शासने।
अधिष्ठाती करस्यासो शक्तिः त्रिदशेशितः।।

पंचांगुली देवी के चित्र के समक्ष यह ध्यान कर नित्य स्नान के पश्चात् निम्न मंत्र का २१ बार पाठ करना फल प्रद होता है:-

"ॐ नमो पंचांगुली परशरी माता मंयगल वशीकरणी लोहमय दंडमणिनी चौंसठ काम विहंडनी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीपामध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाचमध्ये झोटिगमध्ये डाकिनीमध्ये शंखिनीमध्ये यक्षिणीमध्ये दोषणीमध्ये गणिमध्ये गारुणीमध्ये विनारिमध्ये दोषमध्ये दोषशरणमध्ये दुष्मध्ये घोर कष्ट मुझ ऊपर बुरो जो कोई करे करावे जड़े जड़ावे चिन्ते चिन्तावे तस माथे माता पंचांगुली देवी तणो वज्र निर्धार पड़े ॐ ठं ठं ठं स्वाहा।।

नित्य प्रातः नियम पूर्वक यह साधना करने से साधक की आंतरिक तीव्रता भावना एवं पवित्रता के अनुपात
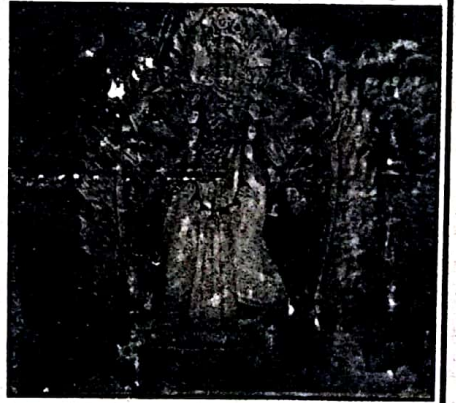
में सफ़लता भी एक माह से छः माह के भीतर प्राप्त हो हो जाती है। केंद्र ने पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शास्त्रोक्त पद्धति से अल्प संख्या में ऐसे श्रेष्ठ यंत्र व चित्र सिद्ध कराये हैं जिन्हें पत्र व्यवहार कर सुलभता से हस्तगत किया जा सकता है। पाठक इस साधना को संपन्न कर अपना भावी जीवन सुखद व निष्कंटक बनायें, यही मेरी हार्दिक कामना है।

अप्रैल मास

व्रत पर्व एवं त्यौहार

तारीख	तिथी	वार	पर्व
१-४-९३	चैत्र शुक्ल ९	गुरुवार	रामनवमी-श्री वारा महाविद्या जयंती, दोपहर ३ बजे से गुरु पुष्य योग, सभी कार्यों के लिये श्रेष्ठ।
२-४-९३	चैत्र शुक्ल १०	शुक्रवार	नवरात्रि व्रत उद्यापन।
३-४-९३	चैत्र शुक्ल ११	शनिवार	कामदा एकादशी व्रत।
४-४-९३	चैत्र शुक्ल १२	रविवार	अनंग त्रयोदशी-व्रत-प्रदोष व्रत
५-४-९३	चैत्र शुक्ल १३	सोमवार	महावीर जयंती (जैन)
६-४-९३	चैत्र शुक्ल १४	मंगलवार	स्नान व्रत आदि के लिये। चैत्र पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती, (आज मंगलवार होने से हनुमान साधना के लिये विशेष अनुकूल (वैशाख माह स्नान व्रत)
७-४-९३	वैशाख कृष्ण १	बुधवार	व्रत वैशाख माह प्रारंभ, विष्णु का कच्छपावतार, पूरे माह प्याऊ चलाना उत्तम है।
८-४-९३	वैशाख कृष्ण २	गुरुवार	यायिजय योग घंटा १७ मिनट ३८ से १९ से २७ तक।
९-४-९३	वैशाख कृष्ण ३	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी व्रत।
१३-४-९३	वैशाख कृष्ण ७	मंगलवार	सूर्य की संक्रांति घंटा २२ मिनट २५ बजे। (पंजाबी बंधुओं के लिये वैशाखी पर्व)
१४-४-९३	वैशाख कृष्ण ८	बुधवार	शीतलाष्टमी व्रत १ मेष की सूर्य संक्रांति का पुण्यकाल दिन १० बजे १५ मिनट तक है। तीर्थ स्नान दान मंत्र साधना दीक्षा आदि के लिये महत्वपूर्ण।
१६-४-९३	वैशाख कृष्ण १०	शुक्रवार	पंचक प्रारंभ घंटा १२ मिनट २० बजे से।
१७-४-९३	वैशाख कृष्ण ११	शनिवार	बरुथिनी एकादशी व्रत सबका बल्लभाचार्य जयंती।
१९-४-९३	वैशाख कृष्ण १३	सोमवार	सोम प्रदोष शिव साधना के लिये महत्वपूर्ण।
२१-४-९३	वैशाख कृष्ण ३०	बुधवार	पंचक समाप्त घंटा १३ मिनट १८ बजे। अमावस्या पूज्यगुरुदेव: जन्म दिवस महोत्सव।
२४-४-९३	वैशाख शुक्ल २	शनिवार	परशुराम जयंती, शिवाजी जयंती।
२५-४-९३	वैशाख शुक्ल ३	रविवार	अक्षय तृतीया। सभी कार्यों के लिये वर्ष का सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त। मातंगी महाविद्या जयंती।
२६-४-९३	वैशाख शुक्ल ४	सोमवार	श्री बगलामुखी महाविद्या जयंती।
२७-४-९३	वैशाख शुक्ल ५	मंगलवार	सूरदास जयंती, शंकराचार्य जयंती।
२८-४-९३	वैशाख शुक्ल ६	बुधवार	गंगा सप्तमी, गंगा जयंती, रामानुजाचार्य जयंती।
३०-४-९३	वैशाख शुक्ल ९	शुक्रवार	जानकी जयंती।

अतुलनीय बल साहस पराक्रम एवं शौर्य के लिये

हनुमान सिद्धि प्रयोग

व्यक्ति के जीवन में निरंतर ही कोई न कोई बाधा चलती ही रहती है, कभी पड़ोसी से विवाद, कभी परिवार में बीमारी, कभी राज्य पक्ष से बाधाएं, कभी शत्रु भय, कभी भूत-प्रेत का प्रकोप और व्यक्ति इनका आसान व निश्चित उपाय न जान पाने के अभाव में भटकता सा रहता है। आदि देव श्री हनुमान इन सभी ऐसी पीड़ादायक स्थितियों को समाप्त करने में विशेष सहायक हैं, एवं अपनी इन्हीं निवारक शक्तियों के कारण जन समान्य में अत्यन्त लोकप्रिय व पूज्य हैं। आवश्यकता यह है कि केवल प्रति मंगलवार को साधारण पूजन करने के स्थान पर विशिष्ट ढंग से इनकी साधना संपन्न हो। इस हेतु आवश्यक है कि साधक मंगलवार को लाल रंग के आसन पर हनुमान जी की रक्तचन्दन से बनी सिद्ध बजरंग बली यंत्र स्थापित करे एवं स्वयं भी लाल रंग के वस्त्र धारण कर लाल रंग के ही आसन पर दक्षिण की ओर मुंह करके बैठे। सामने तेल का दीपक जलाये एवं गुड़ का भोग (घी में सान कर) लगायें तथा मूंगे की सिद्ध माला से निम्न मंत्र का ११ माला जप करें। मंत्र :-

ॐ नमो हनुमंताय आवेशाय आवेशाय स्वाहा।।

इस प्रकार नित्य प्रति रात्रि में ही (दस बजे के बाद) ११ दिन तक करें। प्रतिदिन जो भोग लगाऐं उसे चौबीस घंटे मूर्ति के सामने पड़ा रहने दें एवं दूसरे दिन की पूजा आरम्भ करते समय उसे एक अलग पात्र में रख दें यह अनुष्ठान ११ दिनों का है। बारहवें दिन सभी दिनों का एकत्रित नैवेद्य किसी गरीब ब्राह्मण को दक्षिणा के साथ दान में दे दें। साधक एक निष्ठ हो धैर्य पूर्वक तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करता हुआ इस प्रयोग को संपन्न करने पर हाथों हाथ लाभ स्वयं परीक्षत कर सकता है।

हनुमान मंत्र तो अपने आप में दिव्य और अद्वितीय मंत्र है "सिद्ध बजरंगबली" यंत्र को गले में धारण कर नित्य पांच बार भी हनुमंत मंत्र का उच्चारण कर घर से बाहर निकलता है, तो उसकी सर्वत्र विजय ही होती है।

२१ अप्रैल ९३

अहोभाव-महोत्सव

साधना शिविर - सरस्वती घाट, मिंटो पार्क के पास, इलाहाबाद

परम पूज्य गुरुदेव का पावन जन्म दिवस

❑ एक अद्वितीय दिन - जिसमें देश-विदेश से हजारों हजारों साधक-शिष्य एकत्र होकर अहोभाव-महोत्सव में भाग लेंगे।

❑❑ एक ऐसा दिन - जो पूरे वर्ष में सच्चे शिष्य के लिये महत्वपूर्ण पर्व के रूप में होता है, जब वह समग्र रूप से गुरु चरणों में समर्पित हो जाता है।

❑❑❑ इस शिविर में कुण्डलिनी जागरण की उन गोपनीय क्रियाओं को सम्पन्न कराया जायेगा जो अपने आप में अद्वितीय हैं।

❑❑❑❑ फिर इस, शिविर में होगी, दुर्लभ, पावन और अद्वितीय दीक्षा।

❑❑❑❑ परमपूज्य दादा गुरु "स्वामी सच्चिदानंद जी" का आवाहन....आहूत साधना और अद्वितीय दर्शन

❑❑❑❑ मस्ती, आनंद, उमंग, जोश, साधना एवं दिव्यता का समन्वय

आपमें से प्रत्येक शिष्य को इस बार तो इस महोत्सव में भाग लेना ही है, यह परम पूज्य गुरुदेव की आज्ञा है।

संपर्क सूत्र :

एस.पी. बांगड़
९००, एच.आई.जी., प्रीतमनगर
इलाहाबाद, फोन : ६३३५९०

राजकुमार वैश्य
९४ए/१३ राजीव नगर,
शुतुरखाना इलाहाबाद

एस.के. मिश्रा
२२ साउथ मलाका
इलाहाबाद

मेनका : मेरी प्रेमिका

एक ऐसा मंत्र; जो बीसवीं शताब्दी में भी आश्चर्यजनक है।

इन्द्र की अप्सराओं में मेनका भी है, जो अद्वितीय सुन्दर है, और जिसके शरीर से निरंतर मस्त कर देने वाली मादक गंध प्रवहित होती रहती है। शास्त्रों के अनुसार किसी भी अप्सरा को मंत्रों के माध्यम से सिद्ध किया जा सकता है, और प्रेमिका रूप में उसके साथ सभी प्रकार का आनन्द लिया जा सकता है।

विश्वामित्र ने बलपूर्वक मेनका को अपने वश में किया था और उसे जीवन-भर अनुकूल बनाए रखा था। इसमें मेनका को प्रेमिका रूप में सिद्ध करने का एक सफल प्रयोग है। मैंने इस प्रयोग को आजमाया और सिद्ध होने पर चकित रह जाना पड़ा है।

प्रेमिका रूप में मेनका सिद्ध होने पर अदृश्य रूप में तो सज-धजकर आपकी आंखों के सामने रहती ही है, मगर आपकी इच्छा होने पर वह वास्तविक रूप में भी आपके सामने प्रकट हो सकती हैं जब तक आपकी इच्छा रहे, वह आपके पास बनी रहेगी। अठारह वर्ष की इस सुंदरी का साथ भी अपने-आप में एक सौभाग्य है। जीवन का चरम आनन्द और पूर्णता है। उससे कुछ भी न मांगा जाए, तब भी वह निरंतर धन, द्रव्य, स्वर्ण और अन्य भोग्य पदार्थ उपहार में बराबर प्रदान करती रहती है।

यह मात्र सात दिन की साधना है। इसमें स्फटिक माला से मंत्र जप होना चाहिए तथा नित्य इक्यावन माला जप हो। किसी भी शुक्रवार की रात्रि से साधना प्रारंभ करें। अप्सरा यंत्र व इत्र भी पास में रख दें।

चंदनक्षीर हारेणायुतं जपेत् दिवसानि सप्त। दिवसे सप्तमे उदारपूजां कृत्वा शुक्लाष्टम्यां पर्वतमूर्ध्नि उत्थाय सकलां रात्रि जपेत् प्रभाते नियतमागच्छति। ईषद्धसितरोगण पुरस्तिष्ठति आलिंगनं चुंबनं च तथा सह कर्त्तव्यं तूर्ष्णीभावेन कामयेत्। एवं सिद्धाभवति। यमिच्छति कामं तं ददाति। पृष्ठारोप्य स्वर्गमपि नयति पुनरपि राज्यं ददाति।

साधक स्नान कर, केसर का तिलक लगा, फूलों का हार पहन, कानों में इत्र के फाहे रखकर उत्तर की ओर मुंह करके आसन पर बैठ सामने दीपक रखकर मंत्र जप प्रारंभ करें। कहा गया है कि नित्य ५१ माला मंत्र जाप हो। इस प्रकार मात्र सातवीं रात्रि को निश्चय ही मेनका अत्यंत सुंदर और आकर्षक वस्त्र पहनकर उपस्थित होती है, और वचन देती है कि मैं जीवन भर प्रेमिका रूप में तुम्हारे वश में रहूंगी और तुम्हारी प्रत्येक इच्छा पूरी करूंगी। तब सातवें दिन अपने गले में पहनी हुई माला उसके गले में डाल दें। ऐसा करने पर साधना सिद्ध हो जाती है। उसके बाद वह साधक इन्द्र की तरह जीवन भर आनन्द उठाता रहता है।

मंत्र

ॐ सः मेनके आगच्छागच्छ स्वाहा।।

यह साधना पूर्णतः प्रामाणिक है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह आज के मानव के लिये वरदान स्वरूप है। इस साधना को किसी भी आयु का साधक सिद्ध कर सकता है।

इस साधना को कोई भी साधक सिद्ध कर सकता है और है भी यह सरल, शीघ्र सफलता दायक।

आवश्यकता है, पूरे मनोयोग से बताये हुए तरीके से करने की, और करके जीवन में उतारने की यह एक ऐसी साधना है जो आज के युग में भी वैज्ञानिकों को मुंह में उंगली दबाने को विवश करती है।

यह "आसुरी कल्प" ग्रंथ मानव जाति के लिये बेहद उपयोगी है। मेरे पास यह ग्रंथ सुरक्षित है, और मैं अपने गुरु को साक्षी रखकर कह रहा हूं कि मैंने उपर्युक्त सभी साधनाएं स्वयं सिद्ध की हैं, और पहली बार में ही मुझे सफलता मिली है। ●●●

मंत्र तंत्र यंत्र. विज्ञान की गौरवशाली परम्परा में वर्ष ८९ के अद्वितीय दुर्लभ अंक

✡ *जिसका एक-एक पन्ना, जिसकी एक-एक पंक्ति प्रामाणिक है, यथार्थ है, सत्य की कसौटी पर सौ टंच खरी है।*

✡ *अद्भुत अचरज भरी साधनाओं को समेटे हुए ये बारह अंक, सम्पूर्ण विश्व के विज्ञान को चुनौती देते हुए आपके हाथों में आने को मचल रहे हैं।*

✡ *सनसनीखेज दास्तानों का प्रामाणिक दस्तावेज, जिसके कुछ लेखों की झलकियां प्रस्तुत हैं-*

- क्या आइन्सटीन ने सिद्धाश्रम जाने की योजना बनाई थी?
- वह आंखों से इस्पात पिघलाता है।
- मैं एशिया की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी बनी हूं तंत्र के माध्यम से।
- स्वप्न बताते हैं भविष्य का लेखा जोखा।
- जब हिटलर ने अदृश्य होने की शक्ति प्राप्त की।
- रूपसी सुन्दरियों को पागल सा बना देता था वह।
- मनोवैज्ञानिक ऊर्जा कैसे प्राप्त की जाए।
- महाभारत का युद्ध आप भी देख सकते हैं।
- किसी को भी सम्मोहित करने की शक्ति आप में है।
- पहचानिये आत्मगत सम्बंधों को।
- भाग्योदय सिद्धि
- सौन्दर्य में भी सुगंध संभव है।
- अंधों को ज्योति प्रदान करने वाला सूर्य सिद्धि प्रयोग
- वायु गमन व अदृश्य सिद्धि हेतु छिन्नमस्ता साधना
- हर तरह का इलाज संभव है, वाकसा के द्वारा
- भूत, प्रेत, पिशाच सिद्धि प्रयोग
- नाभिदर्शना पुष्पदेहा अप्सरा सिद्धि
- पारद शिवलिंग
- क्या आप पुत्र चाहते हैं?
- क्या आप पूर्ण पुरुष बनना चाहते हैं? तो मातंगी साधना सम्पन्न करें।

५०० पृष्ठों से भी ज्यादा पृष्ठ
कई-कई पीढ़ियों के लिये दुर्लभ सामग्री
मूल्य मात्र १२०/ रुपये

☐ आप ६०/रु. अग्रिम धनराशि भेज दीजिये शेष रकम की वी.पी. डाक व्यय जोड़कर भेज जाएगी।

संपर्क-
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान : डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज.)

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका के लिये
आवश्यकता है

होलसेल -डीलर, पुस्तक पत्रिका विक्रेता, पत्रिका स्टाल के मालिक आदि की।

● *निम्न स्थानों के लिये होल सेल डीलर चाहिए-*

-आगरा
-जयपुर
-लखनऊ
-वाराणसी
-इलाहाबाद
-पटना
-गोरखपुर
-झांसी
-इन्दौर
-भोपाल
-जबलपुर
-चण्डीगढ़
-हावड़ा
-कलकत्ता
-बम्बई
-दिल्ली
-अहमदाबाद

अपने सम्पूर्ण परिचय और पासपोर्ट आकार के फोटो तथा अपनी शर्तों के साथ निम्न पते पर पत्र लिखें। लिफाफे के ऊपर एक कोने में "होल सेल डीलर" अवश्य लिखें

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान (हिन्दी)
डॉ० श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर-३४२००१ (राज.)

फोन डाक सेवा

केंद्र से (पत्रिका कार्यालय : मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान डॉ० श्रीमाली मार्ग : हाईकोर्ट कॉलोनी जोधपुर) से कोई सामग्री, पत्रिका या सूचना प्राप्त करने के लिये पत्र भेजने की अपेक्षा सीधे ही ०२९१-३२२०९ टेलीफोन से अपना नाम पता नोट करवाकर वी.पी. से सामग्री या पत्रिका मंगा सकते हैं, इससे समय की बचत होगी तथा शीघ्र कार्यवाही होने से सामग्री आपको तुरंत प्राप्त हो सकेगी।

स्वप्नेश्वरी मंत्र

जिसके द्वारा स्वप्न में प्रत्येक प्रश्न का

उत्तर जाना जा सकता है

वर्तमान समय में यह संभव नहीं है कि व्यक्ति लम्बे-लम्बे अनुष्ठान कर सके जबकि उसे समस्याओं का समाधान मिलना भी आवश्यक होता है। इसी बात को ध्यान में रखकर मैं आगे कुछ ऐसे प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं जो वर्तमान काल एवं परिस्थिति के अनुकूल कम समय में एवं निश्चित रूप से फल प्रदान करने में समर्थ हैं। मुझे विश्वास है कि पाठक इनमें से एक या अधिक प्रयोग कर अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

स्वप्नेश्वरी मंत्र

बहुधा जीवन में ऐसे अवसर आ ही जाते हैं, जब किसी प्रश्न को लेकर मन डांवाडोल रहता है एवं तब हम किसी दैवी माध्यम की अपेक्षा करते हैं कि वह हमें सही मार्ग बताकर द्वन्द्व समाप्त करे। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन में ऐसी स्थिति आने पर कि "यह उचित होगा या वह'' मेरे मत से निश्चित रूप से निम्न मंत्र का प्रयोग करना चाहिए जिसे सिद्ध करने अथवा जिस के लिये साधना में बैठने का कोई झंझट नहीं है।

इस हेतु रात्रि में स्नान कर अपने प्रश्न को एक कागज पर लिख व तकिए के नीचे रख साधक को ऐसा विचार करना चाहिए कि वह स्वप्नेश्वरी देवी से प्रार्थना कर रहा है जो उस पर कृपालु होकर उसके प्रश्न का समाधान देंगी। उसे निम्न मंत्र की एक माला, तीन माला अथवा पांच माला मंत्र जप करना भी विशेष सहायक होता है।

ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरी विचार्य विद्येवदवद स्वाहा।।

इस प्रयोग का लाभ व्यक्ति अपने प्रतिदिन के जीवन को सुखी बनाने में कर सकता है।

इसी स्वप्न विद्या का एक विशेष प्रयोग और भी है एवं इसमें भी कोई जटिल विधि विधान नहीं है। साधक इसे सिद्ध कर प्रामाणिक रूप से अपने प्रश्नों के उत्तर, समस्याओं के समाधान स्वप्न के माध्यम से प्राप्त कर सकता है। इस हेतु व्यक्ति रात को सोते समय खाट पर ही एक विशेष मंत्र जिसे "स्वप्नेश्वरी वाराही मंत्र'' की संज्ञा दी गयी है। का सौ बार जप करके सोये और नित्य नियम पूर्वक ११ दिनों तक करे तो उसे एक अनोखी सिद्धि प्राप्त होती है। भविष्य में कभी भी संकट आने पर या आवश्यकता पड़ने पर वह इस मंत्र का एक या ग्यारह बार उच्चारण करके सोये तो उसे निश्चित रूप से अपने संकट का समाधान मिलता ही है। यह मंत्र इस प्रकार है-

ॐ ह्रीं नमो वाराहि अघोरे स्वप्न दर्शय दर्शय ठः ठः स्वाहा।।

मंत्र शक्ति विशेषांक : सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधनाओं से संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्रियों को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है।

पृष्ठ संख्या	सामग्री का नाम	न्यौछावर
८	हल्ट हकीक	५०
१५	त्रिनेत्र यंत्र	३००
२३	ज्वाला मालिनी यंत्र	३००
२४	स्वप्नवाराही यंत्र	२९०
२६	दिव्यांगना स्वर्णप्रभा यक्षिणी सिद्धियंत्र	३३०
२८	त्रिशक्ति यंत्र	३३०
३०	कर्णपिशाचिनी यंत्र	२४०
३५	चक्षुष्मती यंत्र	३००
३८	अप्सरा यंत्र	२१०
४३	ताम्रपत्र पर अंकित बगलामुखी यंत्र	३३०
४४	मूंगे की माला	१५०
४४	बजरंग सिद्धि यंत्र	१५०
४६	भुवनेश्वरी यंत्र	३३०
४६	भुवनेश्वरी चित्र	३०
४६	स्फटिक माला	१५०
४८	महामृत्युंजय यंत्र	२४०
५२	स्फटिक या हकीक	१५०
५३	सहस्र सिद्धि अखण्ड लक्ष्मीयंत्र	१५०
५३	लघुनारियल	१५
५३	तीन हकीक पत्थर	४५
५३	गोमती चक्र	१५
५३	हकीक माला	१५०
६०	वीर प्रत्यक्ष सिद्धि यंत्र	३००
६२	श्री श्वेतार्क गणपति विग्रह	३००
६६	कर्णपिशाचिनी यंत्र	३००
७७	स्फटिक माला	१५०
	बंगनाल	६०
	शून्य गुटिका	१२०
	रोग निवारण यंत्र	२४०
	राम रक्षा यंत्र	१५०
	बाल रक्षाकारक यंत्र	१५०

✡ आप एक पत्र में हमें लिख भेजें कि आपको क्या सामग्री चाहिए। हम वह सामग्री वी.पी. से सुरक्षित रूप से आपको हाथों में पहुंचा देंगे।

✡ चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।

✡ ड्राफ्ट किसी बैंक का हो, वह "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता–

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान) टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

प्रकाशक एवं मुद्रक : कैलाशचन्द्र श्रीमाली, मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान के लिये ताज प्रेस ए० ३५/४ मायापुरी नई दिल्ली से मुद्रित

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81 A.H.W. पोस्टल-एल. आर. जे. 3667/86-87

पूज्य गुरुदेव